मासिक शिविरा पत्रिका

वर्ष : 63 | अंक : 11-12 | मई-जून, 2023 | पृष्ठ : 56 | मूल्य : ₹20

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

सत्यमेव जयते

डॉ. बी.डी. कल्ला
मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा), संस्कृत शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, (पंचायती राज के अधीनस्थ), कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
राजस्थान सरकार

"डायरी में अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से लिखकर उकेर सकते हैं। ग्रीष्मावकाश में यदि विद्यार्थी इसे नियमित लिखना आरंभ करे, तो यह बहुत उपयोगी रहेगी। डायरी प्रतिदिन लिखी जानी चाहिए। इसे ईमानदारी से लिखा जाए तो यह जीवन का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन सकता है। नए अनुभव, अपनी प्रतिक्रियाएं अथवा दिन-भर में जो देखा एवम् महसूस किया उसे लिख सकते हैं। इनसे स्मरण शक्ति में भी सुधार होता है। डायरी लिखने से ज्ञान में भी इजाफा होगा, लेखन शैली में सुधार के साथ आपका मनोबल भी मजबूत होगा।"

उपहार है ग्रीष्मावकाश

मई-जून में लगभग सभी कक्षाओं के परीक्षा परिणाम आ जाएंगे। आप सभी को बेसब्री से इनका इंतजार भी होगा क्योंकि शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने वर्ष पर्यन्त अध्यापन-अध्ययन में कड़ी मेहनत की है। सफलता की प्रत्याशा में ही आप वर्ष पर्यन्त मेहनत करते हैं। परिणाम आशा अनुरूप आए तो मन प्रफुल्लित रहता है और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती है। कई बार ऐसा भी होता है कि बहुत प्रयासों के बाद भी सफलता नहीं मिलती ऐसे में असफलता को स्वीकार कर ईमानदारी से कारणों का विश्लेषण करना होगा। वर्ष पर्यन्त रही कमियों को जानकर ही आप अपनी गलतियों में सुधार कर एक नयी शुरूआत कर सकते हैं। आत्म अनुशासित रह कर स्वयं में बदलाव लाकर ही व्यक्ति उन्नति की ओर अग्रसर होता है।

वर्ष-भर की व्यस्त दिनचर्या के बाद गर्मी की छुट्टियां भी आ गयी है, यह वो समय होगा जब न तो सुबह जल्दी उठकर स्कूल जाने की चिन्ता सताएगी न ही होमवर्क परेशान करेगा। विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष का सबसे उपयुक्त समय है जब वे थकान दूर कर आराम तो करेंगे ही, साथ ही अच्छी आदतें और संस्कारों को रोपने के साथ-साथ उन्हे पल्लवित करने का अवसर भी मिलता है। दोस्तों के साथ बातचीत, हंसने-बोलने, मिलने-खेलने से नयी बातें सीखते और सिखाते हैं। अनेक रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों के अवसर भी मिलेंगे। परिवार के बुजुर्ग सदस्यों के पास बैठें। उनके सानिध्य में उनके अनमोल अनुभवों से आप जीवन के कई पाठ, जो पाठ्यपुस्तकों से नहीं सीख पाए, वो भी सीख पाएंगे। निस्संदेह आपका साथ पाकर उनमें भी नयी खुशियों का संचार होगा और वे भी आनंदित एवं ऊर्जावान महसूस करेंगे।

बहुत बार ऐसा होता है कि हमें अपने मन की बात अभिव्यक्त करने में हिचकिचाहट होती है ऐसे में डायरी हमारी मित्र हो सकती है। डायरी में अपनी भावनाओं को शब्दों के माध्यम से लिखकर उकेर सकते हैं। ग्रीष्मावकाश में यदि विद्यार्थी इसे नियमित लिखना आरंभ करे, तो यह बहुत उपयोगी रहेगी। डायरी प्रतिदिन लिखी जानी चाहिए। इसे ईमानदारी से लिखा जाए तो यह जीवन का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बन सकता है। नए अनुभव, अपनी प्रतिक्रियाएं अथवा दिन-भर में जो देखा एवम् महसूस किया उसे लिख सकते हैं। इनसे स्मरण शक्ति में भी सुधार होता है। डायरी लिखने से ज्ञान में भी इजाफा होगा, लेखन शैली में सुधार के साथ आपका मनोबल भी मजबूत होगा।

पाठ्यपुस्तकों के अलावा प्रतिदिन उपयोगी पुस्तकें एवम् समाचार पत्र पढ़ने से भी आपके ज्ञान का विस्तार होता है। इससे पाठक की शब्द सम्पदा और मौलिक चिन्तन में भी अभिवृद्धि होगी। इनके नियमित अध्ययन से पढ़ने की आदत विकसित होती है। समसामयिक घटनाओं एवं ज्वलन्त मुद्दों पर विषय विशेषज्ञों की राय से, देश की संस्कृति, कला और परम्पराओं से भी हम अवगत होते हैं। शिक्षक एवं शिक्षार्थियों से मेरा यही कहना है कि प्रतिदिन अच्छी पुस्तकें और समाचार पत्र पढ़ने की आदत बनाकर अपनी दिनचर्या में शामिल करें। इससे आपके ज्ञान, कौशल एवं जागरूकता में वृद्धि होगी। पुस्तकों एवं समाचार पत्रों का आप जितना अध्ययन करेंगे, उतना ही आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा और आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। यह ऐसे उपाय हैं जिनसे दिमाग स्वस्थ एवम् सक्रिय रहता है और व्यक्ति हर परिस्थिति, हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहता है।

प्रत्येक कार्य को निर्धारित समय पर करना सफलता का आधार है। अक्सर सोशल मीडिया पर प्रेरणास्पद कॉटेशन (Quotation) पढ़कर, सुनकर, हम सभी प्रभावित होते हैं। आस-पास सफल व्यक्तियों की जीवनशैली से भी हम उत्साहित हो जाते हैं। लेकिन जब स्वयं से शुरूआत करने की बात आती है तो अक्सर 'अभी नहीं' या 'बाद में' जैसी धारणा से काम को टालकर हम स्वयं ही अपना नुकसान कर बैठते हैं। यह विलम्ब अनिश्चितता है। आज करना और अभी करना है, यह सोच जीवन की वह राम-बाण औषधि है, जो हमारे भीतर अकल्पनीय सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। इसलिए कहा गया है कि "काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होयगी, बहुरि करेगो कब।"

बुलाकी दास कल्ला

(डॉ. बुलाकी दास कल्ला)

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

जाहिदा खान
राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार
शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक),
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (स्वतंत्र प्रभार)
मुद्रण एवं लेखन सामग्री (स्वतंत्र प्रभार)
कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

"21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस है जो वर्ष का सबसे लम्बा दिन भी है। योग स्वयं में एक जीवन पद्धति है, जीवन जीने का तरीका है, जो व्यक्ति को स्वस्थ रखते हुए दीर्घायु बनाता है।

जहाँ विदेशी पद्धतियाँ बीमारी के पश्चात् निदान व उपचार प्रक्रिया से दवाओं के द्वारा आरोग्य प्रदान करती है, जो शरीर के लिए दुष्प्रभाव भी पैदा करती है ; वहीं भारतीय सनातन परम्परा से प्रसूत योग शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि कर पूर्ण कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।"

समय का सदुपयोग

वर्तमान सत्र 2022-23 में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बोर्ड परीक्षाएँ तथा स्थानीय परीक्षाएँ पूर्ण हो चुकी है। परीक्षा दे चुके कुछ विद्यार्थी सफलता प्राप्त कर आगामी कक्षाओं में प्रवेश हेतु योजना तैयार कर रहे होंगे, वहीं कुछ विद्यार्थी महाविद्यालयी शिक्षा में प्रवेश लेने अथवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु मानस बना रहे होंगे।

परीक्षा समाप्ति पश्चात सभी छात्र रचनात्मक-सृजनात्मक कार्यों में रत रहकर ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करें। इस हेतु आयोजित होने वाले ग्रीष्मकालीन शिविरों में भागीदारी निभाकर अभिरुचि को नवीन आयाम दें। शिक्षक एवं विद्यार्थी मिलकर समाज सेवा के कार्य भी करें। देश एवं समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों से भी हमें उऋण होना है। बालक के विकास में समाज, राष्ट्र एवं पर्यावरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अत: बाल्यावस्था से ही इनके प्रति संवेदनशील होने की शिक्षा दी जानी चाहिए। ग्रीष्मावकाश में बालकों के साथ समाज सेवा कार्यों में भागीदारी निभाने से जहाँ वे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों एवं कर्त्तव्यों को समझेंगे, वहीं उनमें इन समस्याओं एवं जीव मात्र के प्रति अनुराग भी जागेगा।

21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस है जो वर्ष का सबसे लम्बा दिन भी है। योग स्वयं में एक जीवन पद्धति है, जीवन जीने का तरीका है, जो व्यक्ति को स्वस्थ रखते हुए दीर्घायु बनाता है।

जहाँ विदेशी पद्धतियाँ बीमारी के पश्चात् निदान व उपचार प्रक्रिया से दवाओं के द्वारा आरोग्य प्रदान करती है, जो शरीर के लिए दुष्प्रभाव भी पैदा करती है ; वहीं भारतीय सनातन परम्परा से प्रसूत योग शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्धि कर पूर्ण कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। यह कोई मत, पंथ या सम्प्रदाय नहीं अपितु हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों के अनुसंधान व प्राकृतिक आयुर्विज्ञान के बल पर जीवन जीने की कला है।

22 मई को वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप की जयन्ती भी है। मेवाड़ रियासत के महाराणा प्रताप ने विदेशी शक्तियों के सामने घुटने नहीं टेके एवं अनेक कष्ट सहते हुए अपनी मातृभूमि रक्षार्थ प्राण न्यौछावर कर दिए। इसीलिए यह उक्ति जन सामान्य में प्रचलित है कि "जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहिं राखे करतार।" ऐसे शौर्य, वीर्य एवं स्वाभिमान के प्रतीक महाराणा प्रताप को नमन।

सभी अभिभावकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षा जगत से जुड़े समस्त विद्वतजन को नवीन शिक्षा सत्र 2023-24 की मेरी तरफ से अग्रिम शुभकामनाएँ। राज्य सरकार की ओर से 24 अप्रेल से शुरू किए गए प्रशासन गाँवों के संग, प्रशासन शहरों के संग और मंहगाई राहत शिविर में नवीन शिक्षा सत्र 2023-24 हेतु अनामांकित एवं नव प्रवेश के इच्छुक बालक-बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश दिलवाए जाने हेतु कार्यक्रम चलाया गया है। शिक्षकगण सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु संचालित विभिन्न योजनाओं यथा-राष्ट्रीय पोषाहार योजना, बाल-गोपाल योजना, नि:शुल्क पोशाक वितरण एवं विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियों आदि की अभिभावकों को जानकारी प्रदान करते हुए, अधिकाधिक संख्या में नामांकन वृद्धि का प्रयास करें। इति शुभम।

Zahida
(जाहिदा खान)

Rajasthan Education Department

सत्यमेव जयते

गौरव अग्रवाल
आइ.ए.एस.
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

ग्रीष्मावकाश में समय का सदुपयोग

शिक्षक बनना सुखद है पर पर्याप्त नहीं, पर्याप्त बनने के लिए शिक्षक हेतु आवश्यक है कि स्वयं को शाश्वत रूप से विद्यार्थी भी बनाए रखे जिससे ज्ञान के बढ़ते क्षितिज के साथ वह गतिशील हो सके। इसी परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों से मेरा आग्रह है कि ग्रीष्मावकाश में स्वाध्याय करें, जितना अधिक आप का अध्ययन होगा ज्ञानकोष उतना ही अधिक समृद्ध होगा जिसका लाभ आप के माध्यम से विद्यार्थियों के द्वारा समाज को मिलेगा। स्वअनुशासन के आचरण का आदर्श प्रतिष्ठित करने हेतु प्रतिपल स्वयं को शिष्य बनाए रखना अपेक्षित है। शिक्षक के साथ-साथ चिंतक बनना भी आवश्यक है, अन्यथा व्यक्तित्व से ज्ञान और तेज की धार लुप्त हो जाएगी। उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए टेक्नोलॉजी के इस युग में मेरी अपेक्षा रहेगी कि समस्त शिक्षक ग्रीष्मावकाश में स्वाध्याय के साथ-साथ कंप्यूटर अवश्य सीखें व रोजमर्रा के कार्यों में तकनीकी ज्ञान के महत्व को समझते हुए विद्यार्थियों को इससे जोड़ें।

राजस्थान के शिक्षा में बढ़ते कदम (RKSMBK) कार्यक्रम में एप के प्रयोग को अनवरत रखते हुए 17 से 20 अप्रैल आकलन 3 द्वारा हिन्दी, अंग्रेजी व गणित विषय में कक्षा 3 से 8 तक के विद्यार्थियों की उपलब्धि ने पूर्व के रिकॉर्ड तोड़ते हुए 97% उत्तरपत्रक (OCR Sheets) अपलोड कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। शिक्षा विभाग द्वारा किया गया यह कार्य वैश्विक परिप्रेक्ष्य में अद्वितीय है।

संस्था प्रधान, शिक्षक व छात्र सभी बीते शैक्षिक सत्र का मूल्यांकन करते हुए देखें कि सत्रारंभ में हमने जिन लक्ष्यों की प्राप्ति निर्धारित की थी, हम उनकी शत प्रतिशत प्राप्ति से कितने दूर हैं। लक्ष्य प्राप्ति हेतु व्यवस्थित कार्य योजना बनाकर प्रयास करें। मेरा विश्वास है आपकी मेहनत रंग लाएगी एवं शीघ्र ही आपका ध्येय सिद्ध होगा।

ग्रीष्मावकाश अर्थात् विद्यालय से प्राप्त दीर्घ अंतराल.....! आवश्यकता है इस अंतराल को अभिभावक गण अवसर के रूप में प्रयुक्त करते हुए बच्चों के व्यवहार पर पूर्ण ध्यान केंद्रित कर अपेक्षित सुधार हेतु प्रयास करें। बालकों को स्वच्छ जीवनशैली का महत्व समझाते हुए स्वस्थ दिनचर्या अपनाने हेतु प्रेरित करें जिससे बाल्यकाल से ही उनमें अच्छी आदतों का विकास हो सकेगा।

मैं उम्मीद करता हूं कि योग दिवस के माध्यम से हम अपने विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय योग परम्पराओं यथा अनुलोम-विलोम, कपाल भाति व सूर्य नमस्कार जैसे योगासनों आदि से परिचित कराएंगे। रवीन्द्रनाथ टैगोर, महाराणा प्रताप, भामाशाह जयंती की सभी को शुभकमानाएं....

आपका अपना

(गौरव अग्रवाल)

"स्वअनुशासन के आचरण का आदर्श प्रतिष्ठित करने हेतु प्रतिपल स्वयं को शिष्य बनाए रखना अपेक्षित है। शिक्षक के साथ-साथ चिंतक बनना भी आवश्यक है, अन्यथा व्यक्तित्व से ज्ञान और तेज की धार लुप्त हो जाएगी। उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए टेक्नोलॉजी के इस युग में मेरी अपेक्षा रहेगी कि समस्त शिक्षक ग्रीष्मावकाश में स्वाध्याय के साथ-साथ कंप्यूटर अवश्य सीखें व रोजमर्रा के कार्यों में तकनीकी ज्ञान के महत्व को समझते हुए विद्यार्थियों को इससे जोड़ें।"

Rajasthan Education Department

मासिक
शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता ४/३८

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 63 | अंक : 11 | वैशाख-ज्येष्ठ २०७९-८० | मई-जून, 2023

प्रधान सम्पादक
गौरव अग्रवाल
❄
वरिष्ठ सम्पादक
सुनीता चावला
❄
सम्पादक
डॉ. संगीता पुरोहित
❄
सह सम्पादक
सीताराम गोदारा
❄
प्रकाशन सहायक
सुचित्रा चौधरी
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक सदस्यता राशि व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चेक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

अपनों से अपनी बात
- उपहार है ग्रीष्मावकाश 2

मेरा संदेश
- समय का सदुपयोग 3

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ
- ग्रीष्मावकाश में समय का सदुपयोग 4

आलेख
- जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार 7
  डॉ. रिंकू सुखवाल
- हिन्द की चादर : गुरु तेग बहादुर 9
  डिप्टी सिंह
- महात्मा बुद्ध और उनकी शिक्षा 11
  डॉ. गोविन्द नारायण कुमावत
- स्वाभिमान के पर्याय-राजस्थानी भाषा के कवि 13
  डॉ. गौरीशंकर प्रजापत
- जाग्रत करना होगा देवत्व 16
  मोना शुक्ला
- उच्च शिक्षा में गुणवत्ता : दिशा और दृष्टि 18
  बी. एल. आच्छा
- रेडक्रॉस स्थापना दिवस की रुचिकर कहानी 20
  देवेन्द्र कुमार शर्मा
- इतिहास के पन्नों में खो गया टेलीग्राम 21
  पुष्पा शर्मा
- पढ़ा, सो समझा! 22
  मनीष भारद्वाज
- राजस्थान का जलियाँवाला बाग: मानगढ़ धाम 23
  विनोद पानेरी
- मातृ देवोभवः पितृ देवोभवः 32
  डॉ. संगीता पुरोहित
- Mahatma Gandhi Govt. School- A Big Leap For Quality Education 33
  Sangeeta
- नवाचारों से मिली अप्रत्याशित सफलता 34
  राजपाल
- वैश्विक आपदा का समाधान 36
  डॉ. कुमुद पुरोहित
- असंभव कुछ भी नहीं 37
  गिर्राज गुर्जर
- शैक्षिक परिवेश में योग शिक्षा 39
  कमल कुमार जाँगिड़
- प्रार्थना सभा में शिक्षक सहभाग और कुछ नए प्रयोग 40
  संदीप जोशी

रपट
- गुजरात भ्रमण 38
  मानसी कौशिक

स्तम्भ
- पाठकों की बात 6
- आदेश-परिपत्र : मई-जून, 2023 25-31
- शिविरा पञ्चाङ्ग : मई, जून 2023 31
- बाल शिविरा 42-43
- शाला प्रांगण से 46-47
- भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर 48-49
  हरी प्रसाद सरावग
- हमारे भामाशाह 49
- ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से अनुमोदित/स्वीकृत प्रोजेक्ट 50
- Telecast Schedules of PM e-vidya 52

पुस्तक समीक्षा 44-45
- तम्बाकू नियंत्रण के मुद्दे, तम्बाकू मुक्ति की ओर
  लेखक : डॉ. राकेश गुप्ता
  समीक्षक : **ओमप्रकाश सारस्वत**

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

मुख्य आवरण : शिव रतन रंगा

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

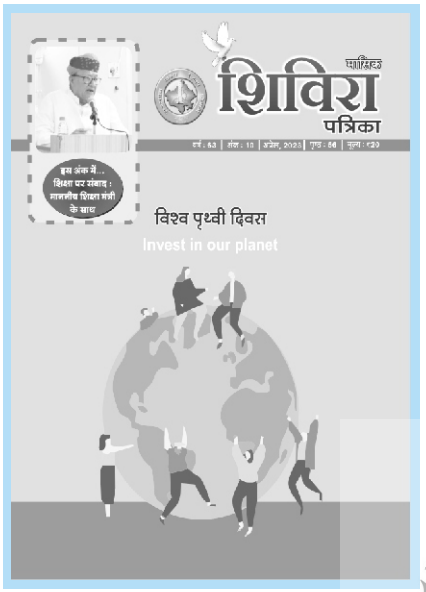

▼ चिन्तन

जन्म स्थान महर्षिणां,
तपस्थानं च योगिनाम्।
न जगद्‌ वन्द्यतां
राष्ट्र भवेत संघ बलं बिना।।

भावार्थ-चाहे महर्षियों की जन्मभूमि हो, चाहे योगियों की तपोभूमि हो, किन्तु जिस राष्ट्र और समाज के निवासियों में संगठन का बल नहीं होता, वह राष्ट्र और समाज संसार के लिए वंदनीय नहीं हो सकता। इसलिए कहा है संघे शक्ति कलौयुगे।

पाठकों की बात

- शिविरा पत्रिका अप्रेल 2023 का अतुल्य और अप्रतिम अंक पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। प्रस्तुत अंक 'बिंदु में सिंधु' की उक्ति को चरितार्थ करने वाला है। पत्रिका का मुखावरण पृष्ठ अत्यधिक मनोहारी लगा जो विश्व पृथ्वी दिवस की थीम पर आधारित था और पृथ्वी के साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेशवाहक भी था। माननीय शिक्षा मंत्री महोदय द्वारा की गई 'अपनों से अपनी बात' अत्यंत ही प्रेरणास्पद और वर्तमान समय में दिग्दर्शक जान पड़ती है, वहीं निदेशक महोदय के 'परीक्षाओं का सफल संपादन' के विषय में दिए गए पथ-प्रदर्शन ने अनेक आयामों से विचार करने के लिए प्रेरित किया। वैसे तो इस बार के अंक के सभी स्तंभ और आलेख सदैव के समान ही पठनीय और मननीय थे, परंतु इस बार का अंक इस हेतु भी अन्यतम था क्योंकि पूर्वांक में उक्त विषयों पर सभी कलाकारों ने बड़ी कुशलता और सफलता से कलमकारी की है। डॉ. रणवीर सिंह द्वारा 'कृत्रिम बुद्धिमता' पर लिखित लेख विज्ञान और तकनीक के बढ़ते महत्त्व को इंगित करता है, वही कक्षा 11 की होनहार बालिका पार्वती कृत रचना 'पर्यावरण संरक्षण' पर्यावरण संरक्षण की हमारी प्राचीन परंपरा और वर्तमान समय में इसकी आवश्यकता की ओर बरबस ही ध्यानाकर्षित करती है। इसके अतिरिक्त कृष्ण बिहारी पाठक का 'अप्रत्यक्ष पाठ्यचर्या: निदान और नियमन' विषय पर लिखा गया लेख ज्ञानवर्धक था। सुनील कुमार महला द्वारा अपनी रचना में शब्द और संप्रेषण कौशल के उद्‌गम के संबंध में मातृभाषा का जो महत्त्व प्रतिपादित किया गया वास्तव में विचारणीय था। योगेश कुमार सैन द्वारा लिखित 'भारतीय इतिहास में जलियांवाला बाग' लेख पढ़कर ऐसा लगा मानो हम इस घटना के प्रत्यक्षदर्शी ही बन गए हो। लेखक ने भारतीय इतिहास में घटित इस दुर्दांत घटना को पाठकों के चक्षुपटल पर जीवंत करने का सफल प्रयास किया है। बाल शिविरा कॉलम के सभी नन्हे कलाकारों को उनकी कलाकृतियों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। विभाग से संबंधित सभी प्रकार के आदेश-परिपत्र और जानकारियाँ उपलब्ध करवाने के लिए संपादक मंडल और शिविरा पत्रिका की संपूर्ण टीम का हार्दिक आभार। पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहे ऐसी मंगलकामनाएँ।

मनसुख लाल, नावां (नागौर)

- शिविरा का माह अप्रेल 2023 का आकर्षक अंक समय पर पढ़ने का मौका मिला जिसका आवरण पृष्ठ विश्व पृथ्वी दिवस के संबंध में इतना मनमोहक एवं संदेश देने वाला था और अंदर खोलते ही अपनो से अपनी बात के साथ-साथ महापुरुषों के बारे में भी जानकारी बच्चों और पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक रही। उनके साथ साथ विभागीय परिपत्र, पुस्तक की समीक्षा और अन्य प्रकार के आलेखों से बच्चों और शिक्षकों तक इसकी पहुँच को बढ़ाने में सहायक होती नजर आ रही है। खेलों की रिपोर्ट और बच्चों का भ्रमण बच्चों की जुबानी पढ़ना बहुत ही शानदार रहा। इन सबके साथ-साथ शिविरा संपादक द्वारा माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के साथ शिक्षा पर संवाद कार्यक्रम के तहत राज्य सरकार और माननीय शिक्षा मंत्री महोदय के प्रयासों से शिक्षा विभाग जिन आयामों पर पहुँच रहा है उन समस्त आयामों का समावेश करने का जो संपादक महोदय द्वारा प्रयास किया गया है तारीफ के काबिल है क्योंकि ऐसे संवाद से विद्यालय में शिविरा पहुँचने के कारण अंतिम छोर पर बैठे हुए छात्र और शिक्षक को समय-समय पर शिक्षा विभाग द्वारा जिस प्रकार से विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जाता है उसकी जानकारी बैठे-बैठे मिल जाती है मेरा सुझाव है कि संपादक महोदय माननीय मंत्री महोदय के साथ इस तरह के शैक्षिक संवाद वर्ष में एक से अधिक बार भी करके शिक्षा विभाग की शैक्षिक, सह शैक्षिक एवं बच्चों के लिए लाभदायक योजनाओं की जानकारी समय रहते हुए अभिभावकों एवं बच्चों तक सीधी शिविरा के माध्यम से पहुँचाई जा सकती है अतः स्थाई स्तंभों के साथ इस प्रकार की जानकारी शैक्षिक संवाद के माध्यम से उपलब्ध कराने के लिए संपादक महोदय के साथ-साथ टीम शिविरा बधाई की पात्र है।

सुभाष जोशी, बीकानेर

Rajasthan Education Department

जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार

❒ डॉ. रिंकू सुखवाल

निश्चित रूप से सारी शिक्षा व्यर्थ साबित होगी यदि वह इस विशाल और विस्तीर्ण जीवन को, इसके समस्त रहस्यों को, इसकी अद्भुत रमणियताओं को, इसके दुखों और हर्षो को समझने में आपकी सहायता ना करें।- (जे.कृष्णमूर्ति)

जिद्दू कृष्णमूर्ति का जन्म 12 मई, 1895 में तमिलनाडु में हुआ था। आधुनिक युग के श्रेष्ठ विचारकों में इनकी गणना होती है। शिक्षा से संबंधित जो उनके विचार है, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी है। उन्होंने अपने समय की शिक्षा के बारे में लिखा है कि- हमारी वर्तमान शिक्षा सड़ी हुई है, क्योंकि वह हमें केवल सफलता से प्रेम करना सिखाती है, उस कार्य से नहीं जो हम कर रहे हैं। हमारे लिए परिणाम कार्य से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया है। उनके विचार क्रांतिकारी थे। उन्होंने प्रत्येक प्रकार की बाह्य प्रामाणिकता का विरोध किया, फिर चाहे वह व्यक्ति की हो या पुस्तक की हो। वह यथार्थ ज्ञान के पक्ष में थे। यथार्थ ज्ञान से उनका अभिप्राय 'सत्य' के ज्ञान से था और इस सत्य तक पहुँचने का साधन उन्होंने शिक्षा को माना है। उनका मानना था कि इस सत्य अथवा यथार्थ तक व्यक्ति स्वयं ही अपने प्रयास से पहुँच सकता है ना कि व्यक्ति, ग्रंथ या पुस्तक के माध्यम से। यह तो सिर्फ उनका मार्गदर्शन ही कर सकते हैं। प्रयत्न तो व्यक्ति को स्वयं ही करना होगा। कृष्णमूर्ति अपने समय के शिक्षा के प्रचलित ढांचे से सहमत नहीं थे। उसे दोषपूर्ण मानते थे क्योंकि उनके अनुसार इसमें बालकों को केवल ज्ञान अर्जन कराया जाता है। ज्ञान को ठूंसा जाता है, परंतु जीवन में आने वाली चुनौतियों, परिस्थितियों में इस ज्ञान का उपयोग करना नहीं सिखाया जाता। छात्रों की भावनाओं एवं समस्याओं का ध्यान नहीं रखा जाता। प्रचलित शिक्षा बुद्धि का विकास करना नहीं सिखाती। उनके शब्दों में, साधारणतया शिक्षा का अर्थ पुस्तकों को पढ़ना, जानकारी का संग्रह करना और उसे या तो स्वास्थ्य के लिए या किसी विशिष्ट कारण के लिए, किसी विशेष संप्रदाय के लिए स्वयं को उस संप्रदाय में अथवा संगठन में महत्त्वपूर्ण बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। इसलिए वह ऐसी शिक्षा के पक्ष में थे, जो छात्रों में ना केवल ज्ञान अर्जन कराएं बल्कि संसार की ओर वस्तुगत तरीके से देखना भी सिखाएँ।

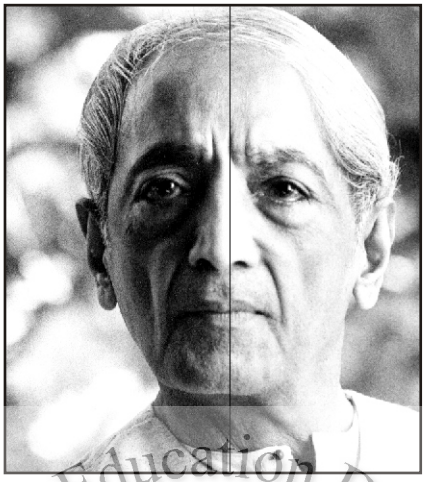

जिससे छात्र भौतिक जीवन की समस्याओं का समाधान कर सके।

आज का युवा शिक्षित होकर अच्छी नौकरी प्राप्त करता है और उसमें आगे तरक्की पाने के लिए प्रयास करता रहता है, ऊपर उठने के लिए भाग दौड़ करता रहता है। नौकरी प्राप्त करके भी इसे खोने का भय बना रहता है। यह संघर्ष और भय जीवन भर चलता रहता है। शिक्षा का कार्य व्यक्ति को इस भय से मुक्ति दिलाना होना चाहिए। कृष्णमूर्ति के अनुसार, शिक्षा का अभिप्राय केवल पढ़ना, लिखना, परीक्षाएँ पास करना तथा नौकरी प्राप्त करने तक सीमित नहीं है बल्कि इससे बहुत अधिक व्यापक है। उनका मानना था कि वर्तमान समय में तकनीकी शिक्षा का महत्त्व बहुत बढ़ गया है, जो केवल रोजगार दिला सकती है। जीवन को समझने की क्षमता प्रदान नहीं करती। जीवन में भावनात्मक पक्ष को समझना बहुत आवश्यक है। रोजगार के लिए शिक्षा तो शिक्षा का एकांकी पक्ष है जबकि शिक्षा का उद्देश्य बालक का समग्र एवं सर्वांगीण विकास करना है। जीवन में आने वाली इन सभी समस्याओं का अपने विवेक से डटकर सामना करने के लिए समर्थ बनाने के लिए शिक्षित करना ही शिक्षा का कार्य होना चाहिए। यही वास्तविक शिक्षा है। उनके अनुसार आज की शिक्षा सिखाती है, 'क्या सोचना' चाहिए, बल्कि यह सिखाया जाना चाहिए कि- **'कैसे सोचना' है। जीवन की समस्याओं को कैसे सोचा और समझा जाए,** जिससे जब वह विद्यालय छोड़े तो इस योग्य बन जाए कि जीवन का सामना कर पाए। जीवन को देख सकें, समझ सकें। शिक्षा में सीखना के साथ-साथ समझना और जानना भी शामिल हैं।

वास्तव में कृष्णमूर्ति परंपरा और परंपरागत शिक्षा के विरुद्ध नहीं थे बल्कि वे तो केवल यह चाहते थे कि शिक्षा का लक्ष्य बालक को भविष्य के लिए पूर्ण रूप में तैयार करना हो। कृष्णमूर्ति के शब्दों में, यह जानते हुए कि तुम्हें जीविकोपार्जन करना है, संपूर्ण जिम्मेदारियों को निभाना है, उस सब का दुख उठाना है। शिक्षा को तुम्हें एक पूर्णतया, मित्र बुद्धिमता पूर्ण तरीके से संसार का सामना करने में सहायता करनी चाहिए।

उनके अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिसमें बालक को पूर्ण स्वतंत्रता हो। शिक्षा ऐसी हो जो छात्रों को पूर्ण अवसर उपलब्ध कराए जिससे बालक अपने आप को अभिव्यक्त कर सकें। पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अवलोकन भी कर सके। एक शिक्षित व्यक्ति को इस संसार में बुद्धिमता और समझदारी का जीवन जीना चाहिए।

जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा के स्वरूप को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान- कृष्णमूर्तिजी के अनुसार बालक की शिक्षा में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिकता भी होनी चाहिए। बल्कि व्यावहारिक ज्ञान सैद्धांतिक ज्ञान की तुलना में अधिक होना चाहिए और दोनों पक्षों में सामंजस्य होना चाहिए क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य मानव के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की समस्याओं का समाधान करना है, इसलिए शिक्षा व्यवस्था में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों का समावेश होना बहुत आवश्यक है। ऐसी शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाए जो क्रियात्मक पक्ष से संबंधित हो। किसी भी विधि, ज्ञान, व्याख्यान एवं पुस्तक का अंधानुकरण नहीं करें, बल्कि प्रयोग की कसौटी पर परखकर उसका

Rajasthan Education Department

उपयोग करना चाहिए। उनके शब्दों में, अगर आप दूसरे के अनुसार अपना अध्ययन करने की कोशिश कर रहे हैं तो आप हमेशा एक सेकंड हैंड अर्थात एक गए बीते मनुष्य ही बने रहेंगे। वह सम्यक शिक्षा में विश्वास करते थे।

चिंतन एवं तर्कशक्ति का विकास– उनके अनुसार यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति बाह्य बुद्धि के द्वारा संभव नहीं हो सकती। अत: पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा छात्रों को ऐसे व्यावहारिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए जिससे उनमें स्वयं चिंतन, तर्क एवं ध्यान के अवसर उपलब्ध हो सके। उनमें चिंतन शक्ति एवं कल्पना शक्ति का विकास हो सके। जिससे भविष्य में वह स्वयं अपनी व्यावहारिक जीवन की समस्याओं का समाधान एवं निराकरण कर सकेंगे। चिंतन एवं तर्क के द्वारा ही मूल प्रवृत्तियों के प्रति अंतर्दृष्टि उत्पन्न की जा सकती है। वास्तविक ज्ञान वह है जो आत्मज्ञान कराए। जीवन को उसकी समग्रता में देखना एवं समझना सिखाए। इसलिए शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो बालकों में चिंतन एवं तर्कशक्ति का विकास कर सके। उनमें आलोचनात्मक चिंतन विकसित कर सकें।

आध्यात्मिक विकास– शिक्षा के उद्देश्य में बालकों का आध्यात्मिक विकास बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके अनुसार, अन्त: मन का ज्ञान ही शिक्षा है। अपने आप को समझना ही शिक्षा का आरंभ और अंत भी है। इसलिए सत्य एवं आत्मतत्व की प्राप्ति के लिए शिक्षा बहुत जरूरी है। इसके अभाव में सत्य की प्राप्ति असंभव है। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य सत्य चेतना की अनुभूति करना है, इसलिए शिक्षा में उन सभी क्रियाओं एवं विषयों को समान स्थान मिलना चाहिए जिससे आत्मज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती हो। व्यक्ति को सत्य चेतना की प्राप्ति के लिए शिक्षा को पूर्ण सहयोग देना चाहिए। अंत: शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे बालकों में आध्यात्मिक उन्नति एवं विकास हो।

नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास– कृष्णमूर्ति के अनुसार बालकों में शिक्षा द्वारा ऐसी गतिविधियों का समावेश होना चाहिए, जिससे उनमें नैतिकता, मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों का विकास हो सकें, क्योंकि नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से उनमें व्यावहारिक जीवन में समायोजन करने की क्षमता उत्पन्न होगी तथा आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। व्यक्ति को अपने प्रत्येक कार्य एवं व्यवहार के संदर्भ में विचार करना चाहिए, तभी वह कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को पहचान सकता है और उसे आत्मज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। अतः शिक्षा को नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को ढूँढ़ने, उन्हें समझने और विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

हिंसा का उन्मूलन– कृष्णमूर्ति समाज में व्याप्त हिंसा से बहुत दुःखी थे। शिक्षा के माध्यम से वह समाज में व्याप्त हिंसा एवं अराजकता का उन्मूलन करना चाहते थे। आत्म ज्ञान के माध्यम से बालक में अहिंसक गतिविधियों का उदय तथा हिंसक गतिविधियों का उन्मूलन होता है। जब मानव संसार में फैली अव्यवस्था के प्रति जागरूक हो जाता है, तो वह मुक्त हो जाता है और यही वास्तविक शिक्षा है। अतः प्रारंभ से ही बालकों का पालन पोषण, सही शिक्षा, सही प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, जिससे वह हिंसा की बजाय अपने विवेक से कार्य कर सकें। उनके अनुसार, शिक्षा द्वारा ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना चाहिए जो निर्भय हो, जिनमें बुद्धि हो और जो विवेक के साथ काम कर सकें।

संपूर्ण एवं सर्वांगीण विकास– उनके अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना होना चाहिए अर्थात बालक का चहुँमुखी विकास करना। बालक में शिक्षा के माध्यम से व्यापक दृष्टिकोण विकसित किया जाना चाहिए, क्योंकि संकीर्ण भावना एवं विचारों से उसका सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। जीवन के प्रत्येक स्तर पर विकास करने के लिए बालकों में प्रारंभ से ही व्यापक दृष्टिकोण का विकास होना बहुत आवश्यक है, तभी उसका संपूर्ण सर्वांगीण विकास संभव हो सकता है। उनका मानना था कि शिक्षा का मूल उद्देश्य, एक संतुलित मानव का विकास करना है, जो जीवन का अर्थ ढूँढ़ सके, उसे समझ सके तथा जो वैज्ञानिकता, बुद्धि तथा आध्यात्मिकता में समन्वय स्थापित कर सकें।

शिक्षा मित्र रूप में– जे. कृष्णमूर्ति का मानना था कि शिक्षा का स्वरूप एक ऐसे मित्र के रूप में होना चाहिए जो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत मानव के कल्याण एवं विकास के अवसर प्रदान करती रहे। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा छात्रों पर बोझ के रूप में या थोपी हुई नहीं होनी चाहिए बल्कि शिक्षा का स्वरूप सरल, सहज, सामान्य तथा बालक की रुचि के अनुरूप होनी चाहिए। भय, दंड आधारित शिक्षा सीखने में बाधा उत्पन्न करती है, इससे बालक की जिज्ञासा, चिंतन, विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब तक किसी व्यवस्था के प्रति हमारी रुचि एवं आकांक्षा नहीं होगी उसको प्राप्त करने के लिए किए गए सभी प्रयास क्षणिक और अस्थाई होंगे। इसका कोई उचित अर्थ नहीं होगा। शिक्षा ऐसी हो जो बालक को भय और दबाव से निकलने में सहायता कर सकें। इसलिए बालक बहुत ही सहजता से तथा रुचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण करें, तभी शिक्षा बालक के लिए एक मित्र के रूप में कार्य कर सकती है।

सभ्यता एवं संस्कृति का संरक्षण– कृष्णमूर्ति जी के अनुसार शिक्षा का स्वरूप हमारी सभ्यता और संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए तभी हमारे सांस्कृतिक मूल्य सुरक्षित रह सकते हैं। अन्यथा हमारी प्राचीन, समृद्ध शिक्षा प्रणाली धीरे-धीरे समाप्त होती जाएगी। विश्व पटल से लुप्त हो जाएगी। इसलिए हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी हो जो हमारी सभ्यता और संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित और संरक्षित रख सकें।

अतः कृष्णमूर्ति जी शिक्षा को बालक के सर्वांगीण विकास हेतु बहुत उपयोगी मानते थे। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जो कि नैतिकता, मानवीय मूल्य, व्यावहारिकता एवं आध्यात्मिक विकास के गुणों से युक्त हो तथा जीवन के यथार्थ को स्वयं अपनी आँखों से देखते हुए अपनी बुद्धि एवं विवेक के अनुसार समझ कर स्वयं कार्य कर सकें। अर्थात शिक्षा को हमें समझदार, आध्यात्मिक और बुद्धिमान होने में सहायक होना चाहिए जिससे कि व्यक्ति जीवन यापन में अपनी बुद्धि एवं विवेक का प्रयोग कर सकें ना की किसी का अंधानुकरण या अनुसरण करें।

उनके शब्दों में, शिक्षा को हमें समझदार, अयांत्रिक और बुद्धिमान होने में सहायक होना चाहिए।

702 फ्लोरा टावर, न्यू फ्लोरा काम्पलेक्स,
उदयपुर (राज.)
मो.न.: 8058460706

Rajasthan Council of Educational Research and Training

हिन्द की चादर : गुरु तेग बहादुर

❒ डिप्टी सिंह

'तेग बहादुर चादर हिंद।
दनिंद मनिंद भए अवतारे।।'
धरम हेत साका जिनि कीआ,
सीस दीआ पर सिररु ना दीआ'

(भावार्थ–धर्म के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी परन्तु अपना स्वाभिमान नहीं दिया।)

विभिन्न धर्मों को पल्लवित एवं पुष्पित करने वाली भारतवर्ष की भूमि अनेक संतों एवं महापुरुषों के अनुकरणीय जीवन–दर्शन से हमें रूबरू करवाती रही है। सच्चाई और धर्म की सुरक्षा के लिए अपनी कुर्बानी देने वाले, त्यागी, वैरागी और शूरवीर, सिक्खों के नवें गुरु तेग बहादुर भी ऐसे ही जीवन–दर्शन के स्वरूप थे। शांति, क्षमा, सहनशीलता के गुणों वाले गुरु तेग बहादुर ने लोगों को प्रेम, एकता, भाईचारे का संदेश दिया। आप का किसी ने अहित करने की कोशिश भी की तो उन्होंने उसे भी अपनी सहनशीलता, मधुरता, सौम्यता से परास्त कर दिया। उनके जीवन का प्रथम दर्शन यही था कि धर्म का मार्ग सत्य और विजय का मार्ग है। जीवनपर्यन्त प्रथम गुरु नानक द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करने वाले गुरु तेग बहादुर द्वारा रचित 115 पद्य गुरु ग्रन्थ साहिब में सम्मिलित हैं। आपने काश्मीरी पण्डितों तथा अन्य हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाने का विरोध किया। इस्लाम स्वीकार न करने के कारण 1675 में मुगल शासक औरंगजेब ने सबके सामने उनका सिर कटवा दिया। गुरुद्वारा शीश गंज साहिब तथा गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब उन स्थानों का स्मरण दिलाते हैं जहाँ गुरुजी की हत्या की गयी तथा जहाँ उनका अन्तिम संस्कार किया गया। विश्व इतिहास में धर्म एवं मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांत की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वालों में गुरु तेग बहादुर साहब का स्थान अद्वितीय है।

'साधन हेत इति जिन करी,
सीस दिया पर सी न उचरी।'

इस महावाक्य अनुसार गुरुजी का बलिदान न केवल धर्म पालन के लिए अपितु समस्त मानवीय सांस्कृतिक विरासत की खातिर बलिदान था। धर्म उनके लिए सांस्कृतिक मूल्यों

और जीवन विधान का नाम था। इसलिए धर्म के सत्य शाश्वत मूल्यों के लिए उनका बलि चढ़ जाना वस्तुत: सांस्कृतिक विरासत और इच्छित जीवन–विधान के पक्ष में एक परम साहसिक अभियान था। अगर हम उस कार्य पर विचार करें जो गुरु तेग बहादुर ने पूरा किया तो वह अतुलनीय है। सभी परिस्थितियों में व्यक्तिगत बहादुरी, कठिनाइयों के बीच उनकी दृढ़ता से सहनशीलता तक का उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता है। केवल सिख ही नहीं अन्य धर्मों के लोग भी उनकी वंदना करते हैं।

प्रारंभिक जीवन परिचय–पिता हरगोबिन्द व माता नानकी के पाँचवें पुत्र तेग बहादुर, आठवें गुरु 'हरिकृष्ण राय' की अकाल मृत्यु हो जाने के कारण, जनमत द्वारा नवम् गुरु बनाए गए। आपने आनन्दपुर साहिब नगर का निर्माण कराया और वहीं रहने लगे थे। आपका बचपन का नाम त्यागमल था। मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ मुग़लों के हमले के खिलाफ़ हुए युद्ध में आपने वीरता का परिचय दिया। आपकी वीरता से प्रभावित होकर आपके पिता जी ने आपका नाम त्यागमल से तेग़ बहादुर (तलवार के धनी) रख दिया। युद्धस्थल में भीषण रक्तपात से गुरु तेग़ बहादुर के वैरागी मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और आपका मन आध्यात्मिक चिंतन की ओर हुआ। धैर्य, वैराग्य और त्याग की मूर्ति गुरु तेग़ बहादुर ने एकांत में लगातार 20 वर्ष तक 'बाबा बकाला' नामक स्थान पर साधना की। आठवें गुरु हरिकृष्ण राय जी ने अपने उत्तराधिकारी का नाम के लिए 'बाबा बकाले' का निर्देश दिया।

धर्म–प्रचार, यात्राएं एवं उपदेश–गुरुजी ने धर्म के प्रसार लिए आनंदपुर साहब, कीरतपुर, रोपण, सैफाबाद, खिआला (खदल) आदि कई स्थानों का भ्रमण किया। यहाँ उपदेश देते हुए दमदमा साहब से होते हुए कुरुक्षेत्र पहुँचे। कुरुक्षेत्र से यमुना के किनारे होते हुए कड़ामानकपुर पहुँचे और यहीं पर उन्होंने साधु भाई मलूकदास का उद्धार किया।

गुरु तेगबहादुर ने प्रयाग, बनारस, पटना, असम आदि क्षेत्रों में आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, उन्नयन के लिए रचनात्मक कार्य किए। आध्यात्मिकता, धर्म का ज्ञान बाँटा तथा रुढ़ियों, अंधविश्वासों की आलोचना कर नए आदर्श स्थापित किए।

अन्त:साधना को महत्त्व देते हुए गुरु तेग बहादुर फरमाते हैं–

काहे रे बन खोजन जाई।
सरब निवासी सदा अलेपा।
तोहि संग समाई।। 1।। रहाऊ।।
पुहुप मधि जिऊ बास बसत है,
मुकर माहि जैसे छाई।।
तैसे ही हरि बसै निरंतर,
घट ही खोजहु भाई।।

मनुष्य को उपदेश देते हुए वे कहते हैं :–

''मनुष्य का जन्म अमूल्य रत्न की तरह दुर्लभ है। इसे विषय–विकारों में व्यर्थ नहीं करना चाहिए। श्वास–श्वास में ईश्वर का ध्यान, संतों की सेवा, ईश्वर–भक्ति करते हुए धर्म–कार्य करते हुए प्रभु की रजा (इच्छा) में खुश रहना चाहिए। यही मनुष्य का धर्म है।''

साधो गोविंद के गुन गावऊ।
मानस जन्म अमोलक पाइओ।
बिरथा काहे गवावऊ।।

वे तंबाकू आदि अन्य प्रकार के नशे से सभी को दूर रहने के लिए कहते हुए उपदेश करते हैं –

गंदा धूम बंस ते तिआगहु।
अति गिलान इस ते धरि भागहु।
सिख संतन की सेवा में लागहु।
अचहु वंड करि कीरति अनुरागो।।
जब लगि गंदा धूम न पीओ।

Rajasthan Education Department

तब लौं घर महि सभ किछ थीओ।
जो अब अहो, करयो तिन पान।
भयो रंक धन धान सु हानि।।

बनारस यात्रा के दौरान उन्होंने पंडितों के साथ धर्म-चर्चा के समय कहा :-

साधो मन का मान तिआगहु।
काम, क्रोध, संगत दुरजन की।
ताते अहनिश भागहु।।1।। रहाऊ।।
सुख-दुख दोनों सम कर जानै।
अउर मान अपमाना।।
हरख सोग ते रहे अतीता
तिन जगि ततु पछाना।।

उन्होंने परोपकार के लिए कुएँ खुदवाना, धर्मशालाएँ बनवाना आदि कार्य भी किए। इन्हीं यात्राओं में 1666 में गुरुजी के यहाँ पटना साहब में पुत्र का जन्म हुआ। जो दसवें गुरु- गुरु गोविंद सिंह बने।

कश्मीरी पण्डितों की रक्षा- औरंगज़ेब के शासन काल की बात है। औरंगज़ेब के दरबार में एक विद्वान पंडित आकर रोज़ गीता के श्लोक पढ़ता और उसका अर्थ सुनाता था, पर वह पंडित गीता में से कुछ श्लोक छोड़ दिया करता था। एक दिन पंडित बीमार हो गया और औरंगज़ेब को गीता सुनाने के लिए उसने अपने बेटे को भेज दिया परन्तु उसे बताना भूल गया कि उसे किन किन श्लोकों का अर्थ राजा के सामने नहीं करना था। पंडित के बेटे ने जाकर औरंगज़ेब को पूरी गीता का अर्थ सुना दिया। गीता का पूरा अर्थ सुनकर औरंगज़ेब को यह ज्ञान हो गया कि प्रत्येक धर्म अपने आपमें महान है किन्तु औरंगजेब की हठधर्मिता थी कि वह अपने धर्म के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म की प्रशंसा सहन नहीं थी। अपनी इसी हठधर्मिता के कारण औरंगजेब ने हिन्दुओं व अन्य धर्मों के लोगों को जबरन मुसलमान बनाना प्रारम्भ कर दिया। इसी जुल्म से त्रस्त कश्मीरी पंडित गुरु तेगबहादुर के पास आए और उन्हें बताया कि किस प्रकार इस्लाम स्वीकार करने के लिए अत्याचार किया जा रहा है, यातनाएँ दी जा रही हैं। गुरु चिंतातुर हो समाधान पर विचार कर रहे थे तो उनके नौ वर्षीय पुत्र बाला प्रीतम (गुरु गोविन्द सिंह जी) ने उनकी चिंता का कारण पूछा, पिता ने उनको समस्त परिस्थिति से अवगत कराया और कहा इनको बचाने का उपाय एक ही है कि मुझको प्राणघातक अत्याचार सहते हुए प्राणों का बलिदान करना होगा। वीर पिता की वीर संतान के मुख पर कोई भय नहीं था कि मेरे पिता को अपना जीवन कुर्बान करना होगा। उपस्थित लोगों द्वारा उनको बताने पर कि आपके पिता के बलिदान से आप अनाथ हो जाएँगे और आपकी माँ विधवा, तो बाल प्रीतम ने उत्तर दिया, यदि मेरे अकेले के यतीम होने से लाखों बच्चे यतीम होने से बच सकते हैं और अकेले मेरी माता के विधवा हो जाने से लाखों माताएँ विधवा होने से बच सकती है तो मुझे यह स्वीकार है। अबोध बालक का ऐसा उत्तर सुनकर सब आश्चर्य चकित रह गए। तत्पश्चात गुरु तेगबहादुर ने कश्मीरी पंडितों से कहा कि आप जाकर औरंगज़ेब से कह दें कि यदि गुरु तेगबहादुर ने इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया तो उनके बाद हम भी इस्लाम धर्म ग्रहण कर लेंगे और यदि आप गुरु तेगबहादुर को इस्लाम धारण नहीं करवा पाए तो हम भी इस्लाम धर्म धारण नहीं करेंगे। इससे औरंगजेब क्रुद्ध हो गया और उसने गुरुजी को बन्दी बनाए जाने के लिए आदेश दे दिए। गुरुजी ने औरंगजेब से कहा कि यदि तुम जबरदस्ती लोगों से इस्लाम धर्म ग्रहण करवाओगे तो तुम सच्चे मुसलमान नहीं हो क्योंकि इस्लाम धर्म यह शिक्षा नहीं देता कि किसी पर जुल्म करके मुस्लिम बनाया जाए।

उन्होंने औरंगजेब से कहा :-
तुम को बादशाही रब दीनी।
दोनों चश्म बराबर बीनी।।
(ईश्वर/अल्लाह ने आपको बादशाहत दी है आपका धर्म है कि समस्त प्रजा को एक नज़र से देखो।) औरंगजेब यह सुनकर आगबबूला हो गया। इस्लाम न स्वीकारने के कारण 11 नवम्बर, 1675 को औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक में सार्वजनिक रूप से गुरु तेग बहादुर का सिर कटवा दिया। इस प्रकार श्री गुरु तेग बहादुर को हिन्द की चादर नाम दिया गया जिसका वर्णन इस प्रकार है-

सिर देना ते मुहों ना सी करनी।
ईह है मौत दे नाल रीत साडी।।
जिउना मरनां तां जानदा है जग सारा।
बंद-बंद कटवोना तां है रीत साडी।।

यादगार गुरुद्वारे-गुरु तेगबहादुर की याद में उनके शहीदी स्थल पर गुरुद्वारा बना है, जिसका नाम गुरुद्वारा शीश गंज साहिब (दिल्ली) है। कीरतपुर साहिब जी पहुँचकर भाई जैता से स्वयँ गोबिन्द राय (श्री गुरु गोविन्द सिंह) ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर साहिब का शीश प्राप्त किया। भाई जैता, जो रँगरेटा कबीले के साथ सम्बन्धित थे, को अपने आलिंगन में लिया और वरदान दिया 'रँगरेटा गुरु का बेटा'। उपस्थित संगत से विचार हुआ कि गुरुदेव जी के शीश का अन्तिम संस्कार कहाँ किया जाए? उपस्थित संगत, दादी माँ व माता गुजरी ने परामर्श दिया कि श्री आनंदपुर साहिब गुरुदेव की स्वयँ बसाई हुई नगरी है अत: उनके शीश की अंत्येष्टि वहीं की जाए। इस पर शीश को पालकी में आनंदपुर साहिब लाया गया और वहाँ शीश का भव्य स्वागत किया गया सभी ने गुरुदेव के पार्थिव शीश को श्रद्धा सुमन अर्पित किए तत्पश्चात विधिवत दाह संस्कार किया गया।

सहनशीलता, कोमलता और सौम्यता की मिसाल के साथ-साथ गुरु तेग बहादुर ने हमेशा यही संदेश दिया कि किसी भी इंसान को न तो किसी को डराना चाहिए और न ही स्वयं किसी से डरना चाहिए। इसी की मिसाल गुरु तेग बहादुर ने अपना बलिदान देकर दी, जिसके कारण उन्हें हिन्द की चादर कहा जाता है। उन्होंने दूसरों को बचाने के लिए अपनी कुर्बानी दी। गुरु तेग बहादुर को अगर अपनी महान शहादत देने वाले एक क्रांतिकारी युग पुरुष कहा जाए तो भी गलत न होगा। पूर्ण गुरु चमत्कार या करामातें नहीं दिखाता वो उस अकालपुरख (ईश्वर) की रजा में रहता है और अपने सेवकों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है। गुरु तेग बहादुर ने धर्म की खातिर अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया। ऐसा कोई संत परमेश्वर ही कर सकता है, जिसने अपने पर में निज को पा लिया हो अर्थात् अपने हृदय में परमात्मा को पा लिया हो। उसके भेद को तो कोई बिरला ही समझ सकता है। संसार को ऐसे बलिदानियों से प्रेरणा मिलती है, जिन्होंने जान तो दे दी, परंतु सत्य का त्याग नहीं किया। नवम् पातशाह गुरु तेग बहादुर भी ऐसे ही बलिदानी थे। गुरु जी ने स्वयं के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के अधिकारों एवं विश्वासों की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। अपनी आस्था के लिए बलिदान देने वालों के उदाहरणों से तो इतिहास भरा हुआ है, परंतु किसी दूसरे की आस्था की रक्षा के लिए बलिदान देने की एक मात्र मिसाल है-नवम् पातशाह की शहादत।

वरिष्ठ अध्यापक (पंजाबी)
स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़,
ब्लॉक-सूरतगढ़, श्रीगंगानगर, (राज.)
मो.न.: 9460787595

Rajshan Education Department

महात्मा बुद्ध और उनकी शिक्षा

❒ डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में महात्मा बुद्ध राजकुल में उत्पन्न हुए थे, किन्तु उनका मन राजकीय वैभव, संपन्नता और आडम्बरों में बंध न सका। वह बचपन से ही एकांत प्रिय, दयालु, दीन-दुखियों और प्राणियों के प्रति दयावान थे। संसार के पीड़ित जनों के कल्याण हेतु एक नए मार्ग की खोज के लिए उन्होंने गृह त्याग कर दिया और बौद्ध धर्म का मार्ग संसार को दिखाया। इस महापुरुष के जीवन में वैशाख की पूर्णिमा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनका जन्म वैशाख पूर्णिमा को हुआ, इसी तिथि को उन्होंने गृह त्याग किया और इसी तिथि को उनका निर्वाण हुआ अतः उसे बुद्ध पूर्णिमा भी कहते हैं।

समाचार पत्र में पढ़ा 'खिलाड़ी से बने गैंगस्टर : अपराध के दलदल में फँसकर पकड़ी गलत राह' वर्तमान युवा पीढ़ी को सन्मार्ग की आवश्यकता है। विद्यालयों में महात्मा बुद्ध जैसे अवतारों और जीवन चरित्रों पर विस्तार से चर्चा करना जरूरी है। यह समय की मांग है। एक समय वह था जब एक राजकुमार के मन में वैराग्य पैदा हो गया। राजकुमार होकर भी परमार्थ के लिए, लोक कल्याण के लिए राजमहलों को त्याग कर घर से सत्य की खोज में निकल पड़े। वर्तमान युग में शिक्षा में किस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है। भौतिकता की अंधी दौड़ से बचाकर नैतिक संस्कारों, जीवन मूल्यों व श्रेष्ठ चरित्र निर्माण की शिक्षा मिले। वैज्ञानिक प्रगति में अनुशासन, मर्यादा और संयम की आवश्यकता है। बच्चों को बचपन से ही चरित्र निर्माण का शुभ संदेश मिले। तीव्र लालसा जागृत न हो, विषय वासनाओं की तरफ भटक कर गलत राहें न अपनाएँ इसीलिए हमारे महापुरुषों के जीवन चरित्रों को यथा समय याद करना और उनकी शिक्षाओं को विभिन्न माध्यमों से युवा पीढ़ी के पास पहुँचाना जरूरी है। जयंतियाँ और उत्सव बहुत श्रेष्ठ अवसर होते हैं, विद्यालयों में इनको मनोयोगपूर्वक मनाया जाना चाहिए।

महात्मा बुद्ध का भारत और विश्व के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारत और विश्व के इतिहास में बौद्धिक और धार्मिक आंदोलन हुए, जिनके फलस्वरूप मनुष्य के धार्मिक और राजनीतिक जीवन में बहुत परिवर्तन आया। ईरान में महात्मा जरथ्रुष्ट के नेतृत्व में धार्मिक क्रांति हुई, यूनान में हीरात कीट्स ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रांति का नेतृत्व किया तथा चीन में महात्मा कन्फ्यूशियस और लाओत्से के मार्गदर्शन में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्रांति का विकास हुआ।

विश्व में व्याप्त इस क्रांति की लहर के अनुरूप ही छठी शताब्दी ईसा पूर्व में वैदिक धर्म की प्रतिक्रिया स्वरूप भारत में दो नवीन धर्म उत्पन्न हुए, जिनमें बौद्ध धर्म ने विश्व व्यापी रूप धारण किया। इस धर्म के प्रतिपादक महात्मा बुद्ध राजकुल में उत्पन्न हुए थे, जिन्होंने विश्व को कल्याण का मार्ग दिखाया था। महात्मा बुद्ध का संसार के महान संतों में बहुत ऊँचा स्थान है। उनके अनुयायियों की संख्या उनकी मातृभूमि भारत में चाहे कम है लेकिन चीन, जापान, श्रीलंका, तिब्बत और बर्मा में बौद्ध का जोर काफी है, बर्मा में तो आज भी बौद्ध धर्म राजधर्म है, ऐसे महान संत का जीवन परिचय विस्तार से जानना आवश्यक है।

बौद्ध साहित्य के अनुसार महात्मा बुद्ध का जन्म 566 ईसा पूर्व में नेपाल की घाटी में स्थित शाक्य गणराज्य के क्षत्रिय राजा शुद्धोधन के यहाँ वैशाख की पूर्णिमा के दिन उसकी राजधानी कपिल वस्तु के पास लुंबिनी नामक गाँव में हुआ था। इनकी माता का नाम महामाया था लेकिन इनके जन्म के सात दिन बाद ही इनकी माता का असामयिक निधन हो गया। इनका लालन-पालन इनकी मौसी और सौतेली माता प्रजापति ने किया। इनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। गौतम गौत्र होने के कारण गौतम नाम से भी जाने गए। बौद्ध साहित्य में कहा गया है कि इनके जन्म के कुछ समय बाद असित नामक ज्योतिषी ने इनके भविष्य में महान संत अथवा चक्रवर्ती सम्राट होने की भविष्यवाणी की थी। सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त होने पर वह बुद्ध कहलाए। विश्वामित्र नामक आचार्य ने उन्हें वेद, वेदांग, धनुर्विद्या, घुड़सवारी, अस्त्र संचालन आदि क्षत्रियोचित तथा राजकुमार के योग्य सभी प्रकार की शिक्षा दी, जिनको प्रखर बुद्धि के कारण सिद्धार्थ ने शीघ्र ही सीख लिया। सिद्धार्थ बचपन से ही विनम्र और दयालु थे। एक बार अपने भाई देवदत्त द्वारा हंस के तीर मारने पर उसके गिरने पर सिद्धार्थ ने उसे उठाकर करुणा और स्नेह से रखा और देवदत्त के हठ करने पर भी उसे नहीं लौटाया। बचपन से ही राजकुमार एकांत में बैठकर विचार और चिंतन में लीन रहते थे। उनको सांसारिक बातों में रुचि नहीं थी और उनके मन में दीन दुखियों के प्रति प्रेम एवं सहानुभूति थी। युवा होने पर सिद्धार्थ का मन राजमहल के भोग विलास में नहीं लगता था। वह लगातार गंभीर होते जा रहे थे। ऐसी हालत में राजा शुद्धोधन ने राजकुमार का मन सांसारिक जीवन की ओर आकर्षित करने के लिए 19 वर्ष की आयु में सुंदर राजकुमारी यधोधरा के साथ उनका विवाह कर दिया। उनके राहुल नामक पुत्र का जन्म हुआ। राहुल का मोह भी सिद्धार्थ को सांसारिक बंधन में नहीं बांध सका। सिद्धार्थ के सामने समस्त संसार के कल्याण का लक्ष्य था।

कहा जाता है कि एक दिन जब सिद्धार्थ रथ में बैठकर बाग में घूमने के लिए जा रहे थे, तो मार्ग में उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को देखा, एक मृतक की अर्थी को देखा, एक कृशकाय रोगी को और एक साधु को देखा। अपने सारथी छंदक से यह जानकर कि प्रत्येक व्यक्ति इस दशा को प्राप्त होता है तो सिद्धार्थ का मन संसार से विरक्त हो गया और वह मनुष्य के कल्याण का मार्ग ढूँढ़ने के लिए व्याकुल हो उठे। इस प्रकार इन दृश्यों ने उनके मन में जीवन के प्रति वैराग्य का भाव उत्पन्न होने तथा संसार के सभी दुःखों को हटाने का उपाय जानने की इच्छा की। तब वह 29 वर्ष की उम्र में 537 ईसा पूर्व में वैशाख की पूर्णिमा की रात को पत्नी, पुत्र, पिता और मौसी सभी को सोते हुए छोड़कर शांति की खोज में घर से चल पड़े। उनका यह गृह त्याग बौद्ध साहित्य में 'महाभिनिष्क्रमण' कहलाया।

कपिलवस्तु से कुछ दूर जाकर सिद्धार्थ ने

Rajasthan Education Department

अपनी पोशाक और आभूषण उतारे तथा घोड़ा और वस्त्र आभूषण अपने नौकर को देकर वापस भेज दिया। तब बाल कटवाकर और गेरुए वस्त्र पहनकर संन्यासी का वेष धारण कर लिया। वे 6 वर्ष तक घूमते हुए ब्राह्मण धर्म के आचार्यों- वैशाली के सांख्यदर्शन अलार कलाम, वैशेषिक दर्शन के विद्वान उद्दकराम पुत्र और पटना जिले के राजगृह के दार्शनिक रुद्रक और उरुवेला आदि स्थानों के विद्वानों और महात्माओं से जीवन-मृत्यु, ईश्वर और अमरता आदि विषयों पर बहस करते रहे किन्तु उन्हें शांति प्राप्त नहीं हुई। तब उन्होंने उरुवेला के घने जंगल में कठिन तप किया, जहाँ 5 अन्य भिक्षु भी उनके साथी हो गए, किन्तु फिर भी सत्य का दर्शन नहीं हुआ। अंत में तपस्या त्याग कर नरंजना नदी के किनारे बौद्ध गया में एक पीपल के पेड़ के नीचे समाधि लगाकर बैठे। वहीं यकायक उनको वैशाख की पूर्णिमा के दिन दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ। तब उन्होंने अपने को बुद्ध और तथागत तथा अपने मत को बौद्ध धर्म कहना शुरू किया। जिस पीपल के पेड़ के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान अथवा बुद्धत्व प्राप्त हुआ था, उसे बोधि वृक्ष कहा गया।

गृह त्यागकर ज्ञान प्राप्ति हेतु जाते समय मगध नरेश बिम्बिसार ने उन्हें सेनापति बनाना चाहा था, पर गौतम ने अस्वीकार कर दिया था। राजा ने कहा- 'महात्मन! ज्ञान प्राप्त करके इधर भी आना और अपने सुख का कुछ अंश मुझे भी प्रदान करना।'

एक बार एक युवती अपने मृत बच्चे को जिंदा कराने के लिए आई तो उन्होंने उससे काली सरसो उस घर से लाने को कहा जहाँ कभी कोई न मरा हो और इस प्रकार उसे संतोष दिलाया। उनके तपस्या काल में गडरिए से दूध लेकर पीया। स्त्रियों के गीत तथा सुजाता की खीर का बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में अपने पाँच शिष्यों को दिया। बौद्ध धर्म में इसे 'धर्म चक्र प्रवर्तन' कहा गया है। बुद्ध ने कहा- ''भिक्षुओं! मार्ग दो हैं- एक तप का, दूसरा अत्यंत विलास का। दोनों ही से संकट है। भिक्षुओं एक तीसरा मार्ग है तथागत का। देखा बीच का मध्यम निकाय न अत्यंत तप का न अत्यंत विलास का कल्याणकारी।

इसके बाद वे पैंतालीस वर्ष तक घूम-घूम कर अपना उपदेश देते रहे। उन्होंने सत्य को जीवन के हर पहलू-मन, वचन और कर्म में महत्त्वपूर्ण बतलाया। उनका प्रधान शिष्य आनन्द, उपालि और सारिपुत्र मौदगल्यान थे। कोसल नरेश प्रसेनजित, मगध नरेश बिम्बिसार, अजातशत्रु डाकू अंगुलिमाल, वैद्य जीवक तथा श्रावस्ती का महाजन अनाथ पिण्डक भी उनके शिष्य बन गए। बिम्बिसार ने अपनी राजधानी राजगृह में 'वेलुवन' नामक उद्यान बुद्ध को भेंट किया। श्रावस्ती में महाजन अनाथपिंडक ने उन्हें 'जेतवन नामक उद्यान भेंट किया था, जिसमें बुद्ध के निर्वाणोपरांत एक निहार और दो चैत्यों का निर्माण कराया गया था।' उनके उपदेशों के प्रभाव से डाकू अंगुलिमाल साधु बन गया।

गौतम बुद्ध का सम्पूर्ण जीवन हमारे लिए प्रेरणा का अमर स्रोत है। उनके जीवन से हमें मुख्य रूप से निम्न शिक्षाएँ अथवा प्रेरणाएँ प्राप्त होती है, जिन्हें हमें ग्रहण करना चाहिए।

1. सत्य को अपने जीवन के हर कार्य और पहलू में अपनाना चाहिए।
2. सत्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं का हमें डटकर सामना करना चाहिए।
3. दोषों अथवा सामाजिक कुरीतियों का हमें डटकर विरोध करना चाहिए और उनमें सुधार कर नया आदर्श रखना चाहिए। चोरी तथा धनादि संग्रह नहीं करना चाहिए। अहिंसा का पालन करना चाहिए।
4. हमें ज्ञान प्राप्ति के लिए निःसंकोच प्रत्येक के पास बिना जाति भेद का विचार किए हुए जाना चाहिए तथा ब्रह्मचर्य का यथाशक्ति पालन करना चाहिए।
5. बिना उद्देश्य की पूर्ति के हमें शांत नहीं बैठना चाहिए और उसी दिशा में निरंतर बढ़ते जाना चाहिए, भले ही हमारे मार्ग में कितनी ही बाधायें आयें।

हमें सभी जीवों के साथ कल्याणकारी, नम्र, सहानुभूति और करुणा का व्यवहार करना चाहिए तथा दूसरों को कष्ट मुक्त करने के लिए अपने सुख को भी छोड़ देना चाहिए।

इस प्रकार हमें महात्मा बुद्ध के जीवन से महान शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ मिलती हैं। इन शिक्षाओं पर चलने से मनुष्य मात्र का कल्याण होगा।

महात्मा गौतम बुद्ध होने के पश्चात गया से काशी और वहाँ से ऋषि पत्तन (सारनाथ) गए। वहाँ उन्होंने कोडिण्य आदि अपने पाँच साधुओं को चेला बनाया जो उन्हें पहले छोड़ आए थे। सारनाथ में उनके प्रथम उपदेश में महात्मा बुद्ध की नैतिक शिक्षाओं का सार निहित है। उन्होंने बतलाया कि मनुष्य की इच्छाएँ ही सब दुःखों का कारण हैं। उनके मत में शरीर को अधिक कष्ट देना भी व्यर्थ है। अतः उन्होंने मध्यम मार्ग को महत्त्वपूर्ण बतलाया। उनकी प्रमुख शिक्षाएँ चार आर्य सत्य अष्टांगिक मार्ग एवं दस शील के रूप में थी।

बुद्ध ने अहिंसा पर जोर दिया है। उनका कहना था कि प्राणियों को पीड़ा पहुँचाना महा पाप है। उन्होंने जीवन का अंतिम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति बतलाया है। यह निर्वाण सभी जाति तथा सभी वर्गों के लोगों के अच्छे कार्यों से प्राप्त हो सकता है।

महात्मा बुद्ध कर्म तथा उसके अच्छे और बुरे फल में विश्वास करते थे। वह पुनर्जन्म और मोक्ष में विश्वास करते थे। मोक्ष से उनका मतलब मृत्यु से छुटकारा नहीं, बल्कि दुख से छूट कर पूर्ण शांति अनुभव करना है। इसको पाने के लिए उन्होंने अच्छा कर्म आवश्यक बतलाया। उन्होंने यज्ञों में बलि की निंदा की और जीवों के प्रति प्रेम और दयाभाव प्रकट करने के लिए अहिंसा के पालन पर बल दिया। संसार और वासनाओं को वह क्षणिक तथा अस्थायी मानते थे। वह ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने देवताओं और प्रचलित विचारों, वेदों और ब्राह्मणों की महत्ता को नहीं माना। उन्होंने सरल और संयमपूर्ण जीवनयापन पर जोर दिया। उन्होंने जाति-पांति का घोर विरोध किया तथा सभी वर्ण वालों को शिक्षा दी।

बुद्ध के उपदेश मानव जाति के हृदय में अमर है। इनसे हमें करुणा, शांति और भाईचारे की शिक्षा और प्रेरणा मिलती है। आज की युवा पीढ़ी को इनके बताए मार्ग पर चिंतन-मनन आवश्यक है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय श्रीरामपुरा,
ब्लॉक-सांभरलेक, जयपुर (राज.)
मो.न.: 8946838583

Rajasthan Education Department

स्वाभिमान के पर्याय-राजस्थानी भाषा के कवि

❒ डॉ. गौरीशंकर प्रजापत

राजस्थान की धोरा धरती धारा तीर्थ धाम के रूप में स्वनामधन्य रही है। यहाँ की शौर्य प्रधान संस्कृति के निर्माण और परित्राण में यहाँ के कवि कोविदों का विशेष योगदान रहा है। राजस्थान के कवि सामाजिक चेतना का संचारण और क्रांति का कारण है। वह स्वातंत्र्य का समर्थक पौरुष का प्रशंसक और प्रगति का पोषक होने के साथ ही युगचेता, निर्भीक नेता और प्रख्यात प्रेणेता रहा है। उत्कृष्ट का अभिनन्दन और निकृष्ट का निन्दन उसकी सहज प्रकृति रही है। सिद्धांत और स्वाभिमान हेतु संघर्ष करने वाले बागी वीरों का वह सदैव अनुरागी रहा है। समता का अधिकार एवं पवित्रता का पुजारी होने के कारण वह सदैव लोक हितकारी और सदाचारी रहा है। कर्त्तव्य परायणता के पारायण से ही वह नर से नारायण तक का प्रिय पात्र बना। विचार, वाणी और व्यवहार के तारतम्य की त्रिवेणी ने ही उसे नरत्व से देवत्व की कोटि में प्रतिष्ठित किया।

सत्यनिष्ठा और प्रतिष्ठा के कारण राजस्थान के कवि जन रुचि को सदैव आकृष्ट करते रहे। घटनाक्रम का यथातथ्य प्रचार उसके आचार का प्रमुख अंग रहा है।

देश पर जब जब विदेशी ताकतों का जाल फैलने लगा तो इन कवियों ने ही सर्वप्रथम चेतना का शंखनाद किया। महाराणा राजसिंह और महाराणा फतह सिंह जीवन में एक-एक बार डिग गए थे, तो कवि दुरसा आढ़ा, बांकीदास आशिया और केसरी सिंह बारहठ ने अपने गीत और कविता की गर्जना से अंग्रेजों के दुष्परिणाम का भान कराते हुए पुनः सचेत किया था। इन कवियों ने अंग्रेजों की अंग्रेजी भाषा में बनाई गई नीति को समझा और उस पर मनन एवं अनुवाद करते हुए उस नीति को जनता तक जनता की भाषा में पहुँचाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

भारत में अंग्रेजी- सत्ता के विरुद्ध राष्ट्रीय चेतना जगाने का सर्वप्रथम उद्घोष राजस्थान के कवियों ने किया, जिनमें कवि बांकी दास आशिया का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने सन् 1857 के गदर से 52 वर्ष पूर्व सन् 1805 में अंग्रेजों की नीति को समझ कर एक चेतावनी रो गीत लिखकर राजस्थान के राजाओं को फटकार सुनाते हुए एवं जनता को जगाने का कार्य किया और अपने गीत के माध्यम से अंग्रेजी सत्ता के दुष्परिणामों को अवगत कराया था। भरतपुर के जाटों के शौर्य एवं स्वातंत्र्य- प्रेम की प्रशंसा करते हुए कवि ने राजकवि होते हुए भी निर्भीकता और निष्पक्षता का परिचय दिया।

आयो इंगरेज मुलक रै ऊपर,
आहंस लीधा खैंचि उरा।
धणियां मरै न दीधी धरती,
धणियां ऊभा गई धरा।।
फौजा देख न कीधी फौजा,
दोयण किया न खळां डळां।
खंवां खांच चूड़ै खांवद रै,
उणहिज चूड़ै गई यळा।।1।।

इस गीत में कवि का कथन है कि जब कोई सुहागिन स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे के घर में जाती है तो पहले वाला चूड़ा उतारकर दूसरे का चूड़ा धारण करती है, किंतु राजाओं की धरती रूपी पत्नी तो उसी चूड़े के साथ दूसरों के पास चली गई और वे धरती को देखते ही रह गए और यह धरती अंग्रेजों की गुलाम हो गयी। कवि आशिया ने तत्कालीन राजाओं की दुर्बलता एवं कायरता पर कटु व्यंग्य करते हुए इस देश के हिंदू और मुसलमानों से कहा कि धरती और नारी की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दी जाती है।

छत्रपतियाँ लागी नह छाणत,
गढधपतियाँ धर परी गुमी।
बाळ नाह कियौ बापड़ा बोतां,
जोतां जोता गई जमी।।
महीजातां चींचातां महिला,
ऐ दुय मरण तणां अवसाण।
राखो रे किहिंक रजपूती,
मरद हिंदू की मुसलमाण।।2।।

इसी प्रकार कवि बांकीदास आशिया ने अंग्रेजों की घातक कूटनीति को लक्षित करते हुए बांकीदास आशिया ने 'चुगल मुख चपेटिका' में अंग्रेजों में पानी में आग लगाने की चतुराई बताई है और जनता से कहा कि इनसे सावधान हो जाओ, नहीं तो यह आपको कहीं का भी नहीं छोड़ेंगे।

चुगल फिरंगी अति चतुर, विद्या तणा विनांण।
पांणी मांहै पलक में, आग लगावै आण।।3

अंग्रेजों ने भारत को कितना नुकसान पहुँचाया, उसका वर्णन भी कवि ने अपने एक गीत 'भरतपुर रा लाट रा जुद्ध रौ' में ऐतिहासिक संकेत किए हैं। मुगल बादशाह और टीपू सुल्तान के साथ अंग्रेजों की धूर्त नीति और धोखे का पर्दाफाश करते हुए कवि के ये शब्द कितने मार्मिक है-

उतन विलायत किलकता कानपुर आविया,
ममोई लंक मदरास मेळा।
यलम धुर वहण अंगरेज दाटण यळा,
भरतपुर ऊपरा हुवा भेळा।
अली मनसूर रौ वंस कीधौ असत,
रेस टीपू विजै त्रंबट रुड़िया।
लाट जनराल जरनेल करनेल लख,
जाट रै किलै जमजाळ जुड़िया।।4

राज कवि बांकीदास आशिया ने अपने गीतों में राष्ट्रीयता के स्वर विशेष रूप से मुखरित किए हैं। उन्होंने देश वासियों से कहा कि वह अपने पारस्परिक मतभेद को भुलाकर संगठित रहें और हिंदू-मुस्लिम एक होकर अंग्रेजों से मुकाबला करें।

देश भर में अंग्रेजी राज्य के बढ़ते हुए प्रभाव और उसकी विस्तारवादी नीतियों के भावी परिणाम अनुमान लगाते हुए कवि बांकीदास आशिया ने भगवान राम और कृष्ण से यह प्रार्थना की थी, कि इन गोरों का शीघ्र काला मुँह और रजवाड़ों का राज्य क्षत्रियों के अधिकार में ही रहे, अन्यथा वैदिक धर्म और गोवंश को भारी खतरा है।

सीता वाहरू आ अरज सुणजे,
रेणां खत्रियां रै राखीजै।
दध रै तळै किलकतौ दीजै,
काळौ मुख गोरां रौ कीजै।।5

भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक के सम्मान में अजमेर में एक बड़े दरबार का आयोजन किया गया, जिसमें पोलिटिकल एजेंट स्पीअर द्वारा राजस्थान के सभी नरेशों को

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

उपस्थित होने का आदेश भेजा गया। जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने उस दरबार में जाने से स्पष्ट मना कर दिया और पत्र में लिखी भाषा नरेशों के स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने वाली बताते हुए अपना रोष और आक्रोश व्यक्त किया। समारोह में मानसिंह के अलावा राजस्थान के सभी नरेश उपस्थित हुए थे। अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव के विरोध में जोधपुर नरेश के उस साहसिक कदम की राजस्थान के अनेक कवियों ने सराहना करते हुए अपनी राष्ट्रीय भावना को उजागर किया।

सारा हिंदुस्थांन रा, आंन मिल्या नृप आज।
लाठ तिणै सम लेखियों, मानसिघ महाराज।।6

क्रांतिकारी कवि शंकरदान समौर ने अंग्रेजों और राजाओं की मिलीभगत से होने वाले अत्याचारों का जन भाषा (राजस्थानी भाषा) में मार्मिक चित्रण किया है। दीनजनों की दारुण दशा को दीनबंधु से निवेदित करते हुए कवि ने अपनी वेदना व्यक्त की है। सुविधा भोगी संपन्न व्यक्तियों से आशा छोड़कर झोपड़ियों में रहने वाले सामान्य जन से ही देश के उद्धार की अपेक्षा करते हुए कवि ने ठीक ही कहा था कि मखमल की सेज पर सोने वाले लोग कांटों का दर्द क्या जाने।

सज मुखमल री सेज, नर सोवै हुय निसंक।
बै कांटां रा बेज,रती न जाणै रामजी।।7

यह गौरव का विषय है कि देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाले प्रमुख व्यक्तियों के विषय में काव्य रचना केवल राजस्थान में ही हुई। लाहौर में रणजीत सिंह के नेतृत्व में जब सिखों ने अंग्रेजों के विरुद्ध लड़कर अद्भुत शौर्य एवं देशभक्ति का परिचय दिया तो जोधपुर के कवि भारतदान आशिया ने वीरत्व के दोहा में राजस्थान के राजाओं को उसी पथ पर अग्रसर होने का कर्त्तव्य बोध हो आया था।

चडिया पाळा चौतरफ, खड़िया हळ सुरसांण।
लड़िया सिख लाहोर रा, अडिया भूज असमांण।।8

उल्लेखनीय बात यह है कि राजस्थान के कवियों ने तांत्या टोपे, झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई और अवध के बागी सिपाहियों तक के विषय में प्रेरणास्पद काव्य रचा था। इन क्रांतिकारियों का वर्णन करने वाले कवियों में जनकवि शंकरदान सामौर का नाम सर्वोपरि है।

अंग्रेजों के राज में लोगों को बोलने तक का अधिकार नहीं था। उस समय जनकवि सामौर ने उन लोगों की आवाज को बुलंद किया। और उस वाणी की आवाज उन लोगों तक पहुँचाई जो इस तरह की बातें सुनने को तैयार नहीं थे। केवल कहने और सुनने से काम नहीं चल सकता देखकर उनमें हिम्मत जगाई और खुद आगे आए, जनता को नया रास्ता दिखाया। राज और समाज की लड़ाई में खुलकर सामने आए। सत्याग्रह धरने की मंजिलें पार करते हुए शंकरदान सामौर सन 1857 के महासंग्राम तक पहुँचे। लाडनूं, सुजानगढ़ से लेकर बहल, हरियाणा तक लंबी चौड़ी पट्टी पर स्वराज कायम करने वाले शंकरदान सामौर सन अठारह सौ सत्तावन के अग्रणीय बने।

शंकरदान सामौर गोरी सत्ता के विद्रोही- विप्लव- क्रांतिकारी कवि थे। उनकी कविताओं में अंग्रेजों के खिलाफ राजस्थान के लोगों के मन में रोष विस्फोट के रूप में प्रकट हुआ। कवि के रूप में देश पर आई अंग्रेजी गुलामी के संकट से समाज को सूचित किया तो युग के कवि के रूप में इस संकट से समाज की रक्षा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस सावचेती और रक्षा की पालना में जहाँ भी कोई संकट नजर आया तो उन्होंने तागा, धागा, तैलिया, धरने और सत्याग्रह करके संघर्ष करने में आगे रहे। उनकी कविताओं के अक्षर-अक्षर में आजादी का हरण करने वाले अंग्रेजों और उनके पिट्ठू चम्मचे राजाओं के खिलाफ बगावत की।

अंग्रेजों ने अपने विरोधी डूंग जी को आगरा जेल में बंद कर दिया था तो कवि शंकरदान सामौर ने अपने साथियों के साथ मिलकर आगरा की जेल को तोड़कर डूँगजी को छुड़ाकर लाए थे-

सजे सुरंगा जान रा साज आरंग आगरा माथै।
सींघवरागरा सेखे गुवाया सबोल।
खैणंकां पींजरां माथै झडाक़ा खागां रा खेलै।
ढूंढ किल्ला नागरा बाजतां नादां ढोल।।9

आगरा की जेल तोड़ने के पश्चात नसीराबाद में अंग्रेजों की छावनी को लूट कर अंग्रेजों की इज्जत को मिट्टी में मिला दिया।

स्वतंत्रता संग्राम पूरे भारत में चल रहा था। उस समय पूरे देश में अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देने वाला महावीर तांत्या टोपे ही था। उस महावीर तात्या टोपे पर संकट आ गया तो उस समय किसी भी राजा ने उनकी सहायता नहीं की, शरण देने से मना कर दिया तो वह राजस्थान आया। राजस्थान के राजाओं ने भी तांत्या टोपे का सहयोग नही किया तो शंकरदान सामौर ने उनका सहयोग किया और उनके साथियों सहित दक्षिण तक पहुँचाया था।

जिन राजाओं ने तात्या टोपे का सहयोग नहीं किया उन को फटकार लगाते हुए कवि ने लिखा है कि -

तन मोटो मोटो तख्त, मोटो बंस गंभीर।
हुयो देस हित क्यूं हमैं,(थारो)मन छोटो हम्मीर।। 10

इसी समय महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने राजस्थान के सभी रजवाड़ों को स्वयं के हाथों परवाने (पत्र) लिखकर सचेत करते हुए कहा कि ब्रिटिश हुकूमत की कुटिलता और चालाकी से बचने का एक ही रास्ता है, अंग्रेजों से सीधा युद्ध करना पड़ेगा।

कवि सूर्यमल मिश्रण रचित वीर सतसई उस समय का ऐसा ग्रंथ है जिसे इतिहास में गौरव ग्रंथ का दर्जा मिला हुआ है। उस समय कवि ने जनमानस को जागृत करते हुए लिखा है कि मातृभूमि को स्वतंत्र करवाना प्रत्येक भारतीय का पहला धर्म है और आजादी के लिए मर मिटने की प्रत्येक नर और नारी को सीख दी है और परदेसी सत्ता को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया है-

जिण वन भूल न जावता, गेंद गवय गिडराज।
उण वन जबुंक ताखडा, उधम मंडै आज।।11

राजस्थान में आजादी की अलख जगाने वाले कवियों में केसरी सिंह बारहठ का अपना विशेष स्थान है। जहाँ अन्य कवियों ने अपनी वाणी और लेखनी से वीरता का वर्णन किया वहीं वीर केसरी सिंह बारहठ ने उस वीरता को साक्षात अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। उन्होंने अंग्रेजों की नीति को अपनी भाषा में व्यक्त कर जनमानस के साथ समकालीन क्षत्रिय नरेश और सामंतों को अपनी कविताओं और दोहों द्वारा प्रबोधित एवं प्रताड़ित कर मन में नव चेतना का संचार किया। उनके द्वारा देश को स्वतंत्र कराने का आह्वान और शंखनाद करने से अंग्रेजी हुकूमत उनसे कुपित हो गई। कवि केसरी सिंह ने ब्रिटिश हुकूमत की प्रसन्नता- अप्रसन्नता की परवाह न करते हुए स्वयं तो अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का बीड़ा उठाया ही साथ ही अपने पूरे परिवार को स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल कर लिया। इस अंग्रेजी विरोधी मुहिम

Rajshiksha Education Department

को ब्रिटिश हुकूमत ने राजद्रोह के रूप में लिया। केसरी सिंह तथा उनके परिवार पर कष्टों का पहाड़ टूट पड़ा। उनकी जागीर जब्त कर ली गई। परिवार के सदस्यों पर झूठे मुकदमे लगाकर जेलों में बंद कर दिया गया तथा अनेक प्रकार की यातनाएँ दी गई।

विपदा घन सिर पर घुटे, उठै सक्ल आधार।
ग्राम धाम सब ही लुटे, बिछुटे प्रिय परिवार।।12

कवि ने अंग्रेजों के दमन चक्र की तनिक भी परवाह नहीं की बल्कि इससे उनके अंतस में धधकती स्वतंत्रता की लौ और भी प्रचंड हो उठी। ब्रिटिश हुकूमत को भारत भूमि से अलविदा करना उनके जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य बन गया। फरवरी 1903 में तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन ने ब्रिटिश सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्यारोहण के अवसर पर प्रसिद्ध दिल्ली दरबार का आयोजन किया। इसमें शामिल होने के लिए देशभर के सारे रजवाड़ों के राजाओं के नाम फरमान जारी किया गया। उदयपुर के महाराणा फतेह सिंह भी उस दरबार में शामिल होने के लिए रवाना हो गए। तब केसरी सिंह बारहठ ने महाराणा फतेह सिंह को संबोधित करते हुए तेरह सोरठो का एक पत्र लिखकर भेजा।

पग-पग भम्यां पहाड़, धरा छांड़ राख्यों धरम।
महाराणा'र मेवाड़, हिरदै बसिया हिन्द रै।।
सिर झुकिया सहशाह, सींहासण जिण रै सामनै।
रळणों पंगत राह फाबै, किम तोने फता।।13

इन सोरठो (चैतावनी रा चुगटियां) को पढ़कर महाराणा फतेह सिंह का सोया हुआ स्वाभिमान और आत्म गौरव जाग उठा। उनमें नया जोश और ताकत आ गई। उनकी स्पेशल ट्रेन दिल्ली पहुँची पर महाराणा फतेह सिंह लॉर्ड कर्जन के दरबार में शामिल हुए बिना वापस उदयपुर लौट आए।

इसी प्रकार जन कवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' ने स्वतंत्रता के पूर्व और उसके पश्चात जनजागृति और जन से गहरे जुड़ाव के कारण उस्ताद को जनकवि की उपाधि मिली।

स्वतंत्रता से पहले उस्ताद की कविता किसानों को जगाने, जनता को आजादी का महत्व समझाने में लगी रही, वही स्वतंत्रता के पश्चात स्वराज के साथ-साथ सुराज्य की स्थापना न होने के कारण उन्होंने अपनी कलम के संघर्ष को विश्राम नहीं दिया, सरल भाषा सरल शब्दों से उन्होंने न केवल अपने कवि होने का कर्तव्य निभाया बल्कि जनचेतना को जागृत कर जनकवि की भूमिका को बखूबी निभाया।

स्वतंत्रता का पुजारी और सेनानी के रूप में उस्ताद का जीवन बाल्यावस्था से ही शुरू हो गया था। ठिकानों की नौकरी में जब कामदार बने तो उसी दिन उस्ताद के मन में राष्ट्रीय प्रेम का श्री गणेश हो गया था। कामदारी छोड़ने के पश्चात मुंबई गए वहाँ पर हार्नीमेन से मिले उन्होंने उस्ताद को स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाया, राजनीति की शिक्षा दी और अंग्रेजी भाषा सिखाते हुए यह पाठ पढ़ाया की अपनी बात को सशक्त शब्दों में प्रस्तुत करने की कला भी सिखाई। उस्ताद ने मुंबई में कॉनिकल अखबार में काम करते हुए अंग्रेजी भाषा, साहित्य और राजनीति और पत्रकारिता सीखी।

उस्ताद को यह बात भी समझ आ गई कि जनता को अपने अधिकार और कर्त्तव्य के लिए सावचेत करने की जरूरत है और जागृति का संदेश अखबारों के माध्यम से जनता तक पहुँचाया जा सकता है। इसीलिए उन्होंने पत्रकारिता शुरू की और अखबार के माध्यम से तत्कालीन समाज की सच्चाई को जनता के सामने रखा और जनता को मजबूर कर दिया कि वह अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों के लिए लड़े।

धर मजलां फरदेसी आया, लीवी चाकरी चोखी,
सूतोड़ां री गरदन बाढ़ी, सरम पगांत्यै न्हाकी।
औ रजवाड़ां रौ डौळ, साथी कोरी छोरा रोळ।
साथी हिम्मत री जै बोल,बंदा मैणत री जै बोल।।14

आजादी की लड़ाई के कारण उस्ताद को कई बार जेल जाना पड़ा। जेल उस्ताद के लिए वरदान साबित हुई। जेल में ही विदेशी विचारक विक्टर ह्यूगो, वाल्तेयर, रूसो, कारलाइन, हींगल, मार्क्स, एंजिल्स, लेनिन, गोरकी और ब्रेख्त इत्यादि प्रचंड लेखकों की पुस्तकों का बारीकी से अध्ययन किया, उनके सार को समझा। साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति और तत्वज्ञान उस्ताद की रगों में दौड़ने लगा। उस्ताद अपने साथियों को इन पुस्तकों के मर्म को समझाने लगे। उसी मर्म को, उसी ज्ञान को अपनी मातृभाषा में जनता तक पहुँचा कर जनता में जागृति लाने का और उनको अपने कर्त्तव्य का बोध कराया। उस्ताद ने उन्हीं विचारों को अपने गीतों के माध्यम से जनमानस तक पहुँचाने का कार्य किया। उस्ताद के गीत सुनकर अंग्रेजों के हृदय कांपने लगे और गली, गवांड़ और चौराहों पर उस्ताद के गीत जनमानस के कंठो में गूंजने लगे इन गीतों को सुनकर अंग्रेजों के हृदय थरथराने लगे और अंग्रेजों ने उस्ताद की पुस्तकें 'गरीबों की आवाज', 'बेकसों की आवाज' और 'इंकलाब तराने' पुस्तकों पर पाबंदी लगा दी और इंकलाब के तराने नामक पुस्तक को सरकार ने जब्त कर लिया था। फिर भी इस जनकवि की कलम कभी नहीं रुकी, वह तो अपने कर्त्तव्य का पालन आखिरी दम तक करती रही।

मेवाड़ के कवि महाराजा चतुर सिंह जी को भी लंदन की दोस्ती रास नहीं आई और उन्होंने कहा-

कीधी लन्दन दोस्ती, कई न सरयो काज।
आप पगां ऊभी हुती मानीजो महाराज।।15

इसी प्रकार नाथूदान महियारिया ने भी अपने काव्य 'वीर सतसई' में अंग्रेजों की खिलाफत की है।

पराधीन भारत हुयो, प्यालां री मनवार।
मातृ भोम परतन्त्र है, बार-बार धिक्कार।।16

इसी तरह देश के स्वतंत्रता आंदोलन के तहत जन जागरण में जहाँ उच्च कोटि के कवियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, वहीं साधारण कोटि के स्थानीय ग्रामीणों, लोकगीतकारों का योगदान भी कम नहीं रहा। वे अपनी टूटी-फूटी ग्रामीण भाषा में जनता को जगाने और उनमें चेतना भरने के लिए काव्य रचते। उन गीतों से जन-मानस पर पूरा प्रभाव पड़ा। राजस्थान में अनगिनत ऐसे लोकगीत प्रचलित थे जो उस परतंत्रता के समय अनपढ़ जनसमूह को प्रेरणा देते रहे उनमें प्रोत्साहन भरते रहे -

पाछो गोरा हट जा राज भरतपुर को रै,
गोरा हट जा भरतपुर गढ़ बांको,
किलो रै बंको, गोरा हट जा रे।।17

इस प्रकार देश पर जब-जब विदेशी ताकतों ने अपने पैर और जाल फैलाने का प्रयत्न किया तब-तब राजस्थान के कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से चेतना का शंख फूंककर जनमानस के साथ-साथ राजाओं को अपने कर्त्तव्य का बोध कराया। स्वदेश, स्वधर्म और सत्व का मिलाजुला स्वरूप ही राष्ट्रीयता का आधार होता है। देश पर जब भी संकट का आभास हुआ तो राजस्थान के कवियों ने क्षत्रियता जगाने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी।

सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष-राजस्थानी विभाग
श्री नेहरु शारदा पीठ पीजी महाविद्यालय
बीकानेर (राज.)
मो.न.: 9414582385

Rajasthan Education Department

जाग्रत करना होगा देवत्व

❒ मोना शुक्ला

जोश जुनून लिए हृदय में
हर नवयुवक के पास चलें
त्याग, तपस्या, साहस, समता
मानवीय मूल्यों के भाव पले

वर्तमान समय एक ऐतिहासिक असाधारण एवं अभूतपूर्व समय है क्योंकि जो वर्तमान की परिस्थितियाँ है वह निश्चित रूप से मानवता के इतिहास की सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियाँ हैं। यह काल एक युग संधि, एक युग विभीषिका का काल है। आज का समय एक महासमर की तरह है जहाँ एक ओर पैशाचिक प्रवृत्तियाँ उपस्थित हो रही है तो दूसरी ओर देवत्व का समर्थन करने वाली ऋषि सत्ता भी है।

पैशाचिक प्रवृत्तियों के प्रभाव में आज मानवता राष्ट्रीय युवा पीढ़ी पूरी तरह से अपने उद्देश्य को भुलाए हुए दिखाई पड़ती है। ऐसा लगता है कि धूम्रलोचन ने मनुष्य और उसके मन को स्वार्थ संकीर्णता की दौड़ में इस तरह से निरत कर दिया है कि उनको पूरा करने के लिए लोग आज सज्जनता व सद्भाव का जनाजा निकालने में संकोच नहीं करते। प्रत्येक व्यक्ति के मन में नकारात्मक शक्तियों ने महत्त्वाकांक्षाओं का अंबार लगा दिया है। उनको पूरा करने की होड़ में व्यक्ति न तो संस्कृति के संरक्षण की परवाह करता है और ना ही राष्ट्रीय हित स्मरण रखते हैं। दुर्भाग्य यह है कि ईमानदारी, विश्वसनीयता, कर्त्तव्य परायणता इतनी तेजी से गिर रहे है कि व्यक्ति के मन में ना तो समाज का संकोच है ना प्रशासन का है और ना ही उसके मन में ईश्वरीय न्याय व्यवस्था पर कोई भरोसा रह गया है।

आज की परिस्थितियाँ युवा पीढ़ी से आह्वान करती है कि इस अंधकार से लड़ने के लिए हम हमारे भीतर प्रकाश को पैदा करें। कितना भी घना अंधकार क्यों ना हो, प्रकाश की एक छोटी किरण वहाँ पहुँचती है तो वह अंधकार तिरोहित हो ही जाता है। आज की युवा पीढ़ी को राष्ट्रभक्ति की भावना को हृदय में संजोना होगा क्योंकि सभी जगह अनीति, अन्याय अवांछनीयता का साम्राज्य बिखरा दिखाई पड़ रहा है, तो यह हमें प्रेरित करता है कि इन विषम परिस्थितियों के निवारण के लिए हम प्रतिकार का प्रतीक बने। जब हम भविष्य की ओर मुख करके एक आशा एवं उत्साह का सफर प्रारंभ करते हैं तो हमारे महापुरुष जिनके त्याग, बलिदान और शहादत के कारण ही आज यह देश स्वाधीन है और हम लोग स्वतंत्रता से वर्तमान में अपने-अपने घरों में सुरक्षित रह पाते हैं। उनके अमूल्य योगदान को स्मरण किए बिना यह यात्रा एक तरह से अधूरी रह जाती है। क्योंकि वही देश बुलंदियों के सफर पर आगे बढ़ पाता है जो अपने अतीत के गौरव को, गुजरे हुए कल के बलिदानों को सम्मानित करना जानता है। आज के युवक की कलम राष्ट्र भक्ति का डंका तो जोर-जोर से पीटती है, लेकिन राष्ट्रधर्म के निर्माण को मात्र इतनी सतही बातों से जोड़ कर बैठ गए कि वह एक आडंबर तक ही सीमित रह गए हैं। हम राष्ट्रभक्ति ऊपरी तौर पर दिखाते हैं। हम राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय स्वाभिमान को अंगीकार करके तो बैठे हैं पर, हम राष्ट्रीय भाव कहीं खो गया है। ऐसे में एक प्रसुप्त राष्ट्रधर्म का जागरण आज की युवा पीढ़ी के हृदय में जाग्रत करने की सर्वोपरि आवश्यकता बन गई है। आज की युवा पीढ़ी के हृदय में यह बात बैठानी होगी कि हम सब की आंतरिक अभिलाषा एक ही है कि युवा पीढ़ी देश के लिए कुछ कर गुजरने की इच्छा लेकर युग नेतृत्व करें, आगे आकर अपने आप को आदर्शों के राजमार्ग पर चलाएं और नैतिक बौद्धिक सामाजिक क्षेत्र में प्रगतिशीलता की क्रिया प्रक्रिया अपनाएँ। स्वयं अपनी मजबूत पतवार वाली नाव पर बैठकर पार हो अन्यान्य असंख्य को पार लगाएँ, ऊँचा उठाए और ऐसा वातावरण बनाएं जिससे सर्वत्र बसंत सुषमा बिखरी दृष्टिगोचर हो। भारत की इसी शालीनता एवं सभ्यता की संस्कृति को आगे बढ़ाते हुए मानवीय एवं संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्त्तव्य है। भारत की युवा पीढ़ी का दायित्व है कि इस कर्त्तव्य के निर्वहन में हमेशा तत्पर रहें एवं भारत की गौरवशाली परंपरा को जीवित रखने में सार्थक भूमिका निभाए। सच्ची भारतीयता इसी परंपरा के परिपालन में है। सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक स्वच्छता भारत की हमेशा से नीति रही है, जिसको आत्मसात करना ही सच्ची राष्ट्रभक्ति एवं सच्चा राष्ट्रप्रेम है। युवा वर्ग को अपनी राष्ट्र भक्ति एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्य परायणता की प्रगति हमेशा दृढ़ रखनी चाहिए एवं भारत के विश्व शांति का पक्षधर होने के प्रमाण स्वरूप अपने उदाहरण को स्थापित करना चाहिए।

वैदिक भारत में बड़े-बड़े यज्ञ एवं महायज्ञ के आयोजन विश्व शांति एवं कल्याण के उद्देश्य से किए जाते रहे हैं। धर्म की जय हो। अधर्म का नाश हो। जैसी उद्घोषों का प्रयोग भारत के जनमानस की शांति प्रियता को प्रदर्शित करता है। समाज के सभी वर्गों में आपस में प्रेम एवं सद्भाव एक दूसरे के धर्म और रीति-रिवाजों संस्कृतियों के प्रति आदर भाव भारतीय संस्कृति एवं शालीनता को विश्व में स्थापित करने का प्रमुख स्तर रहा है। सत्य को यहाँ ईश्वर समझा जाता है। सत्यम शिवम सुंदरम की परंपरा यहाँ आदिकाल से रही है। भारत का आधुनिक इतिहास भी सत्य एवं अहिंसा के संबल को ही सर्वोपरि मानते हुए निर्मित हुआ है। सत्य और अहिंसा के बल पर ही भारत को स्वतंत्र कराने में सफलता हासिल की गई। अन्तर्राष्ट्रीय हिंसा एवं आतंकवाद का हमने सदा से विरोध किया है। आज की युवा पीढ़ी को आगे चलकर देश का नेतृत्व करना है। इसलिए अपने भारतवर्ष के इतिहास से सबक लेना चाहिए। क्योंकि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भी भारतीय नेतृत्व ने किसी भी राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय समझौतों को लागू करने में शांति एवं समझौते के सिद्धान्तों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। आज की युवा पीढ़ी को भी घर परिवार, गली, चौराहा समाज सभी जगह सभ्यता, शालीनता एवं संस्कृति का परिचय देना चाहिए। विद्यालयों, महाविद्यालयों की गरिमा को बनाए रखना चाहिए। क्योंकि यही सब उनके भविष्य के निर्माण की सीढ़ियाँ हैं। युवा पीढ़ी जितनी शांत, धीर, वीर एवं गंभीर होगी राष्ट्र उतना ही मजबूत होगा। युवाओं को अपने निहित स्वार्थ एवं अहंकार से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के कार्यों में भागीदारी करनी चाहिए। जब भी राष्ट्रवाद की बात आती है तो हमारे मन मंदिर में सर्वप्रथम स्वामी विवेकानंद का स्मरण आता है। 15 जनवरी, 1897 को जब स्वामी

विवेकानंद कोलंबो पहुँचे और उनका भव्य स्वागत किया गया तो उनसे वहाँ के एक नागरिक द्वारा प्रश्न किया गया कि आप इतने पाश्चात्य देशों में भ्रमण कर चुके हैं, क्या आपने भी वहाँ से कुछ सीखा? तब उनका उत्तर था कि विदेश जाने का जो सबसे बड़ा लाभ मुझे हुआ है, वह यह हुआ है कि पहले जिन बातों को मैं भावना के आवेश में आकर सत्य मान लिया करता था अब उनको प्रमाण पूर्वक सत्य मानता हूँ क्योंकि वह यह बात हृदय से स्वीकार कर चुके थे कि भारत देश ही वह देश है, जहाँ त्याग, दया, करुणा, मानवता आदि प्रवृत्तियों से लेकर आध्यात्मिक अनुसंधान का सर्वाधिक विकास हुआ है। यही वह भारत भूमि है जहाँ आज नहीं तो कल से ज्ञान की वह धारा फिर से बहेगी जो संपूर्ण विश्व को अपने सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान से परिपूर्ण करेगी और संपूर्ण विश्व उसके लिए भारत का ऋणी होगा। आज विश्व में अंधकार घना है, और लोगों की सोच एक व्यापक परिवर्तन की गुहार लगाती हुई दिखाई पड़ती है। ऐसे में हमें उस संस्कृति का अग्रदूत होने के नाते जिसके पुरोधा वे राष्ट्रभक्त हैं जिनके त्याग, बलिदान, तपस्या के कारण पूर्ण रूप से स्वतंत्र हैं। हमें कुछ ऐसे प्रयास करने चाहिए, राष्ट्र को जिनकी बहुत आवश्यकता है। समस्या का नहीं समाधान का हिस्सा बने लोगों की गलतियाँ निकालने के स्थान पर यह सोचना जरूरी है कि हमने अच्छा क्या किया है। यह सोचना जरूरी है कि जिस समस्या के विषय में हम बातें कर रहे हैं, उस समस्या के समाधान के लिए हमने स्वयं क्या किया, थोड़ा करें पर कुछ तो करें। आज की युवा पीढ़ी को इस बात को हृदयंगम करना चाहिए कि भारतीय संस्कृति जिस उत्कृष्टता की बात करती है, यह उसे ही अर्जित करने का एक महत्त्वपूर्ण आधार कहा जा सकता है कि थोड़ा करें पर कुछ तो करें कल की सोच कर वर्तमान ना बिगाड़े। युवा तो वही है, जो आज की सोचते हैं। आज की योजना बनाते हैं और आज ही उस पर अमल करते हैं। वर्तमान समय का यह महत्त्वपूर्ण सूत्र है। भारतीय संस्कृति हमें यही सूत्र प्रदान करती है और करती रहेगी। भारतीय संस्कृति जिस आध्यात्मिक उत्कृष्टता की बात करती है, उसकी प्राप्ति इन सूत्रों को अपने जीवन में अपनाकर हम अनेकानेक राष्ट्रभक्त उत्पन्न कर सकते हैं। आज के युवा के मन में राष्ट्रभक्ति की भावना तभी पैदा हो सकती है जबकि वैभव की तुलना में व्यक्तित्व का संपत्ति की तुलना में संस्कृति का और संपदा की तुलना में संस्कार का मूल्य कई गुना ज्यादा होता है। यह बात अवश्य स्वीकारे। जब तक व्यक्ति के व्यक्तित्व का रूपांतरण नहीं हो पाता। जब तक समाज का परिवर्तन संभव नहीं है। धरती पर स्वर्ग का वातावरण आता ही तब है, जब अपने भीतर के देवता का जागरण होता है। भारत के नव युवकों को संगठित, एकत्र और सशक्त होने की परम आवश्यकता है। आज के नवयुवकों जाग जाओ। आँधी तूफान में उड़ते-फिरते पत्तों की तरह भटक कर एक निरुद्देश्य जीवन नहीं जीना है, वरन स्वयं को जागरूक रखते हुए बाकी सोते हुए को जगाने की महती भूमिका का निर्वहन करना है। और यही है हमारे जीवन की सार्थकता। नवयुवकों वर्तमान समय मानवता के इतिहास का सबसे दुर्लभ समय है। एक बहुत बड़े समूह की स्वार्थपरता भरी नीतियों ने आज मानवता को बड़े विकराल समय का साक्षी बना दिया है।

यह समय लोकप्रभा को पलटने का है, जनमानस को बदलने का है। अनेक व्यक्तियों के गलत दिशा में चल पड़ने से वह सही नहीं बन जाती है। आदर्शों व मूल्यों की पहचान भीड़ से नहीं गुणवत्ता से होती है। ज्यादा लोग तो रावण, कंस, हिटलर के पीछे भी खड़े थे पर उससे उनके द्वारा चयनित पथ सही नहीं कहलाते। आज इंसानों की भीड़ गलत दिशा में चल रही है। उसे सही दिशा दिखाने की आवश्यकता है दुष्ट चिंतन, दुष्ट कृतियों का आधार बनते हैं और कुकर्म, विषम परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। श्रम का दान, समय का दान, अंश का दान तो शाश्वत अपेक्षित है ही। यदि ऐसे समय में हमारे प्राणों की आहुति भी इस विशेष उद्देश्य को अर्थात राष्ट्र भक्त बनने के लिए देनी पड़े तो उससे हमें संकोच नहीं करना चाहिए। यह समय झुकने का नहीं है। युद्ध के मुहाने पर यदि अर्जुन ही हथियार डाल देंगे तो महाभारत कौन लड़ेगा? इस विषम बेला में यदि आज का युवा ही हाथ पसार कर बैठ गया तो संकुचित हृदय वाले अन्य जनों से क्या आशा की जा सकती है, प्रतिकार का प्रतीक बनना है। हमें इस समय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की पंक्तियाँ जो राष्ट्र भावना से ओतप्रोत और बलिदानियों के लिए हृदय से श्रद्धांजलि प्रस्तुत करती है।

कलम आज उनकी जय बोल।
जला अस्थियाँ बारी-बारी
छिटकिया जिनने चिंगारी।
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर लिए बिना गर्दन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल।
जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एक किनारे
जल-जलकर बुझ गए
किसी दिन मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल
कलम आज उनकी जय बोल।

वरिष्ठ व्याख्याता
डाइट झालरापाटन, झालावाड़ (राज.)

विशेष सूचना

हमारे विद्यालयों में समय-समय पर शिक्षक-शिक्षार्थियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नवाचार किए जाते हैं। शिक्षक-शिक्षार्थियों द्वारा मौलिक चिंतन करते हुए बहुविध रचनात्मक व सृजनात्मक कार्य भी अक्सर किए जाते हैं। इसी प्रकार समय-समय पर माननीय मंत्री एवं विधायक गण व राज्य स्तरीय अधिकारियों द्वारा संबलन हेतु विद्यालयों का अवलोकन किया जाता है। विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों में शिक्षार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए उपर्युक्त वर्णित विशिष्ट जन को विद्यालयों में आमंत्रित किया जाता है। निस्संदेह सराहनीय प्रयासों की जानकारी शिविरा के माध्यम से सभी तक पहुँचनी चाहिए। इससे अन्य विद्यालयों को और बेहतर करने का विचार मिलेगा। अतः इस संबंध में समस्त पाठक वृन्द से आग्रह है कि कार्यक्रम की रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स एवं बाल शिविरा हेतु स्वरचित रचनाएँ ड्राईंग, पेंटिंग प्रेषित करें।

इसके साथ-साथ शिविरा पठन के पश्चात प्रतिक्रिया एवं सुझाव प्रतिमाह प्रकाशित की जाने वाली शिविरा पत्रिका में प्रत्येक माह की 10 तारीख तक जरिए मेल प्रेषित करें। रिपोर्ट व आलेख की शब्द सीमा 1500 से 2000 तक सीमित रखें। शैक्षिक चिंतन के साथ-साथ कुछ विषय यथा- प्लास्टिक बैग से मुक्ति, क्षमा का महत्त्व, जनसंख्या वृद्धि : लाभ-हानि, प्रकृति संरक्षण, मैत्री और बचपन, संस्कृत का महत्त्व, शतरंज की कहानी, अक्षय ऊर्जा, राष्ट्रीय लघु उद्योगों पर जानकारी आदि पर भी रचनाएँ आमंत्रित है।

-वरिष्ठ संपादक

Rajasthan Education Department

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता : दिशा और दृष्टि

❒ बी. एल. आच्छा

आजादी के बाद उच्च शिक्षा के विस्तार की संकल्पना अनिवार्य थी। संवैधानिक प्रतिज्ञाओं के अनुकूल नागरिकता के विकास के लिए आज भी जरूरी है परंतु विकास की राष्ट्रीय जरूरतों और वैश्विक मानदंडों को देखते हुए अब गुणवत्तायुक्त शिक्षा अपरिहार्य होती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार, पेटेंट, बौद्धिक संपदा अधिकार, शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीय मानक, भूमंडलीकरण और विश्व बाजार की प्रतियोगिताओं को देखते हुए ज्ञान के उन्नयन और कौशल विकास की बड़ी जरूरत है। भारत के गुरुत्व और विश्व शक्ति बनने में ज्ञान की शक्ति सकारात्मक है और सूचना क्रांति के संदर्भ में यह परिलक्षित भी हुआ है। लोकतांत्रिक एवं पंथनिरपेक्ष संवैधानिक व्यवस्थाओं के बावजूद हमारी ज्ञान शक्ति और उत्पादन के संसाधन बढ़े हैं पर अंतर्राष्ट्रीय सूची में हमारा स्थान अभी छलाँग नहीं लगा पा रहा है।

यह भी सही है कि भूमंडलीकरण के दौर में हम नए परिदृश्य में ढलने और दौड़ने को मजबूर हैं। हमें अपनी राष्ट्रीय आवश्यकताओं, संसाधनों और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान को भी संजोए रखना होगा। अक्सर हम पश्चिमी देशों की शिक्षण पद्धति, संस्थानों की संरचना, परीक्षा प्रणाली और विषय सामग्री को अपनी शैक्षणिक प्रक्रिया में सर्वोच्च सम्मान देते आए हैं। हमें भारतीय शिक्षण पद्धति के सांस्कृतिक मूल्यों, राष्ट्रीय हितों और सामाजिक अपेक्षाओं की विशेषताएँ बरकरार रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दौड़ लगानी होगी। अन्यथा केवल भौतिक विकास में दौड़कर टूटते समाज के मूल्य हमारी सांस्कृतिक मूल्यसंपदा से छिटक जाएँगे। भावात्मक या मूल्यपरक धारणा को ही ध्वस्त कर देंगे, जिससे आज भी पूरा देश भावात्मक एकता का उदाहरण बना हुआ है।

गुणवत्ता का केंद्र मूलतः शिक्षक है। वह शिक्षक आज भौतिकतावादी सामाजिक प्रगति का अंग है परंतु भारतीय समाज में शिक्षा की अवधारणा विशिष्ट रही है। वह अधिकार के कारण नहीं, सामाजिक समानता की अवधारणा के कारण वह पूज्य रहा है। उसके साथ ऐसे मूल्य जुड़े रहे हैं, वैसे ही, जो संतानों के साथ उनके अभिभावकों से जुड़े रहते हैं। आजकल तो गुरुकुलीय संस्कार सपने की चीज है। परंतु अध्ययन-अध्यापन, युवा पीढ़ी की जरूरतों और उनकी आकांक्षाओं की पड़ताल, रोजगार के अनुरूप कौशल का विकास, जीवन मूल्यों से विद्यार्थी के संतुलित जीवन और भाव वृत्तियों का विकास आज की जरूरत है, जिसे शिक्षक भी नहीं दे पाता और विद्यार्थी भी उतने आकांक्षी नहीं है। बल्कि गुरु जो दे रहा है, विद्यार्थी उसे उतना सार्थक नहीं पाते और शिक्षक भी अनुभव करता है कि उसके द्वारा पढ़ाए गए पाठ्यक्रम उसके रोजगार और मूल्यपरक जीवन के चितेरे नहीं है। सच तो यह है कि शिक्षक ज्वलंत है ,तो विद्यार्थियों के भीतर भी वैसी ही ज्वाला पैदा कर सकता है।

शिक्षा और शिक्षक के निरंतर उन्नयन एवं शोधपरक या कौशल विकास के लिए उत्प्रेरक शोधकार्य के लिए वेतन वृद्धियाँ दी जाती है। परंतु सवाल यह है इस शोध के सामाजिक, औद्योगिक, प्रशासनिक, व्यावहारिक, कॉर्पोरेट जगत, अपराध नियंत्रण या निम्न समाज के व्यापक हितकारी लाभ के सोच अनुपयोगी होकर पड़े रह जाते हैं। यह भी संभव है कि केवल कॅरियर की आकांक्षा में किए गए शोध कार्य बुझे-बुझे से हो या केवल शिक्षक की पदोन्नति के लक्ष्यों की पूर्ति से लक्षित हो। आखिर इन शोध कार्यों के लिए जो राष्ट्रीय धन लगा है, उसकी उपयोगिता को फलित तो होना ही चाहिए। पश्चिमी देशों के ढाँचे का अनुकरण तो किया जाता है, हमें यदि विचार करना चाहिए उन देशों ने तात्कालिक समस्याओं को निपटाने के लिए अपने शोध संपदा को किस तरह राष्ट्रीय हित में लगाया है। जापान में सुनामी आई तो तत्काल उससे बचाव की तकनीक में जापान के वैज्ञानिक एवं विश्वविद्यालय जुट गए। भारत में आयात-निर्यात के बढ़ते हुए घाटे को देखते हुए हमारी प्रौद्योगिकी उत्पादन, सौर ऊर्जा, कराधान, विश्व बाजार की तलाश, सैन्य उत्पादन, अधोसंरचना आदि तकनीक आदि के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों और औद्योगिक संस्थानों से गहरे तालमेल की गहरी जरूरत है। हमारी खेती को उत्पादक और लाभकारी बनाने के लिए जमीनी स्तर पर उन प्रशिक्षकों की जरूरत है, जिनसे विश्वविद्यालयों का ज्ञान और हमारे सेमिनारों के निष्कर्ष व्यावहारिक तौर पर निचले ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचे। शोधकार्य ढाई सौ पृष्ठ में कैद होकर अनुपयोगी बने रहना अनुत्पादक है। उसका प्रभावी एवं विकासात्मक उपयोग जरूरी है। वह केवल पदोन्नति की राह में साधक लक्षण मात्र बनकर रह जाए एवं अकादमिक उपलब्धियों की सांख्यिकी को बढ़ाता जाए, यह निरर्थक है। उच्च शिक्षा के सारे सोच हरितक्रांति, औद्योगिक संरचना, उत्पादन, सामाजिक बदलाव, मूल्यपरक समाज की रचना, अपराध नियंत्रण के कारगर उपाय और हमारी सांस्कृतिक संपदा के संरक्षण तथा विकास में सहकारी बनाना होगा। यह सही है अब विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों में कैंपस होने लगे हैं। यह गुणवत्ता की दृष्टि से पहली सीढ़ी है , पर आज भी हमारे उद्योग कौशल विकास के अभाव में योग्य हाथ और मस्तिष्क वाले युवकों की तलाश कर रहे हैं। समाज भी सामाजिक रूपांतरण की योग्यता वाले प्रभावी शिक्षकों, उनके सहायकों की आकांक्षा को संजोए हुए हैं।

शिक्षा ही जीवन की समग्रता का व्यावहारिक उपक्रम है। इन दिनों विद्यार्थियों को ज्ञान या सूचना का भंडार बनाया जा रहा है। पर हमारे बड़े-बड़े तकनीकी संस्थान भी अनुभव करने लगे हैं कि तकनीकी शिक्षा के साथ कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक सन्निवेश और भाषाई व्यवहार का अपनत्वयुक्त कौशल भी जरूरी है। केवल इंजीनियर या प्रबंधक बनाकर हम उसे वैसी जीवनी शक्ति नहीं दे पाते, जो उसके जीवन को समरस और समाज तथा संस्कृति के प्रति उत्तरदायी बना सके। सच तो यह है कि कला, मानविकी और समाजविज्ञान संकायों में वैज्ञानिक विवेक का समावेश और विज्ञान-तकनीकी वाले संस्थानों में समाज-संस्कृतिपरक विवेक का समावेश न केवल हमारे समाज को, बल्कि विद्यार्थी को जीवन जीने की योग्यता, ताकत और उम्र की लंबाई दे पाएगा। इसीलिए इस भावात्मक या स्पिरिचुअल कंटेंट की भी जरूरत है।

शिक्षा में लगातार प्रयोगवाद भले ही आधुनिकता की निशानी हो पर यूजीसी के पूर्व

Rajasthan Education Department

उपाध्यक्ष मुनीस रजा का यह कथन ठीक है कि अब हमें नए प्रयोगों के बजाय शिक्षा को स्ट्रीमलाइन करने की जरूरत है। प्रयोग तो अनवरत दृष्टि है, पर उन्हें लागू करने की गति और उसके फलितार्थों के लिए कुछ संस्थानों को ही प्रायोगिक तौर पर क्रियाशील करना चाहिए। हमारा सारा नवाचार यदि हमारे संसाधनों की भविष्य में उपलब्धता, जलवायु, संवैधानिक प्रकृति, सांस्कृतिक अनुरूपता और सामाजिक राष्ट्रीय आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में हो। कई बार योजनाएँ लागू तो हो जाती हैं, पर बाद में संसाधनों के अभाव में ध्वस्त होती जाती हैं। यदि हम अपने ही महाविद्यालय-विश्वविद्यालय से सृजन की अवधारणा का प्रारंभ करें तो प्राथमिक तौर पर अधोसंरचना विकास के साथ हरियाली का प्राकृतिक वातावरण या वनस्पति उद्यानों का रखरखाव न केवल शांति निकेतन की छवि साकार करेगा बल्कि वानस्पतिक विविधता एवं रक्षण-विधियों से भी समृद्ध होगा। रूफवाटर हार्वेस्टिंग की प्रक्रिया से हम आस-पास के लिए उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे, जिससे कस्बाई और नगर संरचना या नदी-नालों के आस-पास हरियाली का विकास कर राष्ट्रीय संपदा की वृद्धि करेंगे। यदि ये बातें प्रशिक्षणात्मक तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को दी जाती है, तो हमारे सारे प्रयोग जमीनी और ग्रामीण स्तर पर कामयाब होंगे। हरियाली तो उदाहरण मात्र है। सौर ऊर्जा, जल संचयन, वानस्पतिक विविधता एवं वैज्ञानिक विधियों का निचले स्तर पर विकास होगा। शिक्षा के विस्तारपरक एवं जमीनी स्तर पर प्रायोगिक दृष्टि का लाभ मिलेगा। समाज, अर्थ, अपराध, साहित्य, भाषा, बोली, व्यक्तित्व निर्माण, कंप्यूटर शिक्षा आदि क्षेत्रों में भी ऐसे प्रायोगिक उन्नयन सामाजिक विवेकशीलता का विस्तार करेंगे। गैर विज्ञानपरक विषयों में पुरातत्व, पर्यटन, लोकसाहित्य की संपदा को संजोने और सामाजिक जीवन का अंग बनाकर समाज और क्षेत्र की भौतिक विशेषताओं को सुरक्षित रखा जा सकता है।

इन दिनों प्रत्येक विषय में सेमिनारों और अब वेबिनारों का आयोजन राष्ट्रीय-राज्य स्तर पर किया जाता है। शोधार्थी के शोध पत्रों के स्तर उनके प्रकाशन एवं निष्कर्षों पर ध्यान दिए जाने पर न केवल शोध का स्तर बढ़ेगा, बल्कि शोध की उपयोगिता भी परिणामदायिनी होगी। शोधपत्रों की सांख्यिकी और महज सहभागिता जब महत्त्वपूर्ण हो जाती है, तो उसके कंटेंट का परिणामी होना संदेहास्पद हो जाता है। इन शोध पत्रों के स्तर और प्रकाशन के लिए कोई निकाय होना चाहिए और उनके मूल्यांकन निष्कर्षों के उपयोग पर भी क्रियान्वयन के दृष्टिकोण शासन के पास जाना चाहिए। इससे शोध निष्कर्ष और प्रशासनिक सोच में संतुलन आएगा।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हमारी गति बढ़ा रही है और ज्ञान की सुलभता में सहयोगी बन रही है। अब तक हम मानते थे कि शिक्षक ज्ञान का संचयी केंद्र है और उसका ज्ञान विद्यार्थियों में पहुँचा देना ही उसका मूलकर्म है पर अब शिक्षक हमारा केंद्र ना होकर विद्यार्थी ही हमारा केंद्र है। उसका रूपांतरण और उसकी विवेकशीलता का अभिव्यक्ति में विकास जरूरी है। इस हेतु नेट पावरपॉइंट प्रस्तुतियाँ, स्मार्ट क्लास, ई-लायब्रेरी, सेमिनार-वेबीनार जैसे आयोजन सहायक हो रहे हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि शिक्षक की उपयोगिता घट रही है और ई-लर्निंग अपनेआप में सफल शिक्षा है। शिक्षक तो आत्मा है। पर उसकी आत्मा और उसके ज्ञान से जो ट्रांसफॉर्मेशन होता है, उसकी परिणति छात्र में दिखनी चाहिए। तकनीक ने उसके लिए विश्वव्यापी अवसर दिए हैं, कार्यक्षेत्र का विस्तार किया है। उन सब का उत्प्रेरक भी शिक्षक ही है और हितग्राही छात्र पर सवाल यह है कि शिक्षक कितना ज्ञान समृद्ध है? यह भी सवाल है कि वह अपने ज्ञान के ढीले-ढाले विद्यार्थी को कैसे संक्रांत और कार्योन्मुख बना सकता है। कैसे उसके भीतर क्रियाशील विवेक और मूल्यपरक नागरिकता का विकास कर सकता है।

नया विश्व जितना ज्ञान का है, उतना ही पैकेजिंग का है। इसलिए वस्तु के साथ सजावट, ज्ञान के साथ मूल्यपरकता, कंटेंट के साथ फॉर्म, अनुभव के साथ अभिव्यंजना के विकास को ध्येय बनाना चाहिए। यह पेल- पर्सनेलिटी के स्थान पर लाइव- पर्सनेलिटी तभी प्रभावी हो सकती है। इस हेतु भाषा के व्यापार बहुत कारगर हो सकते हैं। यह अलग बात है कि इन दिनों भाषा के प्रति बड़ा उदासीन दृष्टिकोण है। जब विज्ञापन का बाजार, औद्योगिक बस्तियाँ, विश्वस्तरीय सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, भाषा के खेल अपना विस्तार कर रहे हैं। पाठ्यक्रमों में भी संधि-समास से हटकर इस जीवंत भाषा, बाजार भाषा, पारिभाषिक शब्दावली आदि के व्यावहारिक अनुप्रयोगों से संबद्ध पाठ्यक्रम सामग्री का विकास करना चाहिए, जो भाव-प्रणवता, मूल्यपरकता एवं नए प्रयोगों को टटोलती हो।

हमारे पाठ्यक्रमों की संरचना की दुर्बलता यह भी है कि प्राथमिक शिक्षा, स्कूली शिक्षा, स्नातक शिक्षा एवं स्नातकोत्तर शिक्षा आपस में संबद्ध न होकर विभाजित हैं। परिणाम यह होता है कि कई विषयों के पाठ्यक्रमों में पुनरावृत्ति होती रहती है। न केवल इकाइयों के स्तर पर बल्कि पाठों के स्तर पर भी। यद्यपि यह तर्क दिया जा सकता है कि स्कूली स्तर पर एक ही पाठ के अर्थबोध और महाविद्यालय स्तर पर अर्थ ग्रहण की चिंता में अंतर है। परंतु अनेक पुनरावृत्तियों के स्थान पर हम नए उच्चतर पाठ्यक्रमों को जोड़ सकते हैं। विकास या नए ज्ञान के संयोजन के लिए जगह बना सकते हैं। हिंदी को ही लीजिए। विदेशी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम हमारी तुलना में अधिक नवीन और समसामयिक हैं। यदि अर्थशास्त्र में भी हम अपने नए बाजार और प्रवृत्तियों को जोड़कर उसे अद्यतन करने के उपाय करें, तो यह विद्यार्थी के लिए आकर्षण का विषय रहेगा और संस्थानों के लिए भी। पाठ्यक्रम भी दो-तीन दिन में बनने और स्वीकृत होने वाला मामला नहीं है। उसे भी बीज बनाने वाली नर्सरियों की तरह अन्वेषी बनाना होगा। यह समय केवल स्मरणशील ज्ञान के विकास का नहीं। परीक्षाओं में महज ज्ञान की स्मृति के परीक्षण का नहीं। अपितु विश्लेषणात्मकता, नई तकनीक, नया विचार, नई संकल्पना का है, जो संसाधनों का अधिकतम उपयोग समाज हित में कर सके। न्यूनतम राष्ट्रीय संपदा के अधिकतम उपयोग और युवाओं के लिए रोजगार सृजन के रूप में हो सके। सामाजिक जुड़ाव और मूल्यपरक समाज की रचना में हो सके। यह समय नकारात्मक सोच का नहीं है बल्कि अपने समय की सार्थक आलोचना से उपजे निष्कर्षों के साथ सही दिशा और लक्ष्यों को तलाशने का है।

फ्लैट नं-701, टॉवर-27, स्टीफेंशन रोड
(बिन्नी मिल्स) पेरंबूर, चेन्नई (तमिलनाडु)-600012
मो.न.: 9425083335

Rajasthan Education Department

रेडक्रॉस दिवस विशेष

रेडक्रॉस स्थापना दिवस की रुचिकर कहानी

❒ देवेन्द्र कुमार शर्मा

प्रत्येक वर्ष 8 मई को विश्व रेडक्रॉस दिवस मनाया जाता है। इस दिन का विशेष महत्त्व है। जरूरतमंद एवं पीड़ित व्यक्तियों के लिए समर्पित विश्व विख्यात रेडक्रॉस संस्था के जन्मदाता स्विटजरलैंड निवासी, सर हेनरी ड्यूनॉट थे। इनका जन्म 8 मई, 1828 को स्विटजरलैंड के जेनेवा में हुआ था। इनके जन्म दिवस पर विश्व भर में 08 मई को विश्व रेडक्रॉस दिवस मनाया जाता है। सर हेनरी ड्यूनॉट व्यापार के लिए इटली गए। रात में विश्राम के लिए सेल्फेरिनों की एक धर्मशाला में ठहरे। रात के सन्नाटे में उन्हें रोने, चिल्लाने और कराहने की आवाजें सुनाई दी। तब वे उस स्थान पर जाकर देखते हैं कि आस्ट्रिया व फ्रांस के घायल सैनिक तड़प रहे थे। सर हेनरी ने वहाँ के स्थानीय लोगों को साथ लेकर उन घायल सैनिकों की चिकित्सा सेवा की। जिन्हें दर्द में आराम मिला। उस सकारात्मक परिणाम को देखकर उनके मन में एक ऐसा संगठन बनाने की बात सूझी। सर्वप्रथम सन् 1864 में रेडक्रॉस की स्थापना की गई जिसका चिह्न सफेद पृष्ठभूमि पर लाल क्रॉस तय किया गया। लगभग 185 देशों ने अपने देश में रेडक्रॉस की स्थापना की। भारत वर्ष में रेडक्रॉस की स्थापना सन् 1920 में एक स्वतन्त्र संस्था के रूप में पार्लियामेंट एक्ट-15 के तहत हुई। रेडक्रॉस को 4 बार (03 बार रेडक्रॉस को एवं 01 बार सर हेनरी ड्यूनॉट को) नोबल शांति पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। रेडक्रॉस अन्तर्राष्ट्रीय मानव सेवी संगठन हैं। जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा कानूनी मान्यता प्राप्त हैं। जिनेवा समझौता 1949 के अनुसार घायल सैनिकों, युद्धबंदियों, शरणार्थियों, खोए व्यक्तियों, भूकम्प, महामारी, अकाल, भूमिगत, बारूदी सुरंग, बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

विश्व के 185 देशों में रेडक्रॉस की शाखाएँ हैं जो पीड़ित व जरूरतमंदों की सहायतार्थ कार्य के लिए समर्पित है। देश में बाढ़, भूकम्प, बाहरी आक्रमण, साम्प्रदायिक दंगे हो या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा हो, नि:स्वार्थ भावना से रेडक्रॉस के स्वयंसेवक दिन-रात कार्य करते हैं और इसके साथ ही चिकित्सा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी रेडक्रॉस ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। जैसे-प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण, स्वास्थ्य परीक्षण, प्रसव, नसबन्दी कैम्पों का आयोजन, स्वच्छता अभियान, चिकित्सा शिविरों का आयोजन, ब्लड बैंक का

संचालन, रक्तदान शिविरों का आयोजन एवं स्वास्थ्य सेवा के प्रशिक्षणों का संचालन भी किया जाता है।

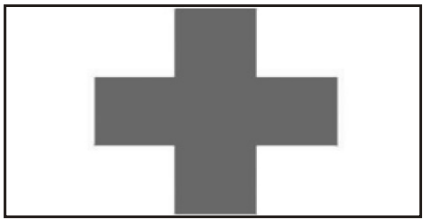

भारत के राष्ट्रपति भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी के अध्यक्ष होते हैं। राज्य में राज्यपाल एवं जिले में कलेक्टर, अध्यक्ष हैं। रेडक्रॉस की सिस्टर कन्सर्न सेन्ट जॉन एम्बूलेस एसोसिएशन संस्था है जो कि प्राथमिक उपचार के कार्यों का संचालन करती है। रेडक्रॉस का राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली में है और राजस्थान राज्य का मुख्यालय साँगानेरी गेट जयपुर में हैं। भारत वर्ष का कोई भी व्यक्ति जो सामाजिक सेवा कार्यों में रुचि रखता है वह पीड़ित मानव को समर्पित रेडक्रॉस से जुड़कर सेवा कार्य कर सकता है और अपनी सेवाएँ रेडक्रॉस को दे सकता है।

हम सभी जानते हैं कि किसी भी संगठन को चलाने के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है। यह संगठन आर्थिक सहयोग द्वारा ही संचालित होता है। इस सहयोग में स्कूल के बच्चों सहित कोई भी व्यक्ति सहायता कर सकता है। आपका आर्थिक सहयोग पीड़ित मानव की सेवार्थ कार्यों में व्यय किया जाता है। रेडक्रॉस द्वारा चयनित जिला मुख्यालयों पर प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण चलाए जाते हैं। यह प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने आस-पास अथवा किसी भी जगह दुर्घटना हो जाने पर मानव के अमूल्य जीवन को बचाया जा सकता है। प्रशिक्षण के पश्चात रेडक्रॉस दिल्ली मुख्यालय से एक फोटो युक्त प्रमाण-पत्र जारी किया जाता है। यह प्रमाण-पत्र पुलिस में, राजस्थान रोडवेज में परिचालक के लिए, खनिज की खानों के लाइसेंस में एवं वॉयलर्स के लिए अनिवार्य होता है। जो सरकारी नौकरी के लिए काम आता है।

रेडक्रॉस के सिद्धान्त

- मानवता
- तटस्थता
- निष्पक्षता
- स्वतंत्रता
- स्वैच्छिक सेवा
- एकता
- सार्वभौमिकता

रेडक्रॉस के तीन प्रमुख अंग है:-

1. इन्टरनेशनल कमेटी ऑफ रेडक्रॉस।
2. इन्टरनेशनल फैडरेशन-रेडक्रॉस।
3. नेशनल रेडक्रॉस एवं रेडक्रिसेंट सोसायटीज

रेडक्रॉस के उद्देश्य

1. स्वास्थ्य की उन्नति एवं मानव जीवन सुरक्षा।
2. पीड़ितों की आपातकालीन सहायता।
3. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना/मैत्री रेडक्रॉस की सदस्यता ग्रहण कर पीड़ितों की उदारता से मदद करें और मानवता से शांति के अनूठे प्रयासों में अपनी भूमिका निभाना।

युवा / जूनियर रेडक्रॉस

कनाडा के क्यूबिक प्रान्त में सन् 1914 में कुछ बच्चों ने सैनिकों के लिए मरहम पट्टी और दूसरी उपयोगी वस्तुओं के उपहार पैकेट बनाकर उन्हें भिजवाए। इसका प्रचार अन्य प्रान्तों में भी हुआ। सन् 1915 में अमेरिका के विद्यार्थियों ने सर्वाधिक सहायता जुटाकर सैनिकों तथा शरणार्थी बच्चों के लिए चिकित्सा का सामान, कपड़े, कम्बल व अन्य उपयोगी वस्तुओं का प्रबंध किया। इसके बाद यूरोप तथा सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रचार-प्रसार हुआ। सन् 1920 में अन्तर्राष्ट्रीय अभियान का रूप ले चुके जूनियर रेडक्रॉस का विस्तार आज सम्पूर्ण विश्व में हो चुका है। इसके सदस्यों की संख्या केवल भारत में ही 1 करोड़ से अधिक है। बहुत से देशों मे तो जूनियर रेडक्रॉस एक अति उत्तम युवा संस्था बन चुकी है। भारत के संन्दर्भ में जूनियर रेडक्रॉस का गठन सन् 1925 में एवं प्रान्तीय स्तर पर, इसका गठन सर्वप्रथम 1926 पंजाब प्रान्त में हुआ था। पंजाब प्रान्त के युवाओं ने रेडक्रॉस संगठन के आदर्शो का इतना प्रभाव पड़ा कि शीघ्र ही भारत के अन्य राज्यों में इसका गठन हो

गया और शिक्षण संस्थाओं ने युवा/जूनियर रेडक्रॉस अभियान को अति उत्साहपूर्वक स्वीकार किया।

सेंट जॉन एम्बूलेंस–प्राथमिक उपचार का विचार व इसके जनक जर्मन के डॉ. एस. मार्क 1823–1908 रहे हैं। प्रथम सहायता, आकस्मिक दुर्घटनाग्रस्त को तत्काल रक्षा के लिए गंभीर स्थिति और अधिक बिगड़ने से रोकने हेतु अमूल्य जीवन की रक्षा, जब तक कि उचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध न हो जाए, के उद्देश्य से होता है। प्राथमिक उपचार सीखना और उसका प्रचार–प्रसार करना एक अच्छे नागरिक का कर्त्तव्य ही नहीं बल्कि एक पुनीत कार्य भी है। ऑर्डर ऑफ सेंट जॉन के चिकित्सालय संबंधित कार्य को चलाने के लिए 1877 में इंग्लैंड में सेंट जॉन एम्बुलेंस एसोसिएशन की स्थापना हुई जिसमें ब्रिटिश रेडक्रॉस के अध्यक्षों की भूमिका अहम रही थी।

भारत के संन्दर्भ में सेंट जॉन, रेडक्रॉस की सिस्टर ब्रांच हैं। इसके अन्तर्गत विद्यालय/महाविद्यालय के छात्रों, अध्यापकों, खान-कर्मियों, बस परिचालक, ड्राइवर, फैक्ट्रियों, होटलों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण देकर एक प्रमाण–पत्र दिया जाता है। यह प्रमाण–पत्र नेशनल काउंसिल फॉर सेफ्टी में परम आवश्यक है।

रेडक्रॉस के स्लोगन हैं–

- रेडक्रॉस देता है ध्यान, मानव का होवे कल्याण।
- बच्चा–बच्चा करे पुकार, बाँटो प्यार बाँटो प्यार।
- विश्व के हम सब बच्चे, एक हैं, एक हैं, एक हैं।
- रेडक्रॉस है वहाँ, पीड़ित मानव है जहाँ।

मेरा मानना है कि प्राथमिक उपचार प्रशिक्षण सभी नागरिकों एवं विद्यार्थियों के लिए स्कूलों के पाठ्यक्रम में अनिवार्य किए जाने से कभी भी, कहीं भी दुर्घटना होने पर प्रशिक्षित जन सामान्य व्यक्तियों द्वारा किसी के अनमोल जीवन को प्राथमिक उपचार देकर बचाया जा सके। किसी के जीवन को बचाने की सुखद अनुभूति से बढ़कर कुछ भी नहीं हो सकती है।

एच–30–ए, गोविन्दपुरी–एच (शनिदेव मंदिर गली),
स्वेज फॉर्म 22 गोदाम, जयपुर,
मो. नं. 9928388935

इतिहास के पन्नों में खो गया टेलीग्राम

❒ पुष्पा शर्मा

कभी लाखों लोगों से संवाद का तीव्रतम माध्यम कहलाने वाली टेलीग्राम (तार) सेवा बिना किसी शोर–शराबे के समाप्त कर दी गयी। अंतिम टेलीग्राम को संग्रहालय का हिस्सा बनाया गया। इस संचार सेवा की शुरुआत वर्ष 1850 में कलकत्ता और डायमंड हार्बर में प्रायोगिक तौर पर की गयी थी। ईस्ट–इंडिया कम्पनी ने 1851 में टेलीग्राम का उपयोग करना शुरू कर दिया था और 1854 तक देशभर में टेलीग्राम लाइन बिछाई गयी। 27 अप्रेल, 1854 को यह सेवा जनता के लिए खोली गयी, इस दिन पहला तार बम्बई से पूना भेजा गया। उन दिनों यह संचार का सशक्त माध्यम था क्योंकि यह वही दौर था जब हमारा स्वतंत्रता संग्राम लड़ा जा रहा था। यह सेवा उस दौरान योजक कड़ी थी। कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर रहे शांगुनसे को भारत में तार का जनक माना जाता है। अलेक्जेंडर ग्राहम बेल (1847–1922) द्वारा 1876 से 1902 तक तार संदेश को केबल लाइनों के माध्यम से भेजा जाता था, लेकिन 1902 से भारतीय प्रणाली वायरलेस से भेजा जाने लगा।

जब टेलीग्राम सेवा शुरू हुई, तब भारतीयों को इसकी महत्ता का अंदाजा नही था। लेकिन 1857 के महासमर के दौरान और पश्चात से लेकर वर्तमान तक तार सामाजिक ताने–बाने का हिस्सा बन गया। टेलीग्राम ने भारत के सभी पहलुओं को छुआ, चाहे वह जन्म, मरण, परण, नौकरी, बेरोजगारी, युद्ध या कोई दुर्घटना हो। 1857 की क्रान्ति के दौरान तार क्रांतिकारियों को जोड़े रखने का साधन तथा कम्पनी के लिए आतंक का पर्याय बन गया था। लम्बे समय तक तार और बैरंग पत्र आने का अभिप्राय आतंक था। उन्हीं माध्यम की वजह से ही अंग्रेजों के खिलाफ खबरें तीव्रता से समाचार–पत्रों के पन्नों पर आने लगी। यह बात गाहे–बगाहे उठती रही है कि यह सुविधा बन्द कर दी जाए। मद्रास कूरियर अखबार पर तत्कालीन सरकार ने रोक लगाने का प्रयास भी किया था, लेकिन बंगाल असेम्बली की मीटिंग में विरोध के कारण इनलैंड टेलीग्राम पर रोक नही लगाई जा सकी।

वर्ष 1980 का दशक टेलीग्राम के लिए स्वर्णिम दशक कहा जाएगा, जब दिल्ली के मुख्य तार घर में 1 लाख से अधिक टेलीग्राम प्रतिदिन भेजे और मंगाए जाते थे। वर्ष 1980 के दशक में फैक्स मशीन के आगमन ने टेलीग्राम की प्रासंगिकता बढ़ा दी। लेकिन 1990 की शुरूआत में भारत में डिजिटल संचार और इंटरनेट ने पाँव पसारने शुरू कर दिए। नब्बे के दशक में भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल) ने भारतीय डाक से टेलीग्राम सिस्टम का अधिग्रहण कर लिया।

वर्ष 2011 में बीएसएनएल ने 60 वर्षों के बाद तार सेवा के शुल्क में वृद्धि की। 50 शब्दों के लिए तीन या चार रुपये तक बढ़ाए गए। इस प्रकार 50 शब्दों के एक तार–संदेश भेजने के लिए लगभग 27 रुपये का शुल्क लगने लगा। फिर भी यह सेवा बहुत बड़े घाटे में चल रही थी। वर्ष 2011 में ऐसी स्थिति थी कि इस सेवा को चालू रखने के लिए सालाना सौ करोड़ रुपये खर्च हो रहे थे और आमदनी केवल 75 लाख रुपये थी।

साल नब्बे के उत्तरार्ध और वर्ष 2000 के शुरूआती महीनों में टेलीफोन क्रान्ति ने टेलीग्राम की उपादेयता पर प्रश्न चिह्न लगा दिया। घर–घर में टेलीफोन कनेक्शन लगाए जाने लगे। टेलीग्राम–सेवा से लगातार गिरते राजस्व के बाद सरकार ने डाक विभाग से सलाह–मशवरे के बाद टेलीग्राम सेवा को बन्द करने का फैसला लिया।

मानव सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली यह ख़ास संचार सेवा ख़ास जगह बनाकर 15 जुलाई, 2013 को विदा हो गयी और इतिहास का हिस्सा बन गयी, लेकिन यादों और इतिहास से इसे बेदखल करना सम्भव नही है। वर्तमान में स्मृति में रहे इसे दस वर्ष पूर्ण हो गये लेकिन यदा–कदा यादों में आती है।

ई–मेल, मोबाइल, वाट्सएप की दुनिया में पल बढ़ रही पीढ़ी इसके ऐतिहासिक मूल्यों को भी शायद भूल जाए, मगर जिस टेलीग्राम ने क्रान्ति के दौरान भारत को एकसूत्र में पिरोने में मदद की, वह इतिहास भुलाएँ जाने योग्य नही है।

अध्यापक
सापुन्दा रोड़, ज्योति कॉलोनी, केकड़ी,
अजमेर (राज.)–305404
मो.न.: 8003365699

Rajasthan Education Department

पढ़ा, सो समझा!

❒ मनीष भारद्वाज

महाभारत जैसे विशाल ग्रंथ के रचयिता महर्षि वेदव्यास के सामने एक प्रमुख प्रश्न था– महाभारत को लिपि में लिपिबद्ध कैसे किया जाए? महर्षि ने ब्रह्मा जी की सलाह पर इस दुष्कर कार्य के लिए भगवान गणेश जी को चुना। गणेश जी लेखन कार्य के लिए तैयार हो गए, लेकिन उन्होंने एक शर्त रख दी– जब मैं लेखन कार्य आरंभ करूँ तो मुझे रुकना ना पड़े, अगर मैं तनिक भी रुक गया तो मैं लिखना बंद कर दूँगा। व्यास जी ने शर्त स्वीकार कर ली और अपनी तरफ से भी एक शर्त रख दी– आप प्रत्येक श्लोक का अर्थ समझकर ही उस श्लोक को लिखेंगे।

इस प्रकार एक दूसरे की शर्तों को स्वीकार कर लिया गया और व्यास जी धाराप्रवाह बोलते गए और गणेश जी धारा प्रवाह लेखन करते गए। श्री गणेश जी के लेखन की गति अत्यधिक तीव्र थी इसलिए व्यास जी बीच–बीच में श्लोक को जटिल बना देते, ताकि उसके भाव को समझ कर गणेश जी जब तक लिखते, तब तक व्यास जी अगला श्लोक रच लेते और इस प्रकार महाभारत का लेखन कार्य संपन्न हो गया।

उक्त पौराणिक प्रसंग धारा प्रवाह वाचन/पठन के साथ समझ के संबंध का तादात्मीकरण और तदनुरूप लेखन के महत्त्व को प्रकट करता है। भाषिक या अन्य शिक्षण क्रिया में वाचन या पठन कौशल के साथ समझ का होना ही उस क्रिया का परिपाक फल है।

'वाचन' या 'पठन' को शिक्षा के क्षेत्र में परिभाषित करते हुए– 'बी.एम. सक्सेना' साहब कहते हैं– शिक्षा के क्षेत्र में वाचन से तात्पर्य सार्थक प्रतीक, लिपि चिह्नों को पहचानना मात्र न होकर उसके अर्थ ग्रहण करने से है।

डॉ. राम शुक्ल पांडे भी कुछ ऐसा ही कहते हैं– वाचन वह क्रिया है, जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ–साथ चलते हैं।

दोनों परिभाषाओं पर गौर करते हैं तो ज्ञात होता है कि पठन कौशल का सीधा संबंध समझ के साथ है।

किसी भाषा में लिखे हुए या बोले गए शब्दों या वाक्यों को ध्वनि रूपों में रूपांतरित करना 'विसंकेतीकरण' (डिकोडिंग) होता है। उदाहरणार्थ –'मुमुक्षु' शब्द लिखा हो, या बोला जाए तो हो सकता है, विद्यार्थी इसे ध्वनि प्रतीकों के रूप में रूपांतरित करते हुए ज्यों का त्यों बोल दें, पर वह उसका अर्थ नहीं जानता है, तो वह केवल 'विसंकेतीकरण' ही होगा। जबकि पठन में 'विसंकेतीकरण' के साथ साथ सामग्री को समझना भी शामिल है। उदाहरण के तौर पर विद्यार्थी 'मुमुक्षु' शब्द को पढ़ते हुए समझ भी रहा है, तो इसका अर्थ है–किसी नई वस्तु के प्रति जिज्ञासा का भाव होना।

शब्द पहचान अर्थात 'विसंकेतीकरण' क्षमता को अभ्यास द्वारा मजबूत किया जा सकता है। किसी पाठ को पढ़ते समय विद्यार्थी को शब्द पहचान के लिए सचेत चेष्टा की आवश्यकता महसूस नहीं हो, तो समझना चाहिए कि विद्यार्थी 'विसंकेतीकरण' में कुशल हो चुका है। यही कुशलता प्रवाहपूर्ण समझ की आवश्यक शर्त है। पठन कौशल की पूर्णता समझ के साथ होती है और पठन प्रक्रिया निम्नांकित सोपानों से होकर गुजरती है–

1. ध्वनि के प्रतीकों को देख कर पहचानना।
2. वर्णों के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना।
3. शब्दों को सार्थक इकाइयों में बांट कर पढ़ना।
4. पाठ्य सामग्री के विचार को समझना।
5. तत्पश्चात पठित सामग्री पर अपना मंतव्य स्थिर करना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा प्रथम और द्वितीय स्तर के विद्यार्थियों के लिए समझ के साथ स्वयं पढ़ने के मौके देने के उद्देश्य से 'बरखा' क्रमिक पुस्तक माला प्रकाशित की गई। ये पुस्तकें बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मददगार होने के साथ–साथ पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों में संज्ञानात्मक रूप से लाभप्रद है। इन 'बरखा' क्रमिक पुस्तक माला की पुस्तकों पर एक स्लोगन लिखा है– पढ़ना है समझना। सारत: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की उक्त 'बरखा क्रमिक पुस्तक माला', पठन कौशल के साथ समझ का विकास करने का एक सार्थक प्रयास है।

जब हम पठन के साथ समझ के संबंधों का विवेचन करते हैं, तो पठन के स्वरूप या प्रकृति को स्पष्ट करने वाली कुछ शब्दावली मस्तिष्क में कौंधती है, इनमें से एक शब्द है, सम्मिश्रण (Blending)। पठन कौशल की समझ हेतु प्रारंभिक स्तर पर सम्मिश्रण विधि प्रयुक्त की जाती है। उदाहरणार्थ–'सरपट' शब्द को विद्यार्थी पहले स, र, प, ट इस रूप में पृथक–पृथक पढ़ता है, फिर लगातार अभ्यास से सम्मिश्रण रूप 'सरपट' पढ़ने और समझने लगता है। इसी तरह समझ के विकास हेतु सक्रिय पठन (active reading) की आवश्यकता होती है। इस विषय में कुछ परिस्थितियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं–जब हम पठन के साथ संलग्न होने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। यह असंलग्नता की स्थिति निम्नानुसार हो सकती है–

- हर अध्याय को एक ही तरह से देखना।
- कार्य पर ध्यान दिए बिना या प्रश्नों को ध्यान में रखें बिना पढ़ना।
- एक ही गति से, बिना बदलाव के पढ़ना।
- समझ पर गौर किए बिना, बिना रुके पढ़ना।
- किसी बात का अर्थ नहीं समझने पर उसे छोड़ देना और पुनः उस विषय पर परावर्तन नहीं होना।

इन सभी परिस्थितियों का अर्थ है– निष्क्रिय पठन (Passive Reading)। निष्क्रिय पठन, समझ में बाधा उत्पन्न करता है। इसके विपरीत जब हम सक्रिय पठन कर रहे होते हैं, अर्थात उद्देश्यों के साथ पढ़ रहे होते हैं और प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के किताब पढ़ने के बजाय बच्चों के साथ किताब पढ़ना संप्रत्यय को लेकर चल रहे होते हैं, तो निश्चित रूप से पठन के साथ समझ विकसित करके चल रहे होते हैं।

पठन और समझ की इस प्रक्रिया के द्वारा हम विद्यार्थियों में व्यवहारगत परिवर्तन की बात करें तो निश्चित रूप से हम चाहेंगे–

1. विद्यार्थी पठित सामग्री का कुशलता से 'विसंकेतीकरण' करें।
2. विसंकेतित सामग्री की समझ विकसित करें।
3. समझ के आधार पर –

I. पठन की यति गति का समुचित प्रयोग करें।

Rajshri Education Department

II. अभिनयित पठन की समझ विकसित करें।
III. भाषा समृद्धि और भाषाकोश का निर्माण करने में समर्थ हो।
IV. दैनिकचर्या में भाषा के शुद्ध प्रयोग आदि की क्षमता का विकास कर सकें।

भाषा शिक्षणशास्त्र में LSRW क्रम बड़ा लोकप्रिय है, इसमें विद्यार्थी सर्वप्रथम 'सुनना' फिर 'बोलना' फिर 'पढ़ना' और अंत में 'लिखना' सीखता है। पठन या वाचन, समझ की प्रक्रिया से गुजर कर लिखने के लक्ष्य तक पहुँचता है। परोक्ष रूप से पठन से पहले विद्यार्थी 'विसंकेतीकरण' करना सीखता है, तत्पश्चात समझ और फिर लेखन का एक मनोवैज्ञानिक क्रम निर्धारित करता है। यह LSRW कौशल न केवल प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, वरन वर्तमान तकनीकी युग में कार्यालयी क्रियाकलापों में भी अत्यंत उपयोगी है।

जब हम 21वीं सदी के कौशलों की बात करते हैं, तो अधिकांश संगठन चुनौतियों का सामना करने की क्षमता वाले कर्मचारियों की तलाश में रहते हैं। ये कार्मिक प्रभावी संवाद करने में समर्थ है। 'संचार' आधुनिक कार्यस्थल में सबसे अधिक माँग वाले कौशलों में से एक है और संचार प्रणाली में LSRW कौशल का महत्त्व सामने आता है। LSRW कौशल में और मुख्यतः समझ के साथ पठन में निष्णात व्यक्ति संचार प्रणाली का अधिकतम दोहन कर सकता है, अर्थात धारा प्रवाह पठन क्षमता के साथ उत्कृष्ट स्तर की समझ, और सही समझ के साथ लेखन कौशल में विकास संभव है। इस क्रिया में निष्णात कार्मिक तैयार करने के लिए प्राथमिक स्तर से ही धैर्य से सुनने, संयमित, स्पष्ट और धाराप्रवाह बोलने और पढ़ने की कुशलता के साथ गहरी समझ विकसित करने की आवश्यकता है। इसी से आज के विद्यार्थी, भविष्य के कुशल कार्मिक, प्रशासक, प्रबंधक और जनप्रतिनिधि बन सकते हैं, जो एक गतिशील व्यापार परिदृश्य और प्रतिस्पर्धा बनाए रखने में सक्षम होंगे, विकसित और उन्नत राष्ट्र निर्माण यात्रा के ध्वजवाहक होंगे।

उप प्राचार्य
श्री रूक्मणी कृपा वर्धमान नगर, हिण्डौन सिटी, करौली (राज.)
मो.न.: 9460703379

राजस्थान का जलियाँवाला बाग: मानगढ़ धाम

❐ **विनोद पानेरी**

दक्षिणी राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में गुजरात सीमा से सटा मानगढ़ का पहाड़ आजादी के आंदोलनों का अप्रतिम उदाहरण है। स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए एकत्र हजारों आदिवासियों पर अंग्रेजों द्वारा गोलियाँ चलाने से 1500 लोगों की मौत घटना स्थल पर ही हो गयी थी। देश की आजादी के लिए अनाम उत्सर्ग हुए बलिदानियों की माटी का स्मरण आते ही मन श्रद्धा से नत मस्तक हो जाता है। 17 नवम्बर, 1913 मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन हुई यह घटना भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में कई वर्षों तक दबी रही। गुजरात, राजस्थान और मध्यप्रदेश के लाखों लोगों की आस्था स्थली अब पूरे देश में बलिदानियों के तीर्थ के रूप में पहचान बना रही है। जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर दूर मानगढ़ का यह ऐतिहासिक स्थल आनन्दपुरी पंचायत समिति से मात्र 8 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। पहाड़ी पर स्थित लम्बी चौड़ी समतल जमीन प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर भरने वाले मेले में लाखों लोगों की आस्था, इबादत और आराधना का केन्द्र बना हुआ है। यहाँ गोविन्द गुरु के नेतृत्व में कई बार जनजाति सम्मेलन हुए। डूंगरपुर जिले के बांसिया गाँव निवासी गोविन्द गुरु उन दिनों जनजाति समाज में आजादी की अलख और कुरीति उन्मूलन की चेतना जगाने का काम करते थे। घटना के दिन गोविन्द गुरु को गोलियों से बचाने सैकड़ों लोग उन्हें घेर कर खड़े हो गए। आखिर उनके बाएं पैर पर गोली लग गयी और उन्हें सुरक्षित दूसरी जगह पहुँचाया गया। इसके बाद अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ लिया और गुजरात की जेल में बंद कर दिया। इस गोलीबारी को एक अंग्रेज अफसर ने तब रोका जब उसने देखा कि गोली बारी में मारी गई महिला का बच्चा उससे चिपट कर स्तनपान कर रहा था। तब तक 1500 से ज्यादा आंदोलनकारियों की मौत हो गई थी और कई जख्मी हो गए थे। इस दौरान 900 से ज्यादा

लोगों को जिन्दा पकड़ लिया गया था, जो गोलीबारी के बाद भी पहाड़ी खाली करने के लिए तैयार नहीं थे।

जीवन पर्यंत आजादी की बात करने वाले गोविन्द गुरु अंग्रेजों की यातनाएँ सहते-सहते जेल में रहते हुए इस धरा धाम से विदा हो गए। जलियांवाला बाग से पहले और बहुत बड़ी घटना उस समय प्रचार-प्रसार के अभाव में अनछुई रह गयी थी। इसे राजस्थान का जलियांवाला बाग भी कहा जाता है। भारतीय स्वाधीनता संग्राम की इस घटना को अब देश और दुनिया के समक्ष लाया जा रहा है। राजस्थान सरकार ने यहाँ विशाल शहीद स्मारक बनवाया है। गोविन्द गुरु की धूणी आज भी मानगढ़ के पहाड़ पर 100 साल पहले के इतिहास की गवाही देती जान पड़ती है। वहीं राजस्थान सरकार ने आजादी के आंदोलन से जुड़े स्वतंत्रता सेनानियों के लेख व प्रतिमाओं का पैनोरमा मानगढ की पहाड़ी पर बनवाया है। गुजरात के भाग में मानगढ़ के पहाड़ पर बगीचा व पर्यटन स्थल का निर्माण करवाया गया है। पिछले दिनों हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भी यहाँ पहुँच कर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत भी

Rajshan Education Department

यहाँ कई बार गए हैं। बाँसवाड़ा जिले के राजकीय विद्यालयों के छात्रों का यहाँ भ्रमण करवाना इन दिनों प्रारम्भ किया गया है। आइए हम वन्दन करें इस पावन माटी का जहाँ सैकड़ों लोगों ने देश के लिए अपने प्राणों का हवन कर दिया।

और जाने गोविन्द गुरु के बारे में–

डूंगरपुर जिले के बांसिया गाँव के रहने वाले गोविन्द गुरु बंजारा समुदाय के थे। 1890 के दशक में उन्होंने भीलों के बीच अपना आंदोलन शुरू किया था। इस आंदोलन के लिए उन्होंने अग्नि देवता को प्रतीक माना था। आंदोलन से जुड़ने वाले समर्थकों को अग्नि के सामने खड़े होकर पूजा-पाठ के साथ-साथ हवन करना होता था।

गोविन्द गुरु ने न तो किसी स्कूल में शिक्षा ली थी और न ही किसी कॉलेज में कदम रखा था। अंग्रेजी हुकूमत के दिनों में जब भारत की आजादी में हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग से योगदान दे रहा था तब अशिक्षा और अभावों के बीच अज्ञान के अंधकार में जैसे-तैसे जीवनयापन करते आदिवासियों में धार्मिक चेतना जगाई। वे ढोल-मंजीरों की ताल और भजन की स्वर लहरियों से आम जनमानस को आजादी के आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने के लिए प्रेरित करते थे। सन 1903 में गुरु ने अपनी धूनी मानगढ़ टेकरी पर जमाई।

इस दौरान गुरु के समर्थकों ने 1910 तक अंग्रेजों के सामने 33 मांगें रखी। इनकी मुख्य मांगे अंग्रेजों और रजवाड़ों द्वारा करवाई जा रही बंधुआ मजदूरी, भारी लगान और गुरु के अनुयायियों के साथ हो रहे उत्पीड़न तथा देश की गुलामी की दासता के खिलाफ थी। इन मांगों को मानने से अंग्रेजों और रजवाड़ों ने मना कर दिया। जिसके बाद वह भगत आंदोलन को तोड़ने में जुट गए, लेकिन मानगढ़ पहाड़ी पर गुरु के समर्थकों की भीड़ लगातार बढ़ रही थी। भगत आंदोलन के बीच अंग्रेजों ने गोविंद गुरु को गिरफ्तार कर लिया। उन पर मुकदमा चलाया गया और फिर उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाकर जेल भेज दिया गया। गुरु के अच्छे व्यवहार और लोकप्रियता के कारण साल 1919 में उन्हें हैदराबाद जेल से रिहा कर दिया गया, लेकिन उन पर उन रियासतों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया जहाँ उनके समर्थक थे। जिसके बाद वह गुजरात के लिमडी के पास कंबोई में जाकर बस गए।

इधर, गुरु के समर्थक लगातार बढ़ते जा रहे थे। मांगे ठुकराए जाने के बाद उन्होंने अंग्रेजों से आजादी का ऐलान करने की कसम खाई। पहाड़ी पर कब्जा जमाए बैठे भील क्रांतिकारी 'ओ भुरेटीया नइ मानु रे, नइ मानु' (ओ अंग्रेजों, हम नहीं झुकेंगे तुम्हारे सामने) गीत गाया करते थे। इस दौरान गुरु के समर्थकों ने अंग्रेजों की पुलिस चौकी पर हमले भी किए। बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, संतरामपुर और कुशलगढ़ की रियासतों में गुरु के समर्थकों की तादाद लगातार बढ़ती जा रही थी। जिसके बाद अंग्रेजों और रजवाड़ों ने भगत आंदोलन को कुचलने का मन बना लिया। साल 1913 में आंदोलनकारियों को चेतावनी दी गई कि 15 नवंबर तक मानगढ़ खाली कर दो, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया।

अंग्रेजों से मुकाबले के लिए गुरु के समर्थकों ने मानगढ़ पहाड़ी को किले में तब्दील कर दिया था। हथियारों के नाम पर समर्थकों के पास देसी तमंचे और तलवारें थी। उधर, अंग्रेजों की फौज और रजवाड़ों की सेना ने भी हमले की तैयारी शुरू कर दी। इसके लिए मशीनगन और तोपों को गधों और खच्चरों पर लादकर मानगढ़ और आसपास की दूसरी पहाड़ियों पर लाया गया। संयुक्त सेना ने मानगढ़ को घेर लिया और आंदोलनकारियों को भगाने के लिए हवा में गोलीबारी करने लगे। गोलीबारी के बाद भी आंदोलनकारी मानगढ़ पहाड़ी खाली करने के लिए तैयार नहीं थे। जिसके बाद इस हमले ने नरसंहार का रूप ले लिया।

बताया जाता है कि इस हमले की कमान अंग्रेज अफसर मेजर एस बेली, कैप्टन ई. स्टॉइली और आर.ई. हैमिल्टन के हाथ में थी। अंग्रेजों की फौज और रजवाड़ों की सेना हवा में गोलियां बरसा रही थी, लेकिन आंदोलन कारी पीछे हटने को तैयार नहीं थे। जिसके बाद अंग्रेजों और रजवाड़ों की संयुक्त सेना ने सीधे आंदोलनकारियों पर गोलियां बरसाना शुरू कर दिया।

इधर, जेल से रिहा होने के बाद गोविंद गुरु गुजरात के लिमडी के पास कंबोई में बस गए थे। साल 1931 में उनका भी निधन हो गया था। कंबोई में गोविंद गुरु का समाधि मंदिर आज भी बना हुआ है। जहाँ उनके अनुयायी श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए जाते हैं। वर्तमान में बाँसवाड़ा में संचालित विश्वविद्यालय, महाविद्यालय व कई राजकीय विद्यालयों का नामकरण गोविन्द गुरु के नाम से किया गया है। वागड़, गुजरात व मध्यप्रदेश में आजादी के आंदोलन, कुरीति उन्मूलन व शिक्षा के लिए प्रेरित करने वाले इस महामना को उनके निधन के लगभग 100 साल होने के बावजूद पूरी आस्था और श्रद्धा से याद किया जाता है।

वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक
राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय
बागीदौरा, जिला-बाँसवाड़ा
मो.न.: 9414722665

Rajshala Education Department
सत्यमेव जयते

आदेश-परिपत्र : मई-जून, 2023

1. स्काउट गाइड संशोधित वार्षिक कार्यक्रम का शिविरा पत्रिका में प्रकाशन बाबत।
2. स्थापित/रूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षण/प्रवेश कार्य संचालन सत्र 2023-24 के संबंध में।

1. स्काउट गाइड संशोधित वार्षिक कार्यक्रम का शिविरा पत्रिका में प्रकाशन बाबत।

● राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय ● क्रमांक : प-() रा.मु./22-23/140 दिनांकः 05.04.2023 ● श्रीमान निदेशक महोदय, माध्यमिक शिक्षा बीकानेर, राजस्थान ● विषयः स्काउट गाइड संशोधित वार्षिक कार्यक्रम का शिविरा पत्रिका में प्रकाशन बाबत। ● प्रसंगः राज्य मुख्यालय पत्रांक 13540, दिनांक 31.03.2023

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड राज्य मुख्यालय, जयपुर पर दिनांक 28 मार्च, 2023 को आयोजित राज्य कार्यकारिणी सभा द्वारा सत्र 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम का अनुमोदन किया गया है। वार्षिक कार्यक्रम में रोवर/रेंजर साहसिक शिविर 08 से 12 जून, 2023 तथा स्काउटर गाइडर शैक्षिक भ्रमण 12 से 16 जून, 2023 तक आयोजित किया जाना स्वीकृति किया गया है।

अतः आप से निवेदन है कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड का संलग्न संशोधित वार्षिक कार्यक्रम शिविरा पत्रिका में प्रकाशन करने का श्रम करावें।

● संलग्नः संशोधित वार्षिक कार्यक्रम

● राज्य सचिव

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड
राज्य मुख्यालय, जयपुर
वार्षिक कार्यक्रम 2023-24

क्र.सं.	गतिविधि	स्थान	तिथियाँ
	अप्रेल, 2023		
1.	उपराष्ट्रपति अवार्ड/प्रधानमंत्री शील्ड प्रतियोगिता पंजीकरण	राज्य स्तर पर	05.04.2023
2.	आर्गेनाइजर्स संगोष्ठी	मण्डल स्तर पर	05.04.2023
3.	विश्व स्वास्थ्य दिवस-जनचेतना अभियान	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	07.04.2023
4.	ट्रेनर्स मीट	माउण्ट आबू केन्द्र नं. 1	09 से 10.04.2023 तक
5.	राज्य स्तरीय ऑर्गेनाइजर्स संगोष्ठी	माउण्ट आबू केन्द्र नं. 1	12 से 13.04.2023 तक
6.	तदर्थ जिला कार्यकारिणी बैठक	जिला स्तर	15.04.2023 तक
7.	पृथ्वी दिवस-परिण्डा एवं चुग्गा पात्र महा अभियान प्रारम्भ	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	22.04.2023
8.	राज्य स्तरीय एडवेंचर गतिविधियाँ	मण्डल स्तर पर	26 से 30.04.2023 तक
9.	प्रेसिडेन्ट स्काउट/गाइड/रोवर /रेंजर तैयारी/जाँच शिविर	मण्डल स्तर पर	26 से 30.04.2023 तक
10.	सचिव एवं संयुक्त सचिव संगोष्ठी	जिला स्तर	30.04.2023 तक
11.	जिला मूल्यांकन समिति बैठक	जिला स्तर पर	30.04.2023 तक
12.	प्रशासनिक प्रतिवेदन एवं गणना भिजवाना	राज्य मुख्यालय पर	30.04.2023 तक
13.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 07, 10, 11, 13)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
14.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधि	ग्रुप/स्थानीय/ संघ / जिला	प्रतिमाह
15.	नो बैग डे के अंतर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	मई, 2023		
16.	विश्व प्रवासी पक्षी दिवस परिण्डा एवं चुग्गा पात्र	सभी स्तरों पर	09.05.2023
17.	स्काउटर/गाइडर बेसिक कोर्स	जिला/मण्डल स्तर पर	05 से 11.05.2023 तक
18.	प्रेसिडेन्ट रोवर जाँच शिविर	माउण्ट आबू/ सिरोही	12 से 16.05.2023 तक
19.	प्रेसिडेन्ट स्काउट जाँच शिविर	पुष्करघाटी, अजमेर	12 से 16.05.2023 तक
20.	प्रेसिडेन्ट गाइड जाँच शिविर	म.मु. बनीपार्क जयपुर	12 से 16.05.2023 तक
21.	प्रेसिडेन्ट रेंजर जाँच शिविर	जगतपुरा, जयपुर	12 से 16.05.2023 तक
22.	कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर (अभिरूचि केन्द्र)	स्थानीय/संघ /जिला	17 मई से 25 जून 2023
23.	स्वतंत्र रोवर लीडर बेसिक कोर्स	आबू पर्वत केन्द्र नं. 01	18 से 24.05.2023 तक
24.	कब/स्काउट मास्टर एडवांस कोर्स	आबू पर्वत केन्द्र नं. 01	18 से 24.05.2023 तक
25.	जैव विविधता दिवस प्रतियोगिताएँ /वार्ताएँ	सभी स्तरों पर	22.05.2023
26.	पलॉक लीडर/गा.के./रेंजर लीडर एडवांस कोर्स	आबू पर्वत केन्द्र नं. 01	26.05.2023 से 01.06.2023 तक
27.	राष्ट्रपति गाइड प्रशिक्षण शिविर	आबू पर्वत केन्द्र नं. 01	26.05.2023 से 30.05.2023 तक
28.	तम्बाकू निषेध दिवस प्रतियोगिताएँ	ग्रुप/स्था. संघ /जिला स्तर	31.05.2023
29.	पदक/अलंकार पुरस्कार हेतु आवेदन भिजवाना	राज्य स्तर पर	31.05.2023
30.	जल सेवा/परिण्डा/चुग्गा पात्र अभियान	सभी स्तरों पर	प्रतिमाह
31.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	जिला/मण्डल स्तर	प्रतिमाह

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

32.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 1, 14)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
	जून, 2023		
33.	कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर	स्थानीय/संघ जिला	01 से 25.06.2023 तक
34.	प्रेसिडेंट स्काउट प्रशिक्षण शिविर	आबू पर्वत नं. 01	02 से 06.06.2023 तक
35.	विश्व पर्यावरण दिवस- स्काउट /गाइड मैराथन	सभी स्तरों पर	05.06.2023
36.	कमिश्नर बेसिक कोर्स	आबू पर्वत नं. 01	08 से 12.06.2023
37.	रोवर/रेंजर साहसिक शिविर	कुर्सियांग, दार्जिलिंग (प. बंगाल)	08 से 12.06.2023
38.	स्काउट/गाइडर शैक्षणिक भ्रमण	कुर्सियांग, दार्जिलिंग (प. बंगाल)	12 से 16.06.2023
39.	सचिव प्रशिक्षण शिविर	आबू पर्वत नं. 01	14 से 18.06.2023
40.	जल सेवा अभियान	सभी स्तरों पर	20.06.2023 तक
41.	विश्व योग दिवस	सभी स्तरों पर	21.06.2023
42.	मण्डल स्तरीय ऑर्गेनाइजर संगोष्ठी	मण्डल स्तर पर	30.06.2023 तक
43.	स्थानीय संघ वार्षिक अधिवेशन	स्थानीय संघ स्तर पर	30.06.2023 तक
44.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियां	जिला/मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
45.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 1, 14)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
46.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग /गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	जुलाई, 2023		
47.	विजन 2023 कार्य योजना	उदयपुर	05 से 07.07.2023 तक
48.	विश्व जनसंख्या दिवस- (जन चेतना रैली)	ग्रुप/स्था. संघ स्तर	11.07.2023
49.	स्काउटर/गाइडर एवं ट्रेनिंग काउंसलर अभिनवन शिविर	जिला स्तर	13 जुलाई, 2023
50.	जिला कार्यकारिणी सभा-तदर्थ	जिला स्तर पर	15.07.2023 तक
51.	प्रधानमंत्री शील्ड प्रतियोगिता लॉग बुक भेजना	राज्य मुख्यालय पर	15.07.2023 तक
52.	ट्रेनिंग काउंसलर/ए.डी.सी. द्वारा ग्रुप संभाल	स्थानीय संघ स्तर पर	20 से 26.07.2023 तक
53.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत केन्द्र नं. 01	21 से 25.07.2023 तक
54.	एडवेंचर प्रोग्राम	मण्डल स्तर पर	25 से 29.07.2023 तक
55.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ (एक दिवस वन भ्रमण)	ग्रुप स्तर पर	31.07.2023 तक
56.	विद्यालय स्वच्छता अभियान	ग्रुप स्तर पर	31.07.2023 तक
57.	ग्रुप स्तरीय हाईक (पैदल) स्काउट /गाइड/रोवर/रेंजर	ग्रुप स्तर पर	31.07.2023 तक
58.	राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर स्काउट/गाइड/रोवर/रेंजर	जिला स्तर पर	31.07.2023 तक
59.	सचिव/संयुक्त सचिव संगोष्ठी	मण्डल स्तर पर	31.072023 तक
60.	प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर सेमीनार	मण्डल स्तर पर	31.07.2023 तक
61.	मण्डल स्तरीय ऑर्गेनाइजर्स संगोष्ठी	मण्डल स्तर प	31.07.2023 तक
62.	संस्थाप्रधान सेमीनार	स्था. संघ स्तर पर	31.07.2023 तक
63.	गोल्डन ऐरो अवॉर्ड फोर्म भिजवाना	राज्य मुख्यालय	31.07.2023 तक
64.	जिला परिषद् वार्षिक अधिवेशन	जिला स्तर पर	31.07.2023 तक
65.	राज्य वित्त समिति सभा	राज्य मुख्यालय	31.07.2023 तक
66.	राज्य कार्यकारिणी सभा	राज्य मुख्यालय	31.07.2023 तक
67.	जनजाति गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
68.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 4, 14)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
69.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	अगस्त, 2023		
70.	स्काउटर गाइडर बेसिक कोर्स (केजीबीवी, महात्मा गाँधी, मॉडल विद्यालयों के लिए)	मण्डल स्तर पर	01 से 07.08.2023 तक
71.	राज्य स्तरीय सचिव संगोष्ठी	बनीपार्क,जयपुर	03.08.2023
72.	राज्य स्तरीय प्रभारी कमिश्नर संगोष्ठी	बनीपार्क, जयपुर	04.08.2023
73.	राज्य पुरस्कार पंजीकरण ऑन लाइन फोर्म भिजवाना	मण्डल स्तर पर	15.08.2023 तक
74.	जिला परिषद् वार्षिक अधिवेशन	जिला स्तर पर	15.08.2023 तक
75.	स्वतंत्रता दिवस	सभी स्तरों पर	15.08.2023 तक
76.	सद्भावना दिवस (राज्य स्तरीय साइकिल हाईक)	स्था.संघ/जिला /मण्डल स्तर	16 से 20.08.2023 तक
77.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत नं.1	21 से 25.08.2023 तक
78.	महाविद्यालय प्राचार्य, रोवर/रेंजर लीडर संगोष्ठी	मण्डल स्तर	31.08.2023 तक
79.	राज्य परिषद् का वार्षिक अधिवेशन	कोटा	28.08.2023 तक
80.	ऑर्गेनाइजिंग कमिश्नर सभा	कोटा	29.08.2023 तक
81.	राज्य पुरस्कार रोवर/रेंजर प्रशिक्षण शिविर	मण्डल/जिला स्तर पर	30.08.2023 तक
82.	निपुण रोवर/रेंजर प्रशिक्षण शिविर	जिला स्तर पर	30.08.2023 तक
83.	रोवर/रेंजर विकास समिति सभा	मण्डल स्तर पर	31.08.2023 तक
84.	चतुर्थ चरण/हीरक पंख/गोल्डन ऐरो प्रशिक्षण शिविर	जिला स्तर पर	31.08.2023 तक
85.	द्वितीय/तृतीय सोपान/टोली नायक प्रशिक्षण शिविर	स्था. संघ स्तर पर	31.08.2023 तक
86.	राज्य पुरस्कार पंजीकरण ऑन	राज्य मुख्यालय	31.08.2023 तक

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

	लाइन फोर्म भिजवाना		
87.	हिमालय वुड बैज री यूनियन	मण्डल स्तर पर	31.08.2023 तक
88.	कम्यूनिटी डवलपमेंट सेमिनार	मण्डल स्तर पर	31.08.2023 तक
89.	कब/बुलबुल भ्रमण	स्थानीय संघ स्तर पर	31.08.2023 तक
90.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	जिला/मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
91.	जनजाति गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
92.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 15)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
93.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग /गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	सितम्बर, 2023		
94.	शिक्षक दिवस	ग्रुप/स्था. संघ स्तर पर	05.09.2023 तक
95.	उद्योग पर्व सप्ताह	ग्रुप/स्था. संघ स्तर पर	07 से 14.09.2023 तक
96.	विश्व साक्षरता दिवस	ग्रुप स्तर पर	08.09.2023 तक
97.	प्रेसिडेंट रोवर/रेंजर प्रशिक्षण शिविर	आबू पर्वत नं. 01	11 से 15.09.2023 तक
98.	राज्य स्तरीय जनजाति महोत्सव	उदयपुर	11 से 15.09.2023 तक
99.	स्थानीय संघ स्तरीय रैलियाँ	जिला/मण्डल स्तर पर	11 से 16.09.2023 तक
100.	स्काउटर/गाइडर बेसिक कोर्स	जिला/मण्डल स्तर पर	12 से 18.09.2023 तक
101.	स्काउटर/गाइडर एडवांस कोर्स	मण्डल स्तर पर	12 से 18.09.2023 तक
102.	गाइडर अध्ययन शिविर	मण्डल स्तर पर	16 से 18.09.2023
103.	विश्व ओजोन दिवस-वार्ताएँ	सभी स्तर पर	16.09.2023 तक
104.	श्री गणेश जी मेला	सवाई माधोपुर	19.09.2023 तक
105.	रामदेवरा मेला सेवा शिविर	पोकरण, जैसलमेर	20 से 26.09.2023 तक
106.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत	21 से 25.09.2023 तक
107.	कब बुलबुल एक रात्रि शिविर	स्थानीय संघ स्तर पर	30.09.2023 तक
108.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	जिला/मण्डल स्तर	प्रतिमाह
109.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 3, 15, 16)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
110.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	अक्टूबर, 2023		
111.	गाँधी/शास्त्री जयंती-प्रार्थना सभा	ग्रुप/स्था. संघ स्तर	02.10.2023
112.	षष्ठर प्रशिक्षण (कब/बुलुबल) कब/बुलबुल उत्सव	जिला स्तर	02 से 04.10.2023 तक
113.	प्रकृति अध्ययन शिविर	ग्रुप स्तर पर	04 से 06.10.2023 तक
114.	दशहरा मेला सेवा शिविर	मण्डल कोटा	22 से 26.10.2023 तक
115.	राज्य पुरस्कार स्काउट/गाइड अनुशंषा शिविर	जिला/मण्डल स्तर	10 से 12.10.2023 तक
116.	राज्य पुरस्कार रोवर/रेंजर अनुशंषा शिविर	मण्डल स्तर	13 से 15.10.2023 तक
117.	स्काउट/गाइडर बेसिक कोर्स	जिला/मण्डल स्तर	07 से 13.10.2023 तक
118.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत नं. 1	21 से 25.10.2023 तक
119.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 16)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
120.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर	प्रतिमाह
121.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग/ गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	नवम्बर, 2023		
122.	भारत स्काउट/गाइड स्थापना दिवस	ग्रुप/स्था. संघ /सभी स्तर	07.11.2023 तक
123.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत नं. 1	21 से 25.11.2023 तक
124.	पुष्कर मेला सेवा शिविर	पुष्कर, अजमेर	23 से 27.11.2023 तक
125.	कोलायत मेला सेवा शिविर	कोलायत, बीकानेर	25 से 27.11.2023 तक
126.	कब/बुलबुल एक रात्रि शिविर	स्थानीय संघ स्तर पर	30.11.2023 तक
127.	द्वितीय/तृतीय सोपान स्काउट/ गाइड जाँच शिविर	स्था. संघ स्तर पर	30.11.2023 तक
128.	ग्रामीण रोवर/रेंजर निपुण प्रशिक्षण शिविर	जिला स्तर पर	30.11.2023 तक
129.	निःशक्तजन स्काउट/गाइड प्रशिक्षण शिविर	मण्डल स्तर पर	30.11.2023 तक
130.	अनाथालय स्काउट/गाइड प्रशिक्षण शिविर	मण्डल स्तर पर	30.11.2023 तक
131.	अनुसूचित जाति स्काउट/गाइड प्रशिक्षण शिविर	जिला स्तर पर	30.11.2023 तक
132.	ग्रुप वार्षिक शिविर	ग्रुप स्तर पर	30.11.2023 तक
133.	प्रेसिडेंट स्काउट/गाइड/रोवर/ रेंजर आवेदन फोर्म भिजवाना	राज्य मुख्यालय स्तर	30.11.2023 तक
134.	चतुर्थ चरण, हीरक पंख, फॉर्म भिजवाना	सभी स्तरों पर	30.11.2023 तक
135.	स्वच्छ भारत मिशन पर कार्य	सभी स्तरों पर	प्रतिमाह
136.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 17)	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रतिमाह
137.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग /गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

	दिसम्बर, 2023		
138.	विश्व एड्स दिवस (संगोष्ठी/ वार्ताएँ)	ग्रुप स्तर पर	01.12.2023 तक
139.	मानवाधिकार दिवस	ग्रुप/स्था. संघ स्तर पर	10.12.2023 तक
140.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत नं. 1	21 से 25.12.2023 तक
141.	रोवर मूट/रेंजर मीट	उदयपुर	26 से 30.12.2023
142.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	ग्रुप/स्था. संघ / जिला स्तर	प्रतिमाह
143.	स्वच्छ भारत मिशन कार्य	जिला स्तर	प्रतिमाह
144.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 5)	जिला स्तर	प्रतिमाह
145.	नो बैग डे के अंतर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	जनवरी, 2024		
146.	डेजर्ट ट्रेकिंग शिविर	जैसलमेर	09 से 13.01.2024
147.	युवा दिवस	स्था. संघ/ जिला स्तर पर	12.01.2024 को
148.	स्थानीय संघ स्तरीय रैलियाँ	स्थानीय संघ स्तर	17 से 22.01.2024 तक
149.	हिमालय वुड बैज कोर्स स्काउट गाइड विंग	पुष्करघाटी, अजमेर	17 से 23.01.2024 तक
150.	प्रेसिडेंट स्काउट गाइड रोवर रेंजर तैयारी शिविर	मण्डल स्तर पर	18 से 22.01.2024 तक
151.	गणतंत्र दिवस	सभी स्तरों पर	26.01.2024
152.	शहीद दिवस-प्रार्थना सभा	ग्रुप/स्था.संघ स्तर पर	30.01.2024
153.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
154.	जनजाति गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
155.	स्वच्छ भारत मिशन कार्य	जिला स्तर पर	प्रतिमाह
156.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 8, 12)	जिला स्तर पर	प्रतिमाह
157.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	फरवरी, 2024		
158.	द्वितीय/तृतीय सोपान प्रशिक्षण शिविर	स्थानीय संघ स्तर पर	01 से 05.02.2024 तक
159.	स्काउटर गाइडर बेसिक कोर्स	जिला/मण्डल स्तर पर	01 से 07.02.2024 तक
160.	उर्स मेला अजमेर	मण्डल स्तर पर	03 से 09.02.2024 तक
161.	द्वितीय/तृतीय सोपान जाँच शिविर	स्थानीय संघ स्तर पर	06 से 08.02.2024 तक
162.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	11 से 17.02.2024 तक
163.	ROT कोर्स (स्काउट गाइड विंग)	बीकानेर	13 से 17.02.2024 तक
164.	प्री. ए.एल.टी. कोर्स (स्काउट गाइड विंग)	बीकानेर	13 से 17.02.2024 तक
165.	राज्य पुरस्कार समारोह	जगतपुरा, जयपुर	20 से 23.02.2024 तक
166.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत नं. 1	21 से 25.02.2024 तक
167.	कब/बुलबुल उत्सव	बीकानेर	21 से 23.02.2024 तक
168.	विश्व स्काउट दिवस/गाइड चिंतन दिवस	सभी स्तरों पर	22.02.2024
169.	मण्डल स्तरीय एडवेंचर गतिविधियाँ	मण्डल स्तर पर	24 से 28.02.2024 तक
170.	राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर	जिला/मण्डल स्तर पर	28.02.2024 तक
171.	बेणेश्वर मेला सेवा शिविर	डूँगरपुर	मेले के अनुसार
172.	जनजाति गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
173.	स्वच्छ भारत मिशन कार्य	जिला स्तर पर	प्रतिमाह
174.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 8, 12, 17)	जिला स्तर पर	प्रतिमाह
175.	नो बैग डे के अन्तर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार
	मार्च, 2024		
176.	खाटू श्याम जी मेला शिविर सीकर	राज्य स्तर	मेले के अनुसार
177.	ऑर्गेनाइजिंग कमिश्नर सभा	जयपुर	06 से 08.03.2024 तक
178.	दिव्यांग गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	15.03.2024 तक
179.	अनाथालय गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	15.03.2024 तक
180.	पालनहार गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	15.03.2024 तक
181.	अनुसूचित जाति स्काउट/ गाइड प्रशिक्षण शिविर	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	15.03.2024 तक
182.	जनजाति गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	15.03.2024 तक
183.	ग्रामीण गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	15.03.2024 तक
184.	स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत नं. 1	21 से 25.03.2024 तक
185.	सचिव/सर्कल ऑर्गेनाइजर्स सभा	मण्डल स्तर पर	31.03.2024 तक
186.	जिला कार्यकारिणी सभा	जिला स्तर पर	31.03.2024 तक
187.	प्लानिंग कमेटी	रा.मु. जयपुर	31.03.2024 तक
188.	राज्य कार्यकारिणी सभा	राज्य स्तर पर	31.03.2024 तक
189.	नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियाँ	ग्रुप/जिला/ मण्डल स्तर पर	प्रतिमाह
190.	स्वच्छ भारत मिशन पर कार्य	जिला स्तर पर	प्रतिमाह
191.	MOP पर कार्य (प्रोजेक्ट कार्य संख्या 11, 13)	जिला स्तर पर	प्रतिमाह

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

192.	नो बैग डे के अंतर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग गतिविधियों का संचालन	ग्रुप/स्थानीय संघ/जिला	प्रत्येक शनिवार

01. शांतिदूत- Messanger of Peace (MOP) प्रोजेक्ट सतत विकास गोल्स की सूची संलग्न है।

1. गरीबी का अंत	2. भूखमरी समाप्त करना
3. स्वस्थ जीवन एवं आरोग्य	4. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
5. लैंगिक समानता	6. शुद्ध जल एवं स्वच्छता
7. किफायती एवं स्वच्छ ऊर्जा	8. सम्मानजनक कार्य और आर्थिक विकास
9. उद्योग, नवाचार और अवसंरचना	10. असमानता में कमी,
11. संधारणीय शहर एवं समुदाय	12. सतत उपभोग एवं उत्पादन
13. जलवायु परिवर्तन	14. पानी में जीवन (जलीय जीव संरक्षण)
15. भूमि पर जीवन (वृक्ष, पक्षी, वन्यजीव संरक्षण)	16. शांति, न्याय और सुदृढ़ संस्थान
17. लक्ष्यों के लिए भागीदारी।	

विशेष :

1. राज्य सरकार द्वारा बजट प्राप्ति एवं तत्कालीन परिस्थितियों के मद्देनजर माननीय स्टेट चीफ कमिश्नर महोदय की सहमति से गतिविधियों के आयोजन एवं तिथियों में परिवर्तन संभव है।
2. उपर्युक्त वार्षिक कार्यक्रम दिनांक 28 मार्च, 2023 को आयोजित राज्य कार्यकारिणी समिति की सभा से अनुमोदित है।

• **(राज्य सचिव)**

2. स्थापित/रूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षण/प्रवेश कार्य संचालन सत्र 2023-24 के संबंध में।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/मा/माध्य/मा-द/अंग्रेजी माध्यम/प्रवेश/66181/2022-23 दिनांक : 18.04.2023 • मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक, समग्र शिक्षा (समस्त जिले) संस्थाप्रधान, महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालय (समस्त)। • विषयः स्थापित/रूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में शिक्षण/प्रवेश कार्य संचालन सत्र 2023-24 के संबंध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि स्थापित/रूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में सत्र 2023-24 हेतु नवीन प्रवेश प्रक्रिया/शिक्षण कार्य प्रारंभ करने हेतु दिशा-निर्देश एवं समय सारिणी प्रेषित की जा रही है। उपर्युक्तानुसार संबंधित विद्यालयों में लॉटरी प्रक्रिया द्वारा प्रवेश प्रारंभ करते हुए कार्यवाही को पूर्ण पारदर्शी रूप से संपन्न करवाया जाना सुनिश्चित करें।

प्रवेश कार्यक्रम एवं दिशा निर्देशों का क्षेत्राधिकार में अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करावें।

• संलग्न-उपर्युक्तानुसार।

• **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.,** निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

• **कार्यालय-निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर**

स्थापित/नवरूपांरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में प्रवेश हेतु दिशा-निर्देश

1. स्थापित/नवरूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में सत्र 2023-24 के लिए नवीन प्रवेश का कार्य दिनांक 03.05.2023 से प्रारंभ किया जाना है।
2. महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों जिनमें प्री-प्राइमरी कक्षाएँ एवं बाल वाटिकाएं संचालित की जा रही है उनमें कक्षा नर्सरी में समस्त सीटों पर नवीन प्रवेश दिया जाएगा तथा एल.के.जी. से यू.के.जी. गत वर्ष स्वीकृत सीटों में से रिक्त हुई सीटों पर ही प्रवेश दिया जा सकेगा।
3. पूर्व में सत्र 2022-23 तक स्थापित/संचालित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कक्षा 1 में समस्त सीटों पर नवीन प्रवेश दिया जाएगा तथा शेष पूर्व सत्र में संचालित/स्वीकृत कक्षाओं में तक गत वर्ष स्वीकृत सीटों में से रिक्त हुई सीटों पर ही प्रवेश दिया जा सकेगा।
4. पूर्व में सत्र 2022-23 तक स्थापित/संचालित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अंग्रेजी माध्यम में जहाँ कक्षा 1 से 5/कक्षा 1 से 8/ कक्षा 1 से 9/ कक्षा 1 से 11 का संचालन किया जा रहा था वहाँ सत्र 2023-24 में क्रमशः कक्षा 6/कक्षा 9/कक्षा 10/कक्षा 12 अंग्रेजी माध्यम का संचालन किया जाएगा व उक्त कक्षाओं में समस्त सीटों (नियमानुसार) पर नवीन प्रवेश दिया जाएगा।
5. वर्तमान में जिन महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम)/राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कक्षा 1 से 10 तक अंग्रेजी माध्यम में संचालन किया जा रहा है उनमें कक्षा 11 में प्रवेश प्रक्रिया के लिए बाद में अलग से दिशा-निर्देश जारी किए जाएँगे।
6. सत्र 2023-24 के लिए नवीन स्थापित/रूपान्तरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में कक्षा 01 से 05 में समस्त सीटों पर प्रवेश दिया जाना है। नवीन स्थापित/ रूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी यदि अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा नियमित नहीं रखना चाहते हो, तो उन्हें नजदीक के हिन्दी माध्यम के विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाएगा और अंग्रेजी माध्यम के इच्छुक विद्यार्थी अपने अध्ययन को उसी विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम में नियमित रख सकेंगे। यानि इन नवीन रूपांतरित विद्यालयों की कक्षा 01 में समस्त सीटों के लिए तथा कक्षा-02 से 05 में पूर्व से अध्ययनरत विद्यार्थियों से सत्र 2023-24 में अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत रहने का विकल्प प्राप्त किया जाए तथा विकल्प में सहमति देने के उपरान्त शेष रही सीटों के लिए प्रवेश प्राप्त आवेदन पत्रों में से किया जा सकेगा। यदि प्राप्त आवेदन पत्रों की संख्या शेष

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

रही सीटों से अधिक है तो प्रवेश लॉटरी प्रक्रिया अपना कर किया जाएगा।

7. महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए RTE के मानकों के अनुरूप सेक्शन निर्धारित किए गए हैं। कक्षा-01 से 05 तक 30 विद्यार्थी प्रति सेक्शन, कक्षा 6 से 8 में 35 विद्यार्थी प्रति सेक्शन, कक्षा 9 से 12 में 60 विद्यार्थी प्रति सेक्शन निर्धारित रहेंगे।
8. इन विद्यालयों में प्रवेश सेक्शन में निर्धारित संख्या के अनुसार ही दिया जा सकेगा। निर्धारित संख्या से अधिक आवेदन प्राप्त होने की स्थिति में प्रवेश लॉटरी प्रक्रिया अपना कर किया जाएगा।
9. राज्य सरकार के आदेश क्रमांक पं. 4 (15) शिक्षा-1/2022 जयपुर दिनांक 16.07.2022 की पालना में भामाशाह द्वारा गोद लेकर 50 लाख रुपये से अधिक राशि के कार्य करवाए गए हैं अथवा सम्पूर्ण विद्यालय भवन निर्मित कर जिसमें 50 लाख रुपये से अधिक राशि का व्यय हुआ है, दान दिया गया है। ऐसे भामाशाहों की अभिशंषा पर संबंधित विद्यालय की प्रत्येक कक्षा में अधिकतम 2 एवं सम्पूर्ण विद्यालय में प्रतिवर्ष अधिकतम 10 विद्यार्थियों को प्रवेश दिए जाने हेतु प्रवेश कोटा निर्धारित किया गया है। यह कोटा उक्त विद्यालयों में संचालित कक्षाओं की निर्धारित सीटों के अतिरिक्त सीटों के लिए होगा।
10. इन विद्यालयों में प्रति सैक्शन निर्धारित सीटों व उपर्युक्तानुसार (क्र.स-10) के अतिरिक्त किसी भी प्रकार के कोटे का प्रावधान नहीं रखा गया है।
11. प्रवेश संबंधी कार्य पूर्ण निष्पक्षता एवं पारदर्शिता से निष्पादित करवाए जाने हेतु सम्पूर्ण उत्तरदायित्व संबंधित प्रधानाचार्य का होगा जहाँ प्रधानाचार्य नहीं है, वहाँ वर्तमान पीईईओ/यूसीईईओ/संस्थाप्रधान उक्त कार्य करेंगे।
12. स्थापित/रूपांतरित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालयों (अंग्रेजी माध्यम) एवं राजकीय अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में सत्रः 2023-24 के लिए जिला स्तर पर जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय)-माध्यमिक शिक्षा कार्यालय में पदस्थापित अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी (शैक्षिक प्रकोष्ठ) नोडल अधिकारी होंगे तथा ब्लॉक स्तर पर मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में पदस्थापित अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वितीय (ACBEO-II) नॉडल अधिकारी होंगे, जिनके देखरेख में प्रवेश कार्य संपादित किया जाएगा। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वितीय का पद रिक्त होने की स्थिति में वहाँ यह कार्य संदर्भ व्यक्ति (आर.पी.) द्वितीय करेंगे।
13. सभी प्राप्त आवेदन पत्रों की पारदर्शी तरीके से लॉटरी निकालकर क्रमवार वरीयता सूची तैयार की जाएगी, जिसे संलग्न समय-सारिणी के अनुसार विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा किया जाएगा, जिससे भविष्य में रिक्त होने वाली सीटों को पूर्ण पारदर्शिता से भरा जा सके।
14. प्रवेश हेतु आवेदन विद्यालय समय में व्यक्तिशः अथवा शाला दर्पण पोर्टल के होम पेज के माध्यम से ऑनलाइन किए जा सकेंगे।
15. इस कार्यालय के आदेश क्रमांक शिविरा/मा./माध्य/मा-द/अंग्रेजी माध्यम/प्रवेश/66181/2022-23/112 दिनांक 16.07.2022 की पालना में रूपांतरित विद्यालय में पूर्व अध्ययनरत विद्यार्थियों में से उसी विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत रहने का विकल्प देने वाले सभी विद्यार्थी उसी रूपांतरित अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में अपना अध्ययन नियमित रख सकेंगे।
16. **प्रवेश कार्यक्रम हेतु समय सारणी-**

क्र.सं.	कार्यक्रम का विवरण	निर्धारित तिथि/ समयावधि
1.	विज्ञप्ति जारी करना	03.05.2023
2.	प्रवेश हेतु आवेदन पत्र लेने की समयावधि	04.05.2023 से 09.05.2023
3.	प्रवेश हेतु प्राप्त आवेदनों की सूची नोटिस बोर्ड पर चस्पा करना	11.05.2023
4.	लॉटरी निकालने की तिथि	12.05.2023
5.	लॉटरी के माध्यम से चयनित विद्यार्थियों की सूची विद्यालय के नोटिस बोर्ड पर चस्पा करना।	13.05.2023
6.	प्रवेश कार्य	15.05.2023 से
7.	शिक्षण प्रारम्भ	01.07.2023

- संलग्नः आवेदन पत्र का प्रारूप
- **(गौरव अग्रवाल) आइ.ए.एस.**, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, अजमेर।

Name of School_____

Admission Application Form for session : 2023-24

1. Name of the student.....
2. Father's Name.....
3. Mother's name.....
4. Date of birth:
   In Number.....
   In words.....

Colour Photo Size 3.5 cm x 2.5 cm

5. Age as on the date of admission.....year.....month .....day.....
6. Religion.....
7. Category.....(Gen./OBC/MBC/SC/ST)
8. Gender.....(Male/Female/Transgender)
9. Residential Address (Local)..... .....
10. Residential address (Permanent)..... .....
11. Parents contact number 1..... 2.....
12. E-mail Id:-.....
13. Occupation of a Father/Mother.....
14. Monthly Income of Father/Mother.....

Rajasthan Education Department

15. Name and address of Guardian (If any).....
16. Student's Aadhar Card No.
17. CWSN Status: .....(Yes/No)
    (CWSN- Children with special needs)
    If yes..... Type of Disability.....
18. Co-Curricular Activities.....
    (None/NCC/Scout/ Guide/NSS/CUB/Bulbul)
19. Sports certificate.....
    (National / State level / District Level)
20. Student's Bank Account Detail :
    Name of Bank.....Branch.....
    Account Number.....IFSC Code.....
21. Class to which admission is sought.....
22. Third Language (Class 6 to 8): .....

Detail of Last School/Class Studied

- Name of the School.....
- Whether IT is Govt./KV/JNV/ Recognized private..... (Yes/No)
- Former School's S.R. Number..... shala darpan Code (Only for Govt. Schools).....
- Former school's Last Class.....
- Last class result.....(Pass/Fail/Studying)

Enclosed

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

Declaration By the Parent

I hereby declare that the above information furnished by me is correct to the best of my knowledge. I shall be abided by the rules of school Also. The date and other particulars furnished by me respect to my ward.....are correct.

Date Signature of parent

For Office use only

1. Certified that I have checked the application form and relebant documents are found in order.
2. Please admit to class.....section.....
3. Alloted S.R. No.....

Signature of Addmission incharge

Signature of class teacher

Signature of principal

Rajasthan Education Department

शिविरा पञ्चाङ्ग

मई-2023

रवि		7	14	21	28
सोम	1	8	15	22	29
मंगल	2	9	16	23	30
बुध	3	10	17	24	31
गुरु	4	11	18	25	
शुक्र	5	12	19	26	
शनि	6	13	20	27	

मई 2023 ● कार्य दिवस-14, रविवार-04, अवकाश-15, उत्सव-02 ● 01 मई : नवीन सत्र : 2023-24 प्रारम्भ (परीक्षा परिणाम के आधार पर विद्यार्थियों का चिन्हीकरण कर उपचारात्मक शिक्षण प्रारम्भ)। **01 से 16 मई** : प्रवेशोत्सव-प्रथम चरण का आयोजन। **07 मई** : रवीन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती (उत्सव)। **08 से 15 मई** : पूरक परीक्षा का आयोजन (कक्षा - 09 व 11 हेतु)। **13 मई** : सामुदायिक बाल सभा का आयोजन-सार्वजनिक स्थल/चौपाल पर। **16 मई** : पूरक परीक्षा परिणाम की घोषणा एवं प्रगति-पत्र का वितरण। **17 मई से 31 मई** : ग्रीष्मावकाश। **22 मई** : महाराणा प्रताप जयन्ती (अवकाश-उत्सव)। **नोट :** संस्था प्रधान ग्रीष्मावकाश में मुख्यालय से बाहर हों, तो वह विद्यार्थियों को टी.सी. जारी करने हेतु मुख्यालय पर रहने वाले वरिष्ठतम शिक्षक को टी.सी. पर हस्ताक्षर करने हेतु अधिकृत करावें तथा इसका अनुमोदन संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी से कराकर संबंधित को पाबन्द करें, ताकि विद्यार्थियों को टी.सी. प्राप्त करने में कोई असुविधा न हों। **मई-2023** : मा.शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, उन्नयन एवं कौशल शिविर का आयोजन। ● प्रत्येक मंगलवार-IFA नीली गोली (कक्षा 6-12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1-5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार-विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन-अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें। ● DAG की पंचम बैठक का आयोजन इस माह में किया जाना है।

जून-2023

रवि		4	11	18	25
सोम		5	12	19	26
मंगल		6	13	20	27
बुध		7	14	21	28
गुरु	1	8	15	22	29
शुक्र	2	9	16	23	30
शनि	3	10	17	24	

जून 2023 ● कार्य दिवस-05, रविवार-04, अवकाश-24, उत्सव-02 ● 01 से 23 जून : ग्रीष्मकालीन अवकाश जारी। **21 जून** : अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस (अवकाश- उत्सव) : समस्त विद्यालयों में प्रात: 7 से 8 बजे तक उत्सव आयोजन। **24 जून :** SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक का आयोजन एवं सत्र पर्यन्त कार्य योजना का अनुमोदन। **24 से 30 जून :** प्रवेशोत्सव-द्वितीय चरण का आयोजन। इस अवधि में संस्था प्रधान एवं शिक्षकगण हाउस होल्ड सर्वेके आधार पर अब तक प्रवेश से वंचित/हार्ड कोर समूह के बच्चों का प्रवेश विद्यालय/आंगनबाड़ी में करवाए जाने हेतु विशिष्ट कार्य योजना के तहत नामांकन वृद्धि अभियान संचालित करेंगे। संस्था प्रधान द्वारा समस्त स्टाफ से नवीन समय विभाग चक्र के अनुरूप सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र के लिए कक्षा शिक्षण हेतु विषय योजना का निर्माण करवाया जाकर योजना का परिवीक्षण किया जाएगा। उक्त अवधि में विद्यार्थियों को टी.सी./नव प्रवेशित विद्यार्थियों का एस.आर. रजिस्टर में पंजीयन सम्बन्धी कार्यों का समुचित निष्पादन किया जाएगा। **28 जून :** भामाशाह जयन्ती (उत्सव) राज्य स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन। **29 जून** : ईदउल जुहा (अवकाश चन्द्र दर्शनानुसार)। **30 जून** : SDMC की कार्यकारिणी समिति की बैठक में अनुमोदित कार्य योजना को अन्तिम रूप दिया जाना। **जून-2023 :** मा.शि. बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतियोगिता का राज्य स्तर पर आयोजन। ● प्रत्येक मंगलवार-IFA नीली गोली (कक्षा 6-12), IFA गुलाबी गोली (कक्षा 1-5) (समग्र शिक्षा) ● प्रत्येक शनिवार-विद्यालय में NO BAG DAY रहेगा। इस दिन माह के शनिवार हेतु नियत की गई गतिविधियों के आधार पर अध्ययन-अध्यापन यथासंभव प्रक्रिया संचालित की जाएगी। सप्ताह में आने वाले सभी जयन्तियां/उत्सव/प्रतियोगिताएं व पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाएं विद्यालय में NO BAG DAY यानी उसी सप्ताह के शनिवार को आयोजित किए जावें।

मातृ देवोभवः पितृ देवोभवः

❐ डॉ. संगीता पुरोहित

सत्र 2022-23 के आरम्भ में प्रवेशोत्सव के दौरान मजदूरी कर जीवनयापन करने वाले परिवार की एक बालिका का विद्यालय में कक्षा 6 में दाखिला करवाया गया। विद्यालय से बालिका की ढाणी की दूरी अधिक होने के कारण सुबह समय पर पहुँचाने व छुट्टी के समय वापस घर ले जाने का कार्य उसके पिता करते थे। बालिका पढ़ने में होशियार थी। बालिका से जानना चाहा कि वो क्या बनना चाहती है? उसका उत्तर था ''जो पापा बनाएँगे।'' ''क्यों पढ़ रही है?'' ''पापा चाहते हैं कि मैं पढ़ाई करूं।'' उत्तर सुनकर पीछे छूटे बपचन की तस्वीर सामने आ गयी जब माँ ने प्राथमिक शिक्षा पूर्ण होने पर पढ़ाई छुड़वाने की घोषणा की और पिताजी ने ऑफिस से छुट्टी लेकर कहा कि ''बच्चे ही नहीं पढ़ेंगे तो मैं ऑफिस जाकर क्या करूंगा'' कहते हुए शान्ति से माँ की बात का प्रतिकार किया।

सार्वभौमिक सत्य है अबोध अवस्था में बच्चा नहीं जानता कि क्यों पढ़ना हैं? क्या पढ़ना है? क्या बनना है? माँ बच्चे को प्रथम गुरु के रूप में संस्कार और ज्ञान देती है किन्तु उस ज्ञान को दिशा देने का कार्य पिता करता है। माँ के पास प्राप्त संसाधनों में परिवार के लिए व्यवस्था बनाने का समर्पण होता है किन्तु पिता की जिम्मेदारी संसाधन जुटाने की होती है। यही कारण है कि पिता का अधिकांश समय संतान के जीवन-यापन व सुख-सुविधाओं की पूर्ति हेतु संसाधन जुटाने में निकल जाता है। एक माँ के साथ संतान की आत्मीयता, सम्प्रेषण, तादात्म्य प्राकृतिक रूप से स्थापित होता है, वहीं अपनी संतान के प्रति जीवन की समस्त इच्छाएँ आकांक्षाएं समर्पित करने वाला पिता परिवार में 'सख्त रूखे सूखे बाबूजी' की भूमिका में रह जाता है। समझ ही नहीं पाते कि जीवन के अनमोल क्षणों को पिता रूपी व्यक्ति अपने लिए जी सकता था, संचित द्रव्य को स्वयं पर खर्च कर सकता था, पर पिता दाता की भूमिका में वह सब अपनी संतान को देता है।

मातृदेवोभवः पितृदेवोभवः का भाव भारतीय संस्कृति का आधार है। माता-पिता को सतयुग, त्रेता, द्वापर में देवता मानने की परम्परा थी। कालान्तर में समय बदला, मान्यताएं बदली। पौराणिक मीमांसा के आधार पर वर्तमान युग को कलि की प्रधानता के आधार पर कलियुग कहा गया है। स्वाभाविक है कलि का प्रभाव रिश्तों पर भी पड़ना, इन रिश्तों के बदलते स्वरूप में आधारभूत रिश्ता माता-पिता का है जिसे संतान के साथ परिवर्तित रूप में देखा जा सकता है। माँ ईश्वर की बनाई अद्भुत रचना है जिसकी सबसे बड़ी विशेषता लचीलापन है। अतः इस अद्भुत क्षमता के कारण माँ हर युग में सभी परिस्थितियों में सामंजस्य बना ही लेती है किन्तु पिता का लचीलापन कहीं भी सामने नहीं आता। पिता का सामंजस्य नेपथ्य की वस्तु है। यहाँ समझने योग्य तथ्य प्रकृति की बनावट का है। प्रकृति ने पिता को नारियल जैसा सख्त स्वरूप प्रदान किया है, बाहर से बिलकुल रूखा-सूखा परन्तु अंदर से उष्णता में भी शीतलता छिपाए जीवन दायिनी शक्ति के रूप में। पिता को परम पिता परमात्मा ने अपना अक्स प्रदान कर पृथ्वी पर एक मजबूत चट्टान के रूप में भेजा है जिसकी छत्रछाया में संतान संसार के सारे दुख तकलीफों से महफूज रह सके।

कहने को तो एक नाम हैं 'पिता' पर साथ ने बहुत गहरे हैं। आरंभ होता है ईश्वर के साक्षात् आशीर्वाद का जब डेढ़ इंच के गुणसूत्र की परिणति शिशु के आकार से बढ़कर 6 फीट की काया के रूप में विकास करती है। इस विकास के क्रम में प्रत्येक कदम पर पिता का मजबूत हाथ अप्रत्यक्ष रूप से संतान को जीवन पथ पर आगे बढ़ने में सहारा देता है, उन रूपों में जिनकी व्याख्या संभव नहीं है। बस कुछ शब्दों में बात समेटी जा सकती है, यह कहते हुए कि अबोध बालक की कोमल सी अंगुली पकड़ कर चलाने वाला हाथ पिता का हैं, जमाने की ठोकरों से उत्पन्न हताशा व निराशा को आशा में बदलने वाला नाम पिता का है, किंमकर्त्तव्यविमूढ़ अवस्था में पथ प्रशस्तक का काम पिता का है, चारों तरफ फैले घने अंधकार को चीरकर रोशनी की एक झलक पिता की हौसला अफजाई से ही मिलती है। सब कुछ बहाकर ले जाने को आतुर सैलाब को पार करने की नौका-पतवार का नाम भी पिता ही है। बारिश में मस्ती से झूलते बच्चे पर ओले गिरने से पूर्व छाते के रूप में तना हाथ पिता का ही हो सकता है। अपनी इच्छाओं को अधूरा छोड़ कर संतान की इच्छाओं को पूरा करने वाला महादानी दाता पिता के अतिरिक्त भला कौन होगा?

समय अपने रथ पर सवार निर्बाध गति से आगे बढ़ते हुए एक और दृश्य बिम्ब बनाता चलता है। इस दृश्य में प्रशस्त भाल, दर्प से युक्त गर्वीली आँखे, मजबूत फौलादी जिस्म, वज्र सी छाती, हाथी जैसी चाल और वाणी में शेर सी दहाड़ कुछ कमजोर पड़ने लगती है। आवश्यकता है इस कमजोर पड़ती आवाज और धुंधलाती दृष्टि के साथ कदमताल कर सुख-दुख साझा करने की, क्योंकि संतान पिता की इच्छा, आकांक्षा, कल्पना, चेतना का सहज विस्तार रूप है। वास्तव में पिता के मजबूत कंधों पर बैठकर ही संतान (बेटा हो या बेटी) आसमान की ऊँचाइयों को छूने का स्वप्न साकार करती है। विचारणीय है कि यह कंधे आगे बढ़ने का आधार है ऊँचाई पर पहुँचने की मात्र सीढ़ी नहीं।

शर्मनाक स्थिति तब बनती है जब मूल्यहीनता के आगोश में घिरी युवा पीढ़ी पिता के बलिष्ठ कंधो पर चढ़कर आसमान की ऊँचाईयों को छूने के गर्व में स्वयं माता-पिता से यह पूछ बैठती कि आपने हमारे लिए किया क्या था? कितनी गहरी विडम्बना है कि कुछ देने वाला व्यक्ति तो बता सकता है पर सबकुछ देने वाला पिता अपनी संतान को कैसे बताए कि मेरे जीवन का प्रत्येक पल मैंने तुम्हें दिया है। पितृ रूप में प्रत्येक व्यक्ति अपने फर्ज को निभाने में कमी नहीं करता। आवश्यकता है हम शिक्षा के माध्यम से ऐसी संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करें जो संस्कारों की छाया में रिश्तों का सम्मान करे सम्पत्ति के आधार पर नहीं।

हम अपने विद्यालयों में नैतिक शिक्षा पर चर्चा करते हुए भावी पीढ़ी में लुप्त हो रहे संस्कारों को पुनः स्थापित करते हुए उनमें यह भाव उत्पन्न करें कि पाश्चात्य जगत की तर्ज पर केवल एक दिन पिता के नाम नहीं हो सकता, यह जीवन, मूल्य संस्कार, नाम सभी कुछ पिता की विरासत है इसके लिए पूर्ण समर्पण होना चाहिए, एक दिवसीय समर्पण नहीं। क्योंकि संतान के सपनों में अपने धुंधले सपनों की छवि देखते हुए सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आयाम प्रदान करने वाला काम पिता ही कर सकता है। आज हमारे समय और समाज की महत्ती आवश्यकता है कि हम विद्यालयों में संस्कारों के बीज बोएं जिससे पल्लवित और पुष्पित होकर हमारी भावी पीढ़ी मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः के भारतीय संस्कृति के सुन्दर पृष्ठ को अपनी जीवन रूपी पुस्तक का अमिट पृष्ठ बना सके।

संपादक शिविरा
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो.न.: 9950956577

Rajasthan Education Department

MAHATMA GANDHI GOVERNMENT SCHOOL, SIKAR

Mahatma Gandhi Govt. School-A Big Leap For Quality Education

❐ **Sangeeta**

Mahatma Gandhi Govt School (MGGS) were initiated by Govt. of Raj. in June 2019 to mark the 150th birth anniversary celebration of father of the nation, Mahatma Gandhi. The core objective is to provide and promote oppurtunity of english medium education to all the students especially for the deprived sections of our society where english medium education is still no less than a dream.

Initially Mahatma Gandhi Govt. schools were set up at district Headquarters and Staff selection for MGGS schools were through walk-in-interview, for that overwhelming response came from teachers and more than ten times applicants came forward. Seats were fixed for every class i.e 1st to 5th are 30 students and 6th to 8th are 35 students and 9th to 12th are 60 students. Because of huge demand, admissions were taken through lottery system. Students from reputed Private English medium schools took admission in large number. MGGS Schools also provide all the facilities/benefits given in Hindi Medium Schools like

- Mid-day-meal scheme(class Nursery to 08th)
- Bal Gopal milk scheme(class Nursery to 08th)
- Free text books (for every student)
- Free uniforms (for every student)
- Transport voucher scheme
- Free bicycle (for eligible students)
- Regular health check-up
- Gargi award
- Various scholarship schemes

At the same time effective supervision of Principal and able guidance of Education Department officials provided the much needed impetus for providing quality education, even Education Minister Sir kept a close eye on MGGS functioning and always provided the much needed infrastructure and sports grants within one go.

After getting great response MGGS schools are opened at block level and further even in selected villages also. Science stream is opened in the session 2022-23 in all the District Headquarters MGGS schools. Pre Primary section is also opened in session 2021-22 which is also a great initiative and there was huge demand for admission in that section. It also helps to build-in sound base of the child and there is no dearth of funds for Pre Primary section. Playing and Amusement equipments for kids are available in plenty and truly pre primary students are learning by playing method.

For overall personality development MGGS emphasized not only on academics but also gave equal importance to cultural, sports, art, yoga activities. Inter House competitions are conducted regularly and students also participate in inter district/state competitions. MGGS Sikar right from the beginning work with motto "providing quality education with difference". MGGS SIKAR excelled in and setup new landmarks in every sphere of education. The present strength of MGGS Sikar is 593. MGGS Sikar's campus is lush green, coloured tiled pavements with railing on both sides, different varieties of flowers, plants and trees which make whole campus quite appealing and conducive for education with free and fresh mind. It has a well equipped computer lab, science laboratory and library with Gandhi gallery.

In academics out of total 46 students in first batch of class 10th, 41 students scored above 60% and only 05 passed with second Division and 02 students of class 8th were among the top twenty students of Sikar district. A total of three students were selected for inspire award.

MGGS Sikar has a Basketball court with fiber board and a Badminton court. Yoga activities, Physical exercises, Meditation, Aerobics, Marshal art, Tug of war are the other activities conducted regularly. MGGS Sikar hosted district level yoga Olympiad in session 2021-22 and 2022-23 and it was the champion in both sessions. MGGS Sikar yoga team participated in state level yoga Olympiad held in Dudu jaipur and GSSS Bhinasar Bikaner and declared winner in under 19 year girls group. yoga activities are star attraction and always admired by every visitor. Yoga is a passion for MGGS Sikar Students. A total of 30 students participated in state level competition in Yoga, Carrom, Cycling, Athletics, Shooting and Boxing .

Cultural Activities Like Rangoli Making, Drawing, Painting, Playing musical instruments like Tabla and Harmonium, Poem Recitation, Debate, Play In Hindi and English are conducted Regularly and inter house competitions are also taking place quite oftenly. Special emphasis is given on traditional dances like Ghoomar, Kathputli, Kalbelia, Hip-hop, Dandia, Bhangra and students give their performances in the various district level cultural programs and always get high appreciation. Morning assembly is conducted in very nice and efficient manner blend with a different prayers (Hindi and English), newspaper reading, poem recitation, at times yoga , aerobics, hula hoop, motivational lecture. Every year MGGS Sikar team display their yoga and aerobic skills in District level Republic and Independence Day celebrations. The Tableau (*Jhanki*) of MGGS Sikar stood first in Sikar District Republic Day celebration. I consider myself quite fortunate to be part of MGGS Sikar and thank almighty for giving me such a sincere and hard working staff.

Today in Rajasthan all the MGGS schools have become a center of excellence and brand itself. MGGS Schools are the star attraction not only for students and their parents but also for the staff working in it and giving stiff competition to the renowned reputed English Medium schools. In true words, establishment of MGGS is a perfect homage to our father of nation. It seems like a dream come true MGGS schools proved to be one of the best flagship programme launched for the welfare of society by the state govt. of Rajasthan.

Principal
Mahatma Gandhi Govt. School, Bajaj Road, Sikar
Mob. : 7340314682

नवाचारों से मिली अप्रत्याशित सफलता

❒ राजपाल

इस संसार में और इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर सभी जीव जन्तुओं और प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य अपनी बुद्धि के कारण ही माना गया है, इसी बुद्धि और अपनी विविधताओं के बल पर मनुष्य अपने आदिमानव रूप से निकलता हुआ वर्तमान रूप में सर्वश्रेष्ठ मानव, हर क्षेत्र में तरक्की करता हुआ हमें दिखाई देता है।

इस धरा पर वैसे तो सभी मनुष्य जाति का चहुँमुखी विकास में योगदान होता है, परन्तु मुख्य योगदान एक पथ प्रदर्शक, मुखिया या शिक्षक का होता है। एक आदर्श शिक्षक अपने विद्यालय में विभिन्न नवाचारों के माध्यम से अपने विद्यालय का सर्वांगीण विकास करने में सफल हो सकता है।

कहते हैं आज के विद्यार्थी आने वाले कल (भविष्य) के कर्णधार होंगे। मैं शिक्षा विभाग में प्रथम बार 2013 में अध्यापक पद पर पदस्थापित हुआ तब से लेकर वर्तमान में, मैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय फकीरवाली में, हिंदी व्याख्याता पद पर कार्यरत हूँ, मैंने अक्सर महसूस किया है कि हम जैसा चाहें, बच्चों को हम वैसा ही बना सकते हैं।

जब प्रथम दिवस, मैं विद्यालय में गया तो मैंने देखा विद्यार्थी विद्यालय में देरी से आ रहे हैं, गणवेश में नही है, प्रार्थना सभा पूर्ण रूप से अनुशासित, व्यवस्थित नही हैं। मैंने सभी स्टाफ साथियों की मीटिंग करके विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को समय पर पूर्ण तैयारी के साथ आने पर बल दिया। पूरी रणनीति बनाकर, प्रत्येक कक्षा की वोटिंग से मॉनिटर बनाए गए, प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय मॉनिटर बनाए, प्रत्येक कक्षा में 1-1 प्रभारी बनाकर सभी विद्यार्थियों पर वरिष्ठ कक्षा में से 2 विद्यालय प्रभारी (वॉलिन्टीयर) बनाए। इसके पश्चात वरिष्ठ कक्षा को लेते हुए प्रार्थना व्यवस्था हेतु दल बनाए गए जो दैनिक प्रार्थना व्यवस्था को विद्यालय के एक शिक्षक के सान्निध्य में, जिस दल की प्रार्थना व्यवस्था में बारी होती, वो 1 दिन पूर्व प्रार्थना रजिस्टर में रूपरेखा अनुसार प्रार्थना करवाते जैसे: राष्ट्रगीत, प्रार्थना, श्लोक, प्रतिज्ञा, दैनिक समाचार, सामान्य ज्ञान प्रश्नोतरी, योगाभ्यास, स्वच्छता जाँच, उद्बोधन, सभी की उपस्थिति आदि। कार्यक्रम सभी कक्षा में मॉनिटर, कक्षा प्रभारी और विद्यालय प्रभारी की व्यवस्था एक महीने तक रखी गयी, पूरे महीने सबसे अच्छा कार्य करने वाले को पुरस्कृत किया जाता साथ ही कक्षा या विद्यालय का प्रभारी बनाया जाता, दूसरे महीने कक्षा में वोटिंग से नए मॉनिटर, नए प्रभारी बनाते और इस प्रकार सभी कक्षा के विद्यार्थियों का मॉनिटर और प्रभारी में नम्बर आ जाता, इससे सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि सभी में नेतृत्व क्षमता, योग्यता, आगे बढ़ने की ललक महसूस की गयी, धीरे-धीरे यह क्रम चलता रहा। प्रार्थना व्यवस्था सुरुचिपूर्ण, व्यवस्थित होने से सभी विद्यार्थी समयबद्ध, अनुशासित होकर प्रार्थना सभा (विद्यालय) में आने लगे। यह सब गाँव में प्रचार होने से बच्चों के नामांकन, ठहराव में अपेक्षित उत्तरोत्तर सुधार हुआ।

प्रार्थना व्यवस्था के साथ-साथ यह भी देखा गया कि कक्षा में विद्यार्थी का शिक्षण सुरुचिपूर्ण नहीं है। उसके पीछे के कारण जाने तो, कक्षा में स्वच्छता का अभाव होना, कक्षा में प्रेरणास्पद श्लोक/महान विचार, महान पुरुषों के चित्र, नक्शे आदि का न होना पाया गया।

इसके लिए मैंने सभी की बैठक लेकर सभी कक्षाध्यापक के सानिध्य में कक्षा मॉनिटर के निर्देशन में कक्षा में दैनिक ड्यूटी 2-2 विद्यार्थी की 30 विद्यार्थी है तो प्रथम पखवाड़े में 2×15= 30, द्वितीय पखवाड़े में 2×15 रोल नं. अनुसार ड्यूटी लगायी गयी। उक्त 2 विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षा में साफ-सफाई, पानी कैम्पर व्यवस्था, कक्षा में अन्य व्यवस्था आदि करना इनका कार्य रहता। इससे सभी विद्यार्थियों में स्वयं के कार्य के प्रति जवाबदेही तय हुई, इनमें स्वच्छता, सेवा, समर्पण, अनुशासन के गुण विकसित होने लगे।

तत्पश्चात एक प्रमुख समस्या यह भी महसूस हुई, कि अधिकतर शिक्षक क्षेत्रीय या स्वयं की बोली बोलते थे, विद्यार्थी भी ऐसा करते पाए गए, हम सभी ने स्टाफ व संस्थाप्रधान के सान्निध्य में समय-समय पर बैठक की और विद्यालय समय में सभी अनिवार्य रूप से कक्षा 5 से 12 तक हिंदी भाषा में बात करे ताकि विद्यार्थियों का शुद्ध उच्चारण हो सके, साथ हिंदी भाषा शिक्षण (सुबोपलि) को अपनाकर भाषागत समस्या हल होगी और हिंदी के साथ-साथ सामाजिक, विज्ञान आदि विषय को समझने और लिखने में विद्यार्थी उत्तरोत्तर सहज होंगे, ऐसा धरातल पर लागू करने से और सभी के सहयोग से सभी विद्यालय में हिंदी भाषा में बोलने लगे और धीरे-धीरे, विद्यालय के विद्यार्थियों में हिंदी बोलने से हिंदी व अन्य विषयों में सुधार के साथ-साथ शिक्षण में रुचि जागृत हुई। दूसरी ओर कक्षा शिक्षण में मेरे द्वारा सर्वप्रथम वर्णमाला का शुद्ध उच्चारण व शुद्ध लेखन करवाने के साथ-साथ मुख्य-मुख्य हिंदी व्याकरण, कक्षा स्तर के अनुसार करीब 15 दिन में उचित हाव-भाव उदाहरण, नियम, कविता व कहानियों, शिक्षण सामग्री, चार्ट, मॉडल आदि विद्यार्थियों के साथ मिलकर बनवाकर करवायी गयी।

इस प्रकार से नवाचार करने से विद्यार्थी शुद्ध उच्चारण, लेखन व व्याकरण सीखते हुए, हिंदी विषय को सहज रूप में पढ़ने लगे और हिंदी को सहज, सरल मानकर अन्य विषयों में भी रुचि से पढ़ने लगे और बच्चों में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक आने के साथ-साथ अन्य विषयों में भी सर्वाधिक अंक आने लगे, वर्षभर इस प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप सभी कक्षाओं में बच्चों के इस नवाचार से, पिछले 6-7 वर्षों से विशेषकर बोर्ड कक्षाओं में बच्चों के अंक 75 प्रतिशत से अधिक, 90 प्रतिशत से अधिक तक लगातार आ रहे हैं। उक्त सुधार के पीछे अन्य कारण भी रहे हैं, जैसे नियमित विषयवस्तु सुनना, कक्षा परख लेना, विभिन्न तरह से कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने पर पुरस्कृत करना, हमेशा से कक्षा 5,8,10,12 में क्रमशः 75 प्रतिशत से अधिक अंक आने पर 1100-1100 रुपये पुरस्कार रूप में मेरे द्वारा प्रदान किए जाते रहे हैं, परन्तु वर्तमान सत्र 2022-23 में

Rajasthan Education Department

एक और नवाचार कर उक्त कक्षाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक आने पर गोल्ड मेडल और 95 प्रतिशत से अधिक अंक आने पर विद्यार्थी की इच्छा पर भारत में कहीं भी, निःशुल्क हवाई यात्रा करवायी जाएगी, क्रमशः ऐसे नवाचार से मेरे विषय में ही नहीं बल्कि सभी विषयों व सभी कक्षा के परीक्षा परिणामों में उत्तरोत्तर सफलता प्राप्ति में अप्रत्याशित सफलता प्राप्त हो रही है।

इसी प्रकार विद्यालय अन्य सहशैक्षिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की नीरसता या कम रुचि को ध्यान में रखते हुए, हमने सभी को साथ लेकर रणनीति बनाई, बच्चों को शनिवारीय (नो बैग डे) विशेष दिवस के साथ ग्रीष्मकालीन व शीतकालीन अवकाशों में सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ, विशेष दिवस मनाना, सार्वजनिक स्थलों पर नुक्कड़ नाटकों, सभाओं, कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों व जनहित की योजनाओं का प्रचार-प्रसार करने के साथ-साथ, सार्वजनिक स्थानों की सफाई, पौधारोपण करवाना, समाज सेवा शिविर लगाना, एनएसएस कैम्प करवाना, स्काउट कैम्प करवाना, बच्चों की खेलों में रुचि अनुसार गाँव से 2 कोच महेन्द्र पारीक व जगदीश कुमार और विद्यालय के शारीरिक शिक्षक सुआलाल मीणा व स्वयं एक टीम गठित कर, खेलों से संबंधित सामग्री एकत्र करके विद्यालय में व विद्यालय के साथ-साथ पंचायत फकीरवाली खेल मैदान में शाम के समय विद्यालय के बच्चों के साथ उपस्थित होकर निरन्तर अभ्यास कराने से सत्र 2022-23 में कक्षा 8 से समर, कक्षा 12 से अनिल व रमेश तीनों फुटबाल खेल में स्टेट विजेता बने, उक्त प्रयास लगातार जारी है।

खो-खो टीम बालिका वर्ग पंचायत स्तर पर श्रेष्ठ रही पर ब्लॉक स्तर पर द्वितीय स्थान पर रही, निकट भविष्य में खेल में पूरी पंचायत के साथ-साथ सभी के सहयोग से उत्तरोत्तर श्रेष्ठ परिणाम मिलने की उम्मीदें भी है।

गाँव में सभी युवाओं को प्रेरित कर स्वामी संतोषानंद खेल व पर्यावरण समिति बनाई, जो गाँव में खेल मैदान बनाकर, समुचित व्यवस्था के साथ लगातार सेवाएँ प्रदान कराता रहा है। यह समिति खेल, पर्यावरण के साथ-साथ गाँव की गंभीर समस्याओं के निस्तारण में सदैव अग्रिम रही है। समिति समय-समय पर रक्तदान शिविर लगाती है।

पूर्व में यह देखा गया कि विद्यार्थी व ग्रामीण जन राज्य सरकार की योजनाओं के प्रति जागरूक बहुत कम थे, तब उक्त समस्या को ध्यान में रखते हुए हमने समय-समय पर विद्यार्थियों व ग्रामवासियों को जागृत किया। इसी जागृति के फलस्वरूप विद्यालय के विद्यार्थियों को राज्य सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं का संपूर्ण लाभ दिलाया जाता है। हर वर्ष कक्षा 1 से 5 अल्पसंख्यक छात्रवृत्ति व 6 से 12 तक में श्रमिक कल्याण छात्रवृत्ति, कक्षा 10 में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त (10 से 15 तक छात्राएँ हर वर्ष) छात्राओं का बालिका प्रोत्साहन योजना में आवेदन करवाया जाता है।

अन्य में राजश्री योजना, भामाशाह योजना, चिरंजीवी योजना, आपकी बेटी, सुकन्या योजना आदि ऐसी तमाम योजनाओं के आवेदन स्थानीय विद्यालय के विद्यार्थियों को प्रेरित कर भरवाएँ जाते हैं। सत्र 2022-23 में कक्षा 8 में करीब 9 विद्यार्थियों का नेशनल मीन्स कम मेरिट स्कॉलर शिप के आवेदन भरवाकर परीक्षा में बैठाया था, परीक्षा परिणाम में सफल होने पर, सफल विद्यार्थियों को कक्षा 9 से 12 तक में, 12000×4 वर्ष =48000 रु. का लाभ मिलेगा। विद्यालय में गरीब, असहाय, अनाथ बच्चों का परीक्षा शुल्क, कपड़े, जूते, शिक्षण सामग्री हर वर्ष ऋतु अनुसार मेरे द्वारा वितरित की जाती है, साथ ही शिक्षकों को प्रेरित कर विद्यार्थियों के हित में कदम उठाए जाते हैं। विद्यार्थियों को प्रेरित कर किचन गार्डन व पौधारोपण करवाया जाता रहा है। अभी 8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर, कक्षा 12 के विदाई कार्यक्रम में 51 विद्यार्थियों के हाथों से 51 पौधे व 50 अन्य विद्यार्थियों, अतिथियों के हाथों से कुल 101 पौधे लगाकर एक नवीन पहल और नवाचार किया गया।

विद्यालय मे वर्तमान में 300 सौ से अधिक विद्यार्थी है। प्रत्येक वर्ष विद्यालय के नामांकन में 15 से 20 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी होती रही है। स्थानीय विद्यालय में पोषाहार व्यवस्था दल अनुसार संपादित की जाती है। कक्षा 1 से 8 के सभी विद्यार्थी विद्यालय में दल व्यवस्था के निर्देशन में पंक्तिबद्ध होकर, हाथ धोकर उचित स्थान पर बैठकर भोजन मंत्र के साथ भोजन करते हैं। कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थी जिनका घर बहुत दूर है या किन्हीं कारणों से भोजन नहीं करके आते हैं। उन विद्यार्थियों की भोजन व्यवस्था की जाती है। सभी शिक्षक समय-समय पर बच्चों के साथ बैठकर भोजन करते हैं। विद्यालय के समस्त स्टाफ व गाँव के भामाशाह को प्रेरित कर विद्यालय में करीब 2 लाख रुपये एकत्र कर जल मंदिर का निर्माण करवाया गया है। गाँव के भामाशाह को प्रेरित कर करीब 2 कमरें व बरामदों का पुनः निर्माण व उठाव करवाया गया। विद्यालय में बालिका शौचालय बनवाया गया, इस क्रम में गाँव व स्टाफ को समय-समय पर प्रेरित कर विद्यालय हित में अनेक सेवाओं के साथ-साथ विद्यालय के ज्ञान संकल्प पोर्टल पर अधिक से अधिक दान करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है और इसमें विद्यालय के विद्यार्थी, स्टाफ व गाँव के लोग लगातार सहयोग कर रहे हैं। हाल ही में संस्था प्रधान व विद्यालय विकास एवं प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ बैठक में तीन खंडहर कमरों को तोड़ने के साथ-साथ इनके स्थान पर तीन नए कमरे बनाने का प्रस्ताव तैयार किया, इसके साथ एक बड़े कमरे का प्रस्ताव के साथ दो कमरों का प्रस्ताव समग्र शिक्षा अभियान को बनाकर भेजा गया है। चार कमरों में से दो कमरों का प्रस्ताव वर्तमान विधायक महोदय व दो कमरों का प्रस्ताव सांसद महोदय को सादर प्रेषित किए जा चुके हैं। इसके साथ ही विद्यालय स्टाफ व भामाशाह को प्रेरित कर कार्यालय जो कि जर्जर अवस्था में था, को करीब एक लाख रुपये से तैयार करवाया गया है। विद्यालय विकास में उक्त नवाचारों के साथ-साथ हमारे प्रयास निरन्तर जारी है।

पूर्व कई वर्षों से नित नवाचारों से विद्यालय के शैक्षिक के साथ-साथ सहशैक्षिक गतिविधियों में उत्तरोत्तर सफलता प्राप्त हो रही है। वर्तमान में ग्राम पंचायत फकीरवाली के उच्च माध्यमिक विद्यालय में उत्तरोत्तर चहुँमुखी विकास से दूर-दूर तक अन्य पंचायत के विद्यार्थी भी यहाँ पढ़ने आते हैं।

और यह सब शिक्षा के पावन मंदिर में किए नित नवाचारों का ही परिणाम है।

प्राध्यापक (हिंदी)
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, फकीरवाली, तह. पदमपुर, श्रीगंगानगर (राज.)
मो.न.: 9509490621

Rajasthan Education Department

वैश्विक आपदा का समाधान

❒ डॉ. कुमुद पुरोहित

संस्कृत साहित्य में आपदा प्रबंधन के कई महत्त्वपूर्ण सूत्र है। इसमें हमें आपदा के लिए पहले से सचेत रहने की शिक्षा प्रदान की गई है।

चिन्तनीया हि विपदाम आदावेव प्रतिक्रियाः।
न कुपखनन युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे।।

आपदाओं के मूल में विश्लेषण करे तो कहा जा सकता है कि धरा के संसाधनों का आवश्यकता से अधिक दोहन एवं उन पर अधिकार करने की अनाधिकार कामना ने हमारे जीवन अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है। इसके पीछे लोभ है।

निः स्वोवष्टि शतं शती दशशतं लक्ष सहस्राधिपः
लक्षेशः क्षितिपालतां क्षितिपच्चिक्रेशतां वाञ्छति।
चक्रेशः पुरिन्द्रतां सुरपतिः ब्राह्मं पदं वाञ्छति
ब्रह्मा शैवपदं शिवो हरिपदं चाशावधि को गतः।।

संसार सागर से तरने के लिए अनाधिकार किसी व्यक्ति की कोई वस्तु नहीं लेने तथा हृदय को कष्ट पहुँचाने वाले वाक्यों का उच्चारण ना करने की बात कही गयी है।

कस्यचित् किमपि नो हरणीयं
मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम्।
श्रीपते पदयुगं स्मरणीयं
लीलया भवजलं तरणीयं

वर्तमान समय के बढ़ते मानसिक तनाव तथा संघर्षों से मुक्ति के लिए मोह व माया के बंधनों से मुक्त होने का उपाय बताया गया है।

अनुदिन अनुतापेन आस्मि अहं राम तप्तः
परम करुण मोह छिन्धि माया समेतम्।
इदं अतिचपलं में मानसं दुर्निवारं
भवति च बहु खेदः त्वां विना धाव शीघ्रत्

माया का यह भ्रम कि पदार्थ जगत ही वास्तविक है; व्यक्ति में असंतोष को जन्म देता है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है। मनुष्य समृद्धि तथा विपत्ति दोनों में ही समरूप व्यवहार करें। समृद्धि में अहंकार तथा निर्धनता में विलाप करने की अपेक्षा मनुष्य को दोनों ही परिस्थितियों में समरूप व्यवहार कर संतुलित संतोषी जीवन व्यतीत करना चाहिए।

उदये सविता रक्तः रक्तः या अस्तमने तथा।
सम्पत्तौ च विपत्ती च साधुनां एकरूपता।।

हिंसा, आतंकवाद आज के युग की बड़ी विपत्ति है, जिसका समाधान भी संस्कृत साहित्य में प्रस्तुत किया गया है। हिंसा का जन्म अन्याय से होता है। अन्याय को न्याय के पथ पर चल कर ही दूर किया जा सकता है।

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं ना धीराः।।

अन्याय व हिंसा का समाधान प्रत्युत्तर में हिंसा नहीं अपितु क्षमा है।

क्षमा शस्त्र करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति
क्षमा बलमशक्तानाम् शतानाम् भूशणम् क्षमा।
क्षमा वशिक्रुते लोके क्षमयाः किम् न सिध्यति।

संस्कृत साहित्य में यह भी गीत है कि ऋण, अग्नि व शत्रु शेष रहने पर पुनः-पुनः प्रवर्धित होते हैं। उन्हें पूर्ण रूप से शेष नहीं रहने दिया जाना चाहिए। क्षमा के माध्यम से शत्रु भाव को नष्ट करने पर विश्व में शांति की स्थापना हो सकती है।

ऋणशेषः अग्निशेषः च शत्रुशेषः तथैव च।
पुन पुनः प्रवर्धन्ते तस्मात् शेषं न रक्षयेत्।।

प्रत्येक मनुष्य में उत्कृष्टता देवत्व के रूप में विद्यमान है, चित्त की पूरी वृत्तियों का शमन कर उत्तमता विकसित कर, आपातकालीन परिस्थितियों से बचा जा सकता है।

प्रारभ्यते न खलु विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुक्तमजना न परित्यजन्ति।।

मनुष्य में देवत्य विकसित करने की इस प्रक्रिया में हमें आंतरिक स्व में परिवर्तन लाना होगा। ऐसा संस्कृत साहित्य में उल्लेख है।

मधुसिक्तो निम्बखण्डः दुग्धपुष्टो भुजंगमः।
गंगास्नातोपि दुर्जनः स्वभावं नैव मुञ्चिता।।

भारतीय संस्कृति में आंतरिक स्व परोपकार की कामना करना है। रतिदेव समस्त प्राणियों के कष्टों के नाश की कामना करते हैं।

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्
कामये दुखसप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम्

साहित्य में वृक्षों व पशुओं द्वारा भी परोपकार का सुंदर भाव है।

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम्।।

आपदा प्रबंधन का उल्लेख भागवत साहित्य में भी प्राप्त होता है। श्री कृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत को उठाकर अतिवृष्टि से ग्रामवासियों की रक्षा का उल्लेख है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और कल्हण की राजतरंगिणी में राजा के धर्म से विमुख होने पर आपदा के आगमन का वर्णन है।

कल्हण ने राजतरंगिणी में इस बात का उल्लेख किया है कि राजा ने प्रजा को दुर्भिक्ष से बचाने के लिए अपने प्राण त्यागना स्वीकार किया तथा रानी द्वारा साधना करने पर राज्य के प्रत्येक घर में कपोतों के गिरने तथा प्रजा द्वारा उनका भक्षण कर अपनी प्राण रक्षा करने का वर्णन है।

जिस राष्ट्र में लोभ, मोह, माया, मद, हिंसा, प्रतिशोध, असंतोष व तनाव जैसे मानव जनित आपदा के जनक न हो, वो राष्ट्र एक ऐसे शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण करेंगे जिसमें समूची मानव जाति की एकता होगी।

ऐक्यं बलं समाजस्या तदभावे स दुर्बलः।
तस्मात् ऐक्य प्रशंसन्ति दृढ राश्त्र हितैषिणः।।

मानवता और विश्व भातृत्व का संदेश गीता से प्राप्त है। संस्कृत साहित्य का अमूल्य रत्न श्रीमद्भगवद् गीता है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार गीता एक सार्वभौमिक धर्मशास्त्र है, कालजयी ग्रंथ है। गीता के संदेश समय सापेक्ष नहीं है। इसमें प्रत्येक देश काल, परिस्थिति में व्याप्त समस्याओं के समाधान का दर्शन भरा पड़ा है।

आज विश्व के सम्मुख आध्यात्मिक मूल्यों के स्थान पर भौतिकवादी मूल्यों से कई प्रकार के संकट उत्पन्न हो गए हैं। गीता कर्म, ज्ञान व भक्ति योग के संतुलित विवेचन द्वारा इस आपदा के प्रबंधन का संदेश देती हैं।

धार्मिक संकीर्णता, बढ़ती असहिष्णुता, राजनैतिक प्रतिद्वंद्वता, औद्योगिक संघर्ष, आण्विक आयुधों की होड़ा-होड़ी कई आपदाएँ है जिनका समाधान गीता में है।

Rajasthan Education Department

आत्मन्येवात्मा तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते
ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते
सर्वत्रगमचिन्त्यचं कूटस्थमचलं ध्रुवतमं
सनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुध्दयः
ते प्राप्नुवन्ति भामेव सर्वभूतहितेरताः।।

गीता में श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मनुष्य ज्ञान के पथ पर चलकर योगी बन सकता है, जिसके लिए स्थिरप्रज्ञ बनना होगा, स्वयं में आध्यात्मिक पूर्णता विकसित करनी होगी। योगी समूची मानव जाति के कल्याण में स्वयं को रत रखता है। गीता का कर्म योग जीवन की प्रत्येक परिस्थिति हर्ष, शोक, जय-पराजय, लाभ-हानि सभी में समदर्शी रहने की शिक्षा प्रदान करता है।

शुनि चैवश्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः

वर्तमान समय में व्यक्ति के भीतर एवं बाहर एवं राज्यों, राष्ट्रों के मध्य बढ़ते विभेद के कारण विश्व बंधुत्व को खतरा एक गंभीर आपदा है। गीता में इसका बहुत सुंदर समाधान बताया गया है।

आत्मैवात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः

यदि मनुष्य अपने आत्म को आध्यात्मिक रूप से समृद्ध करता है, तो वो स्वयं का मित्र है, किंतु यदि वह भौतिकवादी दृष्टिकोण से अपने आत्म का पतन करता है, तो वह स्वयं अपना शत्रु है।

गीता सहयोग, सामंजस्य, मित्रता तथा मानवता का वैश्विक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

अद्वेष्टा सर्वभुताना मैत्र करुण वस्तु च
अशांति रूपी वैश्विक आपदा हेतु मनुष्य में आसुरी सम्पदा के स्थान पर दैवी सम्पदा को विकसित कर किया जा सकता है।
अभयं सत्तवसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दव हीरचापलाम्।।
तेज क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो मातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत।।

संस्कृत के समृद्ध साहित्य में इस प्रकार संसार की समस्त आपदाओं का समाधान है । आवश्यकता मनुष्य में देवत्व को जागृत करने की है।

व्याख्याता
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज.)

प्रेरक प्रसंग

असंभव कुछ भी नहीं

❒ गिर्राज गुर्जर

इस दुनिया में इंसान के लिए असंभव केवल मरने के बाद जिंदा करना ही है, बाकी और कोई भी कार्य असंभव नही है।

इंसान अगर किसी चीज की चाहत रखता है, तो वह उसे जरूर पाता है। बस उसको अपनी चाहत में मेहनत को शामिल करना जरूरी होता है। किसी ने बिल्कुल ठीक कहा है- जहाँ चाह, वहाँ राह होती है। यदि इंसान किसी चीज को पाने के लिए दृढ़ संकल्प कर ले तो फिर उसके लिए इस धरती पर कुछ भी असंभव नही होता है।

ऐसे हजारों उदाहरण हमें देखने व सुनने को मिलते हैं। जिन लोगों ने अपनी इस ऊर्जा को पहचाना है, उन्होंने कई इतिहास रचे हैं।

साथ ही वह दूसरों के लिए प्रेरणा के स्रोत भी बने हैं। उनके कार्य को देखकर लोग कहते हैं कि वह तो किस्मत वाला था। पर यह सही बात नहीं है। आप देखोगे जितने भी लोग शक्तिशाली हुए हैं। उन्होंने सबसे पहले अपने मन की शक्ति को पहचाना है जैसे स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, नरेंद्र मोदी जी आदि। यह सब इतने सफल और शक्तिशाली बने हैं कि दुनिया के हर ताकत इनके सामने छोटी लगती है। इन महान व्यक्तियों द्वारा असंभव कार्य को संभव किया गया है। हम सब जानते हैं कि ब्रिटेन के महान ओलंपिक कोच हैरी एड्रिउस ने कहा था कि 1 मील की दौड़ को 4 मिनट से पहले पूरी करना असंभव है। कई धावकों को यह बात असंभव ही लग रही थी। पर दुनिया में कोई कार्य असंभव नही है यह साबित कर दिखाया सन 1954 में रॉजर बैनिस्टन ने 1 मील की दौड़ को 3 मिनट 59.4 सैकण्ड में पूरा करके विश्व रिकॉर्ड अपने नाम किया था। इसके दस साल बाद एक स्कूल के बच्चे ने 1 मील की दौड़ को 3 मिनट 59 सैकण्ड में पूरी करके दुनिया के सामने ब्रिटेन के महान ओलंपिक कोच के द्वारा बताए गए असंभव कार्य को एक बार फिर संभव कर दिखाया।

इसी प्रकार सचिन तेंदुलकर से पहले यह सोचा जाता था कि कोई भी खिलाड़ी एक दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता में डबल शतक नहीं बना सकता है। यह असंभव था लेकिन असंभव को संभव करके सचिन ने दिखा दिया। यही नहीं सिर्फ ढाई सौ मैच के बाद ही वीरेंद्र सहवाग ने भी डबल शतक लगा दिया और उसके बाद तो कई खिलाड़ियों ने शतक लगाए हैं।

एक उदाहरण रविंद्र जैन का भी है जो कि बचपन से दोनों आँखों से देख नहीं सकते थे। उन्होंने बिना कुछ प्रकृति को देखे ही ऐसी-ऐसी कल्पनाएँ कि जिनके बारे में हम सोच भी नहीं सकते हैं। उन्होंने हमारे देश के सबसे लोकप्रिय टीवी धारावाहिक 'रामायण' को संगीत दिया, जिसके टेलीविजन पर शुरू होते ही सब लोग अपना काम-धाम छोड़कर उसे देखने के लिए टेलीविजन सैट की ओर दौड़ पड़ते थे। लोग उसे देखने के लिए सप्ताह भर बड़ी बेसब्री से इंतजार करते थे। उस सीरियल रामायण के प्रसिद्ध संगीतकार रविंद्र जैन ही थे। जिन्होंने जन्मांध होने के बावजूद भी असंभव कार्य को संभव करके दिखाया।

इंसान के चाहने पर हर असंभव कार्य को संभव बनाया जा सकता है।

उपर्युक्त उदाहरणों से हम यह बात समझ सकते हैं कि दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं होता है, इसमें केवल महत्त्वपूर्ण है व्यक्ति कि दृढ़ इच्छाशक्ति। जब-जब भी व्यक्ति ने प्रयत्न किए, कोशिश की तो उसने असंभव को भी संभव करके दिखाया ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा का कार्य भी किया है।

जिससे उसके बाद बहुत सारे व्यक्तियों ने उस काम को लगातार आगे बढ़ाया है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि दुनिया में कोई भी कार्य असंभव नहीं है।

कक्षा -8
शारदा माध्यमिक विद्यालय बनेठा,
तहसील-उनियारा,
जिला-टोंक (राज.)-304024

Rajasthan Education Department

रपट

गुजरात भ्रमण

❐ मानसी कौशिक

राजस्थान सरकार द्वारा एपीजे अब्दुल कलाम व्यक्तित्व विकास योजना के अन्तर्गत भरतपुर मंडल के प्रतिभावान विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु गुजरात ले जाया गया। मैं भी इसी शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम का एक हिस्सा थी। हमारी यात्रा का आरम्भ 16 जनवरी, 2023 को भरतपुर के नेहरु पार्क से कलेक्टर महोदय के द्वारा रवाना करने पर हुआ। 17 जनवरी, 2023 को उदयपुर पहुँच कर विश्राम किया तथा अल्पाहार लेकर हम पुनः अपने मार्ग पर चल दिए। गुजरात में प्रवेश करते ही वहाँ की सांस्कृतिक पोषाक में लोगों को देखना अपने आप में एक दिल को छू जाने वाला दृश्य था।

सबसे पहले हम अहमदाबाद पहुँचे, जहाँ एक बहुत ही प्रसिद्ध मंदिर अक्षरधाम का भ्रमण किया, जहाँ हमने 'वाटर नाइट शो' देखा और आनंद की अनुभूति की। यह दिन कितनी जल्दी बीत गया हमें पता ही नहीं चला। उस रात्रि हमने होटल में विश्राम कर भोजन लिया। अब हमारी अगली मंजिल थी रिवरफ्रंट गार्डन, अटल ब्रिज जहाँ हमने प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठाते हुए साबरमती नदी के शुद्ध जल को देखते हुए, इस स्थान से प्रस्थान किया।

अब हमें जाना था, एक ऐसी जगह जो कि वास्तव में हम विद्यार्थियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी थी-साइंस सिटी। देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के विषय में इस स्थान पर हमें बहुत सारी जानकारी मिली। ऐसा अनुभव जीवन में ना कभी हुआ था, ना ही शायद होगा।

अत्यंत आनंद की अनुभूति के साथ हमने अपनी अगली मंजिल नेचर पार्क की ओर रूख किया, जहाँ ऐसा लग रहा था कि प्रकृति अपने सौंदर्य को बोलकर हमें समझाना चाह रही है।

वास्तव में, प्रकृति के विषय में जानना और समझना अलग ही आनंद की अनुभूति देता है। नेचर पार्क के बाद हमने अतिथिगृह में विश्राम तथा भोजन किया।

अगले दिन, जब हम अपने दल के साथ भुज से 75 किलोमीटर दूर कच्छ नामक स्थान के लिए रवाना हुए। इस सम्पूर्ण भ्रमण के दौरान हमने न केवल दर्शनीय स्थलों पर आनंद महसूस किया, बल्कि यात्रा के दौरान हमने बस में भी संगीत, नृत्य, अंत्याक्षरी आदि का भरपूर आनन्द उठाया।

अब हम कच्छ पहुँच चुके थे, यहाँ हमने 'कच्छ रन' देखा, वहाँ काफी समय व्यतीत किया। ऊँट पर सवारी की, वहाँ के स्थानीय लोगों से बात कर जानने की कोशिश की कि उन्हें इस रन में, जहाँ दलदली जमीन के साथ-साथ अन्य भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता होगा। कच्छ रन भ्रमण जीवन में एक अलग अनुभव लेकर आया, इससे हमें पता चला कि जो स्थान अन्य लोगों के लिए दर्शनीय स्थल है, वहाँ के स्थानीय लोगों को वहां कितने कष्ट झेलने पड़ते हैं।

जीवन के इस अनुभव को साथ लिए अब हम गुजरात के सिद्ध श्री कृष्ण की नगरी द्वारिका के भ्रमण पर निकल गए। रास्ते में हमारे शिक्षकों ने खाने, स्नैक्स, चाय आदि का बंदोबस्त कराया, ताकि हम सभी विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कष्ट न हो। द्वारिका में परम सुख की अनुभूति पाकर, धार्मिक स्थल द्वारिका से जुड़ी बातें जानी। हम बहुत थक चुके थे, पर फिर भी हममें उत्साह की कोई नहीं थी।

प्रति रात्रि की भाँति आज भी हमने एक अतिथि गृह में जो कि जामनगर में था, विश्राम किया। अगली सुबह नाश्ता करने के बाद हमारी अगली मंजिल थी, द्वारिका में लगभग 105 किलोमीटर दूर महात्मा गाँधी की जन्मस्थली पोरबंदर। रास्ते भर मस्ती करते हुए हम पहुँच गए पोरबंदर, जहाँ हमने कीर्ति मंदिर, माँ कस्तूरबा भवन, पुस्तकालय आदि देखा।

पुस्तकालय में मुझे महात्मा गाँधी की पुस्तक 'सत्य के प्रयोग' मेरी आत्मकथा नामक पुस्तक पसंद आई और वह मैंने खरीद ली। जिससे मुझे महात्मा गाँधी जैसे महान व्यक्तित्व के विचारों के विषय में पता चला।

वहाँ मैंने आगन्तुक पंजिका पर अपने विचार लिख कर महात्मा गाँधी जी को याद किया। पोरबंदर से अब हम सोमनाथ तट पहुँचे। जीवन के सभी कष्टों को मानो सोमनाथ तट की लहरें अपने साथ ही बहा कर ले जा रही थी। सोमनाथ तट की लहरों के साथ हमने सूर्यास्त का आनंद उठाया। ये दृश्य तो मानो ऐसा था जिसे हमेशा के लिए आँखों में कैद करना चाहते थे।

सोमनाथ तट के बाद अब हम सोमनाथ मंदिर पहुँचे, भगवान सोमनाथ के दर्शन किए। उसी मंदिर पर हमारे पूरे दल ने एक सामूहिक फोटो खिंचवाया। हमने भोजन कर रात्रि विश्राम किया। अगले दिन हम दमन दीव के लिए रवाना हुए। यहाँ तटीय क्षेत्र का आनन्द उठाकर हमने ढेर सारे फोटोज खींचे। प्राकृतिक सौंदर्य का अवलोकन किया। उसके बाद घोघरा बीच तथा सुखरी स्मारक का भ्रमण कर ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की।

अगले दिन हम बड़ौदा की ओर निकल पड़े। रात्रि में हमारे लिए शिक्षकों द्वारा चाय-नाश्ते का प्रबंध किया गया। बड़ौदा में हमने स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का भ्रमण किया और सरदार वल्लभ भाई पटेल-लौह पुरुष की भारत के एकीकरण में निभाई गई भूमिका के विषय में जाना। सरदार सरोवर बाँध तथा फ्लॉवर वैली का भी अवलोकन किया। अब हम गुजरात को अलविदा कहते हुए रवाना होकर अगले दिन प्रातःकाल उदयपुर पहुँचे।

विश्राम तथा नाश्ता करने के पश्चात उदयपुर के लोकल साइट सीन, फतेहसागर झील, महाराणा प्रताप स्मारक आदि का भ्रमण किया। इसके बाद हमने पुनः भरतपुर की ओर प्रस्थान किया और 26 जनवरी, 2023 को प्रातः 5 बजे हम भरतपुर पहुँच गए और अपनी यात्रा का समापन किया।

मैं, राजस्थान सरकार का धन्यवाद करना चाहूँगी कि उन्होंने हम सभी छात्र-छात्राओं का एक नए और विशाल तरीके से उत्सावर्धन किया। इस यात्रा के दौरान हमें सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त हुई। अब हम कितनी भी बड़ी यात्रा को करने में पूर्णतः सक्षम हैं।

मैं आशा करती हूँ कि आगे भी मैं पूरा मन लगा कर अध्ययन करूँ तथा पुनः ऐसे शैक्षणिक भ्रमण पर जाऊँ।

कक्षा-11,
मास्टर आदित्येन्द्र राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

Rajshan Education Department

शैक्षिक परिवेश में योग शिक्षा

❒ कमल कुमार जाँगिड़

गीता में 'योग' शब्द के बड़े विचित्र अर्थ हैं। 'युजिर्योगे' धातु से बना 'योग' शब्द जिसका अर्थ है- समरूप परमात्मा के साथ नित्य सम्बन्ध, जैसे 'समत्व योग उच्चते।' युज समाधौ धातु से बना योग शब्द जिसका अर्थ है- चित की स्थिरता अर्थात् समाधि में स्थिति जैसे गीता के छठे अध्याय का बीसवाँ श्लोक 'यत्रो परमते चितम् निरुद्धं योग सेवया' आदि। पतंजलयोगदर्शन में चितवृत्तियों के निरोध को 'योग' नाम से कहा गया है- योगश्चित्तवृति निरोधः। योग के व्यापक अर्थ को बिंदुओं में बांधे तो तीन शक्तियाँ मनुष्य को प्राप्त होती है- 1. करने की शक्ति (बल), 2. जानने की शक्ति (ज्ञान) 3. मानने की शक्ति (विश्वास)। कहने का तात्पर्य यह है कि कर्म-योग, ज्ञान योग व भक्ति योग। मनसा, वाचा, कर्मणा सम्पूर्ण योग जगत को परिभाषित करता है। पतंजलि से स्वामी रामदेव तक की यात्रा कोई नवीन परम्परा नहीं बल्कि ऋषियों की निधि को आमजन तक पहुँचाने का साधन मात्र है। आज की तेज रफ्तार जीवन शैली में संचार माध्यमों की क्रांति ने योग को सर्वसुलभ करवाकर हमें पुनः जड़ों की ओर लौटाने का मार्ग दिखलाया है। शैक्षिक परिवेश में योग शिक्षा का पुनः पदार्पण एक अच्छा संकेत है। योग शिक्षा को शैक्षिक परिवेश से पृथक रखा ही नहीं जा सकता। प्राकृतिक चिकित्सा, आध्यात्म एवं योग सम्पूर्ण जीवन शैली के अंग है। वैदिक काल से योग औपचारिक शिक्षा से भी महत्त्वपूर्ण शिक्षा रही है। वस्तुतः आज हम इसे अलग विद्या के रूप में देखते हैं। पतंजलि के अष्टांग योग सूत्र में स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक, आध्यात्मिक एवं सम्पूर्ण जीवन यात्रा को परिलक्षित किया गया है। स्वास्थ्य ही धन है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। अतः स्वास्थ्य के लिए योग, आसन एवं प्राणायाम जैसी क्रियाओं का होना बहुत आवश्यक एवं उपयोगी है। स्वास्थ्य का तात्पर्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं अपितु व्यक्ति को भावात्मक एवं मानसिक रूप से भी स्वस्थ रहना चाहिए। सब-कुछ प्राकृतिक एवं नियमबद्ध है। नियम यदि एक क्षण के लिए भी टूट जाए तो सारा सौर मंडल अस्त-व्यस्त हो जाएगा।

महर्षि पतंजलि ने योग को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करते हुए अष्टांग योग रूप में विकसित किया। जो इस प्रकार है-

1. यम- यह इन्द्रियों के संयम की क्रिया है। इसमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह नामक पाँच है।

2. नियम- सदाचार का पालन करना नियम है। जिसमें शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय एवं ईश्वर प्रणिधान।

3. आसन- शरीर को ऐसी स्थिति में निश्चल रखना कि कुछ देर उस स्थिति में सुखपूर्वक रहा जा सके।

4. प्राणायाम- प्राणायाम का अर्थ श्वास-प्रश्वास पर ध्यान केन्द्रित करना एवं नियंत्रण करना है।

5. प्रत्याहार- इन्द्रियों को अपने विषयों से हटाना और मन को वश में करना।

6. धारणा- चित को अभीष्ट विषय में लगाना।

7. ध्यान- स्वकेन्द्र होने की स्थिति।

8. समाधि- मग्न अपने ध्येय विषय में पूर्णतः लीन हो जाता है। उसे अपने विषय में कुछ ज्ञान नहीं रहता है। यह योग का अंतिम अंग है। इस अवस्था में चित्तवृत्ति का निरोध हो जाता है। इनमें प्रथम पाँच अंग 'बहिरंग' व शेष तीन अंग 'अंतरंग' नाम से प्रसिद्ध है।

यौगिक क्रियाओं का शरीर के रक्त परिसंचरण तंत्र पर स्पष्टतः प्रभाव पड़ता है। जब समस्त जैविक क्रियाएँ प्रभावित होती हैं तो मन मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव पड़ता है। एकाग्रता एवं मानसिक शक्ति ब्रह्मचर्य के प्रमुख लक्षण है एवं विद्यार्थी जीवन में यह बेहद आवश्यक है। योग जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। परन्तु ब्रह्मचर्य आश्रम में इसका सही एवं नियमित अभ्यास भावी जीवन का आधार तय करता है। योग जहाँ एक ओर उन्नत आध्यात्मिक विद्या है, वहीं एक सम्पूर्ण चिकित्सा विज्ञान भी है। प्रतिस्पर्धाओं एवं प्रतियोगिताओं के बीच बढ़ती हुई महत्त्वाकांक्षाओं के पूरे न होने पर पनपते हुए असंतोष, अशांति, अतृप्ति, भय, असुरक्षा एवं अकेलेपन के कारण आज अधिकांश लोग किसी न किसी व्याधि से ग्रस्त है। 'योग' विश्व को भारत की देन है। अब इसके प्रभाव व चमत्कार को सर्वत्र महसूस किया जा रहा है। गुरुकुल पद्धतियों का अनुसरण करें तो प्राथमिक अवस्था में ही योजनाबद्ध तरीके से शारीरिक क्रियाओं एवं गतिविधियों का संचालन आवश्यक हो गया है। महर्षि दयानंद सरस्वती ने वेदों की ओर लौटो एवं गुरुकुलों के संरक्षण पर जोर दिया था। वास्तव में आज हम जिस द्वन्द्व की स्थिति में जी रहे हैं वहाँ कहीं न कहीं मौलिकता खत्म हो गई है। सिद्धान्तों की बात तो होती है लेकिन व्यावहारिक जीवन में क्रियान्विति आवश्यक है। इसके लिए शिक्षा में योग को मूर्त रूप देने के लिए योग्य, निष्णात एवं कर्मठ शिक्षकों का चयन कर उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय तक इसकी पहुँच हो। यद्यपि पाठ्यक्रम में इसे संक्षिप्त रूप में प्रवेश दिया गया है। बालकों में चित की एकाग्रता एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने के दृष्टिकोण से योग के अंग समझना एवं समझाना अति महत्त्वपूर्ण है। योग शिक्षा की अनिवार्यता से बाल मनोविकार एवं मानसिक व्याधियों से मुक्ति मिल सकेगी। साथ ही भारतीय सांस्कृतिक विरासत को पुनःस्थापित करने में सहयोग प्राप्त होगा। ' Yog for better life' के अन्तर्गत नियमित आसन एवं प्राणायाम से शारीरिक सुदृढ़ता के साथ-साथ ओजस- तेजस-वर्चस् को बल मिलेगा।

पाश्चात्य अंधानुकरण से मुक्ति हेतु जीवन पद्धति में बदलाव योग शिक्षा के माध्यम से ही संभव हो सकेगा। आज तो विदेशों में भी योग को लेकर बड़े-बड़े कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है। विदेशी लोग भारतीय जीवन पद्धति अपनाने लगे हैं। यूरोप में मानसिक रोगियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियाँ अपनाई जा रही है। इसे हम परम वैभव पर राष्ट्र को पहुँचाने की दिशा में अपनाकर भारत की गौरवशाली परम्परा को कायम रख सकते हैं। वस्तुतः भारत की इस मौलिक देन से पुनः जगद्गुरु के शाश्वत मूल्यों को स्थापित करने में सहायता मिलेगी। स्वस्थ बालक भावी राष्ट्र की धरोहर है। अतः औपचारिक शिक्षा में योग शिक्षा का समावेश एक अहम कदम है। यहाँ यह कहना उचित ही होगा कि योग के माध्यम से हम बालकों में जीवन जीने की कला विकसित कर सकते हैं। जिसमें भारतीय सनातन को साक्षात् प्रतिबिंबित कर सकते हैं। 21 जून का दिवस उष्ण व बड़ा दिवस होने के वैज्ञानिक आधार को विगत वर्षों से अनवरत सामूहिक योग दिवस ने इस दृष्टि को आयाम दिए हैं।

शिक्षक
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय मेहरों की ढाणी,
कुचामन सिटी, नागौर (राज.)
मो.न.: 9928278014

Rajasthan Education Department

प्रार्थना सभा में शिक्षक सहभाग और कुछ नए प्रयोग

❒ संदीप जोशी

विद्यालय में होने वाली प्रार्थना विद्यालय में संस्कार देने का सबसे प्रभावी कार्यक्रम है। विश्व के सभी देशों में, सभी संस्कृतियों में, सभी परंपराओं में प्रार्थना अनादि काल से चलती आई है। विश्व के सभी भागों के निवासी किसी न किसी रूप में कार्य की शुरुआत से पूर्व मन ही मन, मौन रहकर, सस्वर अथवा गाकर ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। भारतीय संस्कृति में भी प्रार्थना का अहम स्थान है। सुख एवं दुख दोनों ही परिस्थितियों में प्रार्थना मनुष्य को शक्ति प्रदान करती है, आत्मबल को बढ़ाती है, सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। बच्चे भी जब विद्या अध्ययन के लिए विद्यालय आते हैं तो पठन-पाठन प्रारम्भ करने से पूर्व वे प्रार्थना सभा में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। इससे शिक्षण के लिए आवश्यक वातावरण निर्माण भी होता है और एकाग्रता का संस्कार भी बनता है। पारिवारिक चर्चाओं और पारिवारिक वातावरण से बाहर निकलकर बालक शिक्षा प्राप्ति के लिए मानसिक रूप से अपने आपको तैयार करता है। प्रार्थना सभा वह स्थल होता है जहाँ संबंधित विद्यालय के शैक्षिक, सामाजिक एवं मानसिक व आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा, चिंतन, मनन होता हैं। प्रार्थना स्थल एक प्रकार से विद्यालय का दर्पण है। 1947 से लेकर अब तक की सभी शिक्षा नीतियाँ, सभी शिक्षा आयोग जिस चरित्र निर्माण और मूल्य आधारित शिक्षा की लगातार बात कहते हैं उसे प्रदान करने का सर्वश्रेष्ठ स्थान प्रार्थना सभा है। इसे आधुनिकता का प्रभाव माने अथवा विद्यालय के आंतरिक तनाव और कामकाज की अधिकता माने वर्तमान में कभी-कभी प्रार्थना सभा का आयोजन गौण होता नजर आता है। ऐसा लगता है जैसे शिक्षक, छात्र व विद्यालय प्रशासन केवल औपचारिकताएँ पूरी करने के लिए सवेरे एक स्थल पर इकट्ठे होकर राष्ट्र गान, राष्ट्रगीत, प्रतिज्ञा तथा प्रार्थना का गायन करते हैं। प्रार्थना कार्यक्रम जितना महत्त्वपूर्ण है उसका आयोजन भी उसी उत्साह से होना चाहिए। अनेक विद्वानों एवं शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि एक तरफ प्रार्थना सभा और दूसरी तरफ दिन भर की सारी

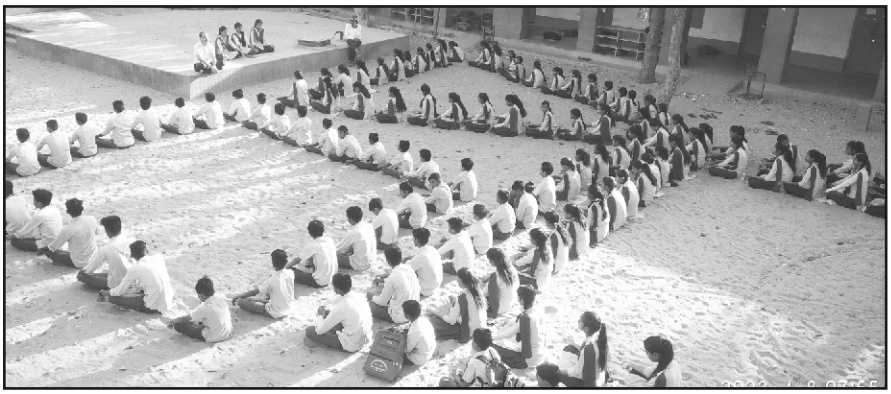

शैक्षणिक गतिविधियाँ..... तब भी प्रार्थना सभा ज़्यादा शिक्षाप्रद है, ज़्यादा उपयोगी और संस्कारमय है। हममें से अधिकांश शिक्षक साथी इसको कितनी गंभीरता से लेते हैं, यह एक विचारणीय पक्ष है, आत्मावलोकन का भी विषय है। अनेक विद्यालयों में प्रभावी प्रार्थना कार्यक्रम को लेकर अच्छा प्रयास होता है।

पर, ज़रा एक विचार करें- हम शिक्षक भी छात्रों के साथ प्रार्थना कर लें तो .... थोड़ा-सा अकल्पनीय लगता है। कुछ लोगों को ढोंग या नाटक भी लग सकता है। पर ....थोडा-सा मनन करें तो प्रार्थना सभा में यह सहभाग हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से लाभदायक ही रहेगा। बच्चों पर तो ज़बरदस्त सकारात्मक प्रभाव होगा ही। बच्चे माता पिता और गुरुजनों के आचरण से भी अनेक बातें सीखते हैं।

विद्यार्थी भी शिक्षा के साधक है और हम भी शिक्षा के साधक है। ऐसे में हम शिक्षक प्रार्थनातीत कैसे हो सकते हैं? शिक्षकों के लिए तो प्रार्थना करना ज़्यादा उपयोगी और करणीय कार्य है। मेरा मानना है कि शिक्षक को भी प्रार्थना में सहभागी होना चाहिए। सस्वर बोलें या मौन रहें पर प्रार्थना के समय आँखें बंद करके एक स्थान पर बैठना चाहिए। यह बहुत लाभदायक है। यह सब मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह रहा हूँ। प्रार्थना सभा में प्रार्थना के अलावा होने वाले अन्य कार्यक्रमों में चाहे वह बैठकर सहभागी हो अथवा वहाँ अपने स्थान से खड़े हो जाए पर प्रार्थना में सक्रिय सहभागी होना चाहिए।

सामान्यतया हमारे यहाँ पर प्रार्थना के बोल होते हैं- हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें ...., सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु ....., हे शारदे माँ हे शारदे माँ अज्ञानता से हमें तार दे माँ...., सच्चा वीर बना दे माँ, हे हंसवाहिनी ज्ञानदायिनी, अम्ब विमल मति दे...., असतो माँ सद्गमय....., इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो ना.... इन सब प्रार्थनाओ में ऐसी कौन सी बात है जो केवल विद्यार्थियों को ही चाहिए और हम शिक्षकों को नहीं चाहिए। विचार करेंगे तो ध्यान में आएगा कि आज की इस अत्यंत तनावपूर्ण जिंदगी में हमको भी मन की शक्ति चाहिए, हमको भी मन को विजय करने की आवश्यकता है, हमको भी अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाली शक्ति की जरूरत है।

शिक्षक बनने के बाद पहले दिन से ही प्रार्थना सभा मेरी रुचि का विषय रहा है। विद्यालय में उपस्थित है तो विद्यालय की प्रार्थना सभा कभी नही छोड़ी। हालांकि शिक्षक बनने के बाद पिछले कई वर्षों तक तो मैंने भी कभी स्कूल में बच्चों के साथ बैठकर, आँखें बंद करके, हाथ जोड़कर कभी प्रार्थना नहीं की थी। लेकिन एक बार गोदन विद्यालय में कार्यरत था, उस समय एक बार प्रार्थना सभा मे मस्तिष्क में यह विचार आया। मौसम भी मस्त था, शीतल मंद पवन चल रही थी। प्रार्थना स्थल पर अग्रेसर (प्रार्थना बोलने वाले) बच्चों के लिए एक चबूतरे जैसा स्टेज बना हुआ है। वहीं पर उनके पास बैठ कर कई दिन तक बच्चों के साथ, उन्हीं की तरह प्रार्थना करने का यह प्रयोग किया। वास्तव में यह

Rajshri Education Department

बहुत अच्छा अनुभव रहा। दिन भर के लिए पर्याप्त ऊर्जा मिल जाती है। गोदन में यह प्रयोग बाद में लगभग नियमित हो गया। फिर स्थान परिवर्तन होने से रेवत विद्यालय आना हो गया। यहाँ प्रारंभ में कोई व्यवस्थित स्टेज नहीं था। विद्यालय परिसर छोटा होने के कारण स्टेज बनाने के लिए स्थान भी नहीं था। वर्षाजल संग्रहण का एक गोल टाँका (भूमिगत टैंक) था। संस्थाप्रधान श्री छगनपुरी जी से आग्रह करके टाँके की गोलाई को बाहर से कुछ दीवार जैसा करके चौकोर मंच का स्वरूप दिया। प्रार्थना स्थल थोड़ा व्यवस्थित लगने लगा। यहाँ भी बच्चों के साथ प्रार्थना करने का यह प्रयोग प्रारंभ किया है। अच्छा लगता है एक दो और भी स्टाफ साथियों का प्रार्थना करने का मन बन रहा है। आप भी करके देखें, बच्चों के साथ मंच पर ही अथवा विभिन्न कक्षाओं की पंक्तियों में सबसे पीछे अथवा कुर्सी पर बैठ कर .... जैसे भी जँचे, प्रार्थना ज़रूर करें।

शिक्षक के बच्चों के विद्यालय के परिवार के और शिक्षा के लिए शुभ और लाभप्रद ही है।

प्रार्थना सभा के सकारात्मक उद्देश्य को समझने पर हम पाएँगे कि प्रार्थना सभा विद्यालय की शिक्षण अधिगम प्रणाली के आरंभ होने से पूर्व होने वाली एक औपचारिक सभा मात्र नही है बल्कि उस दिन के विद्यालय की सभी गतिविधियाँ सही ढंग से चले तथा विद्यालय में शिक्षा का उचित माहौल तैयार हो, इसके लिए प्रार्थना का आयोजन करवाया जाता हैं। प्रभावी प्रार्थना सभा नव बालकों में अच्छे चरित्र के गुण विकसित करने में मदद करती है। यह वह समय होता है जब पूरा विद्यालय परिवार एकत्र होता है, एक नज़र में निहारा जा सकता है। छात्र व शिक्षक, सभी उपस्थित होते हैं। प्रार्थना आयोजक के निर्देश पर समस्त क्रियाएँ संपन्न करने तथा अनुशासन में रहने के कारण बालमन में विभिन्न गुण अनायास ही विकसित हो जाते हैं। ऐसे में यदि आप उनके साथ बैठे हैं तो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष बहुत लाभ होने वाले हैं। केवल प्रार्थना अवधि तक ही बैठना है। प्रतिज्ञा, समाचार वाचन जैसी अन्य गतिविधियों में भले स्थान छोड़ दें।

जब किसी काम में मन से लगते हैं तो उस कार्य से संबंधित नए विचार, रचनात्मक विचार और आइडिया स्वतः आने लगते हैं। काम कोई भी हो उसमें नवीनता लाने पर काम में उत्साह बढ़ता है, आनंद आता है। पिछले दिनों एक प्रयोग किया। राजस्थान में पिछले दिनों बोर्ड की परीक्षाएँ चल रही थी अतः कक्षा 8,10,12 इन तीन कक्षाओं के बच्चे विद्यालय नहीं आ रहे थे। तीनों कक्षा मिलाकर लगभग 160 छात्र संख्या कम हो गई। प्रार्थना सभा भी कुछ खाली खाली लगने लगी। ऐसे में प्रार्थना सभा में छात्रों के बैठने की स्थिति में कुछ नए प्रयोग किए। विद्यार्थियों को सीधी पंक्ति में बिठाने की बजाय गणित की विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों के आधार पर, गणितीय संकेतों के आधार पर, अपनी सांस्कृतिक परंपरा के कुछ चिह्नों के आधार पर, भूगोल की रचनाओं के आधार पर प्रार्थना स्थल पर बैठक व्यवस्था में बिठाया। जैसे वर्ग, आयत, त्रिभुज, जोड़, बाकी, गुणा, भाग, स्वस्तिक संरचना, सूर्य किरण संरचना, संकेंद्रीय वृत्त, आकाशगंगा इत्यादि। इन विभिन्न आकृतियों में विद्यार्थियों को बिठाने पर जो दृश्य बना वह मनमोहक और आकर्षक था।

जैसा कि हम जानते हैं, अनेक विद्वान भी ऐसा मानते हैं कि विद्यालय में आठों कालांश में होने वाली पढ़ाई तरफ और विद्यालय की प्रार्थना सभा एक एक तरफ तो भी दोनों पलड़े बराबर ही होंगे, विद्यालय की प्रातःकाल की प्रार्थना का इतना महत्त्व है। प्रार्थना सभा के प्रति विद्यार्थियों में रुचि और उत्साह बना रहे इसके लिए ऐसे कुछ नए प्रयोग कभी कभी किए जा सकते हैं। लगातार कई दिन तक विभिन्न संरचनाओं में बैठकर प्रार्थना करने में बच्चों को बहुत आनंद आया। प्रार्थना कार्यक्रम में उनका सक्रिय सहभाग बढ़ा। विलम्ब से विद्यालय आने वाले छात्रों की संख्या में कमी आई।

सामान्य दिनों में जब सारी कक्षाएं उपस्थित होती है तो छात्र संख्या अधिक होने के कारण छोटे मैदान में यह प्रयोग करना संभव नहीं हो पाता किंतु बोर्ड परीक्षाओं के दौरान छात्र संख्या कम थी तो विद्यालय के मैदान को भरने में यह प्रयोग बहुत सहायक सिद्ध हुआ। विद्यालय का मैदान तो भरा भरा ही अच्छा लगता है ना। बच्चों को इतना आनंद आया कि कई बार तो छात्रों ने स्वयं सुझाया कि अगले दिन किस संरचना में बैठना है।

एक दिन कुछ ऊँचाई से प्रार्थना सभा के इस दृश्य के फोटो लिए। दृश्य अत्यंत मनोरम, मनमोहक था। दो तीन बार अलग-अलग संरचनाओं के फ़ोटो लिए। सुंदर, आकर्षक दृश्य। बाद में फ़ोटो लेने बंद कर दिए क्योंकि मूल उद्देश्य फ़ोटो नही था। एक दिन विद्यालय की प्रार्थना सभा की नई संरचना वाली कुछ फ़ोटो सोशल मीडिया पर शेयर कर मित्रों को इस प्रयोग की जानकारी दी। सभी ने यह बहुत अच्छा लगा, सभी ने इसे सराहा। दो दिन में तो विभिन्न अन्य विद्यालयों के फोटो आने शुरू हो गए। इस प्रयोग को बहुत प्रतिसाद मिला। 5-6 दिन में 25 से अधिक विद्यालय के समाचार मिल गए कि उन्होंने अपने यहाँ भी यह प्रयोग किया है। अच्छे प्रयोग करने के प्रति स्वीकार्यता बढ़ रही है यह बहुत अच्छी स्थिति है। सप्ताह में एक बार या महीने में दो तीन बार प्रार्थना सभा मे ऐसे कुछ विशेष प्रयोग किए जा सकते है। सामान्यतः नियमित रूप से सीधी पंक्ति बनाकर प्रार्थना करवाना ही उचित रहेगा।

कभी कभी होने से उत्सुकता, उत्साह और रोचकता बनी रहेगी। बस्ता मुक्त शनिवार की एक गतिविधि के रूप में भी शनिवार की प्रार्थना सभा मे यह विविधता पूर्ण प्रयोग कर सकते हैं। प्रार्थना सभा में करने जैसे और भी अनेक प्रयोग कर सकते हैं जैसे हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषाओं में क्रमशः प्रतिज्ञा बुलवाना, विभिन्न भाषाओं में अच्छे गीत सीखकर, उन्हें मासिक गीत के रूप में प्रार्थना में अभ्यास करवाना इत्यादि। ऐसे और भी अनेक प्रकार के नए-नए प्रयोग प्रार्थना सभा में किया जाना अपेक्षित है ताकि हमारी प्रार्थना सभा आनंददायी, रोचक, ज्ञानवर्धक और संस्कारक्षम बने। हर बार यह याद रखना अति आवश्यक है कि हमारा अंतिम लक्ष्य बालक की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करना है, बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। प्राचीन भारत में भी शिक्षा का यही लक्ष्य था, स्वतंत्रता आंदोलन के समय विभिन्न राष्ट्रीय विद्यालय संचालित करने वाले शिक्षाविदों का भी यही लक्ष्य था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भी यही लक्ष्य है क्योंकि यही शिक्षा का शाश्वत लक्ष्य है।

व्याख्याता,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवत,
जालोर (राज.)
मो.न.: 9414544197

Rajasthan Education Department

बाल शिविरा

राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा अपनी सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

सपनों की उड़ान

तू अपने सपनों को उड़ान दे,
इस दुनिया को नई पहचान दे।

हौसला है तेरे अंदर भी,
इस वक्त को अपना इम्तिहान दे।

तू ना रुक ना झुक, आगे चलती जा,
ये दुनिया कहेगी, तू दुनिया के शब्दों को विराम दे,
तू अपने सपनों को उड़ान दे।

बुलंदियों को छू, दुनिया को आईना दिखा
इस मतलब की झूठी दुनिया को
तू सच का दीदार दे
तू अपनी सोच को उड़ान दे।

ये दुनिया अंधी है, तेरे सपने इसे नहीं दिखेंगे,
तेरी माँग में सिंदूर लाल होगा क्योंकि
वहीं पर तेरे सपनों के अंत का अंजाम होगा
तू लोगों की बातों को विश्राम दे
तू अपने पंखों को हौंसलों की उड़ान दे।

क्यों बिछेगी शैय्या तेरे अरमानों की,
क्यों होगी कंटीली तेरी राहें,
होंगे तेरे सपनों के भी पंख, बुलंदी आसमानों की
तू इस दुनिया को सपनों का संसार दे।
तू अपने सपनों को उड़ान दे।

निकिता गोस्वामी 'सांझण',
कक्षा-11,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेड़ूली, नागौर (राज.)

मेरी जिंदगी

हाँ, मैं तुमसे गुस्सा थी
नाराज थी..... मेरी जिन्दगी
उस पल, उस घड़ी, उस वक्त
जो दिए तूने दर्द मुझे
आज तक सहती हूँ उन्हें
जिन धोखेबाजों से मिलवाया तूने
आज तक मन में गुस्सा है उनके लिए
जो पाठ पढ़ा कर शिक्षा दी तूने
आज तक उसे याद कर जीवन में लागू किया मैंने
ऐ मेरी जिन्दगी.....धन्यवाद!
जो मुझे टूटकर जुड़ना सिखाया
मुझे नई शुरूआत करने का मौका दिया
खुद के लिए लड़ना सिखाया
मुझे आगे बढ़ने का हौसला दिया।

निशु, कक्षा 12,
महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय किठाना (झुंझनूं)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

नशा नाश का मूल

छोड़ो धूम्रपान और शराब,
नशा नाश का मूल है।
नर नशे को जो अपनाता,
जीवन में बोता शूल है।

नशा जिसने अपना लिया,
यह जीवन की भूल है।
गांजा गुटखा बीड़ी पीता,
मानव जीवन की धूल है।

नशा जो करें उसे बुलावा,
यम का स्वीकार है।
बर्बाद होकर पहुँचे श्मशान,
रोता उसका परिवार है।

पीकर भांग धतूरा ढारू,
मौत गले लगाते हैं।
कंचन सी काया को यूं,
सब धुएँ में उड़ाते हैं।

विकास सैनी, कक्षा-9,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बापू गाँव, कोटखावदा, जयपुर (राज.)

मेरी परी

कितनी अच्छी
कितनी सुंदर
कितनी प्यारी है ये परी,
जादू करती ये परी,
सबको प्यार देती ये परी।
उड़ती-उड़ती आसमान में जाती,
सबको लगती कितनी अच्छी हैं ये परी,
कितनी प्यारी कितनी न्यारी है ये परी ।

आस्था कुमारी, कक्षा-7,
राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय सराणा, जालोर

धरती बाबा

जीवन का होम कर देने वाले कई ऐसे क्रांतिकारी वीर हुए हैं, जिन्होंने भारत के गौरव को ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। राँची के तिहतु ग्राम में एक आदिवासी परिवार में जन्मे बिरसा मुंडा का नाम भी महान विभूतियों में लिया जाता है। 19 वर्ष की युवा अवस्था में उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध लगान माफी के लिए आंदोलन प्रारंभ किया और इसी कारण उन्हें हजारीबाग जेल में डाल दिया गया। बिरसा 25 वर्ष की छोटी उम्र में ही इस संसार से विदा हो गए, पर अकाल पीड़ित किसानों के हितों और देशवासियों के गौरव की रक्षा के लिए उन्होंने जो संघर्ष किया, उसके लिए उन्हें झारखण्ड निवासी 'धरती बाबा' के नाम से पुकारते हैं। भारतीय स्वतंत्रता की कहानी ऐसे ही वीर नौजवानों की कहानी हैं।

मनोज कुमार,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,बिशनगढ़,
जालोर (राज.)

मार्ग

एक दृष्टिहीन व्यक्ति हाथ में लालटेन लिए अँधेरी रात में रास्ते के निकट बड़े गड्ढे के पास खड़ा था और रास्ते से गुजरते लोगों से चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था- 'भाइयों! उधर बड़ा गड्ढा है। उधर से न जाना।' राह गुजरते हुए एक व्यक्ति ने उससे कहा-'क्यों भाई! तुम्हें स्वयं दिखाई नहीं पड़ता, फिर यह लालटेन हाथ में लिए क्यों खड़े हो? ' अंधा व्यक्ति बोला-'बंधु! मेरी बाहर की आँखे नहीं हैं तो क्या हुआ, हृदय तो खुला है। बहुत से ऐसे हैं, जो आँखें होते हुए भी इस गड्ढे में जा गिरेंगे। यह लालटेन उन्हीं को मार्ग दिखाने के लिए है।''

रेवत सिंह,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
बिशनगढ़, जालोर (राज.)

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

पुस्तक समीक्षा

तम्बाकू नियंत्रण के मुद्दे

लेखक : डॉ. राकेश गुप्ता; **प्रकाशक** : Nation Press.com; **पृष्ठ संख्या**: 150; **मूल्य**: ₹495/-

दूसरी पुस्तक : तम्बाकू मुक्ति की ओर

लेखक : डॉ. राकेश गुप्ता; **प्रकाशक** : Nation Press.com; **पृष्ठ संख्या**: 134; **मूल्य**: ₹450/-

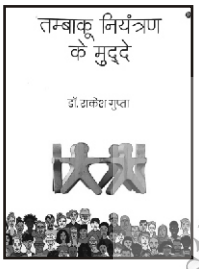

तम्बाकू एवं उसके उपयोग के दुष्परिणामों के बारे में अक्सर घर-परिवार, कार्यस्थल आदि पर चर्चाएँ सुनने को मिलती है। तम्बाकू का सेवन एक आम बात हो गई है और इसी अनुपात में उसके सेवन से होने वाली तकलीफों एवं हानियों की बात भी। चिकित्सालयों में तम्बाकू रोग से पीड़ित व्यक्तियों के हालात देखकर इसकी भयावहता का अंदाज लगाया जा सकता है। दरअसल तम्बाकू खाना-पीना एक रोग है और उसे खाने-पीने वाला एक रोगी यानी तम्बाकू रोग का रोगी। यह मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा है। इससे बचना बहुत जरूरी है। यही कारण है कि तम्बाकू के उपयोग से होने वाली बीमारियों व खतरों से सावधान करने के लिए प्रतिवर्ष 31 मई को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस सम्बन्ध में व्यापक प्रचार-प्रसार एवं वातावरण बनाने के लिए सरकारें, स्वयंसेवी संस्थाएँ, चिकित्सालय, शिक्षण संस्थाएँ आदि आवश्यक कार्यवाही कर रही हैं। कुल मिलाकर बड़ी बात यह है कि इस सम्बन्ध में नागरिकों की सकारात्मक सोच एवं समझ विकसित करना आवश्यक है ताकि वे स्वयं समझ सकें कि इसका उपयोग हमारे लिए नुकसानदायक है, लिहाजा हम इससे बचें, इसका सेवन नहीं करें।

इस महत्त्वपूर्ण सामाजिक संरक्षा एवं सुरक्षा से जुड़े विषय पर Nation press.com द्वारा दो अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हाल ही में प्रकाशित की गई है। इन पुस्तकों के लेखक डॉ. राकेश गुप्ता हैं। डॉ. गुप्ता का नाम एवं सुयश सर्वविदित है। वे पिछले दो दशक से तम्बाकू नियंत्रण के क्षेत्र में एक सक्रिय तम्बाकू उपचार विशेषज्ञ, सहभागी, वक्ता, प्रबोधक एवं प्रशिक्षक हैं। वे संतोकबा दुर्लभजी स्मृति अस्पताल एवं मेडिकल रिसर्च संस्थान में तम्बाकू उपचार केन्द्र के प्रभारी चिकित्सक होने के साथ ही राजस्थान केन्सर फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष हैं। लेखक का गहन अध्ययन, अनुभव एवं सतत शोधवृत्ति इन दोनों प्रकाशनों की प्रामाणिकता को सिद्ध करती है।

तम्बाकू पदार्थों के संबंध में एक व्यापक कानून विगत 20 वर्षों से प्रभावशील हैं जिसे सिगरेट और अन्य तम्बाकू उत्पाद (विज्ञापन का प्रतिषेध और व्यापार तथा वाणिज्य उत्पादन, प्रदाय और वितरण का विनियमन) अधिनियम 2003 Cigrateles and other Tobacco Product Act-COTPA 2003 अधिनियम संख्यांक 34 दिनांक 18 मई, 2003 के नाम से जाना जाता है।

तम्बाकू नियंत्रण के मुद्दे पुस्तक में कोटपा 2003 के प्रावधानों एवं तत्संबंधी व्यवस्थाओं का बहुत प्रभावशाली ढंग से विवेचन किया गया है। कानून की अवहेलना करने पर आर्थिक जुर्माने अथवा कारावास अथवा दोनों सजाओं के प्रावधानों का वर्णन पाठकों को सहज ही में चेतावनी देता है। भारत गाँवों में बसता है। जनगणना 2011 के अनुसार लगभग दो तिहाई (72.18%) लोग गाँवों में बसते हैं। ग्राम पंचायतों की भूमिका तम्बाकू नियंत्रण कार्य में बहुत अहम है। इस संबंध में उचित एवं आवश्यक जानकारी पुस्तक में दी गई है। खुली सिगरेट का व्यापार हमारे युवा वर्ग के लिए बहुत हानिकारक है। तम्बाकू के धुएँ से मुक्ति स्वस्थ समाज की रचना के लिए बहुत जरूरी है।

यह विडम्बना कितनी भयावह एवं चिंताजनक है कि तम्बाकू का उपयोग करने में कार्यस्थल पर कार्य करने वाले व्यक्ति भी परवाह नहीं करते जबकि इस संबंध में सेवा कानूनों में मनाही के साथ उपयोग करने पर अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रावधान है। यह बहुत गंभीर मुद्दा है जिसे लेखक महोदय ने बहुत चतुराई एवं मेहनत करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

मीडिया एवं सूचना तंत्रों का उपयोग तम्बाकू नियंत्रण कार्य में बहुत प्रभावशाली ढंग से हो सकता है। तम्बाकू विज्ञापन तथा उत्पादकों एवं वितरकों-विक्रेताओं के स्तर से अधिकाधिक बिक्री की होड़ भी चिंताजनक है। इस पर पुस्तक में सांगोपांग विवेचन किया गया है। तम्बाकू उत्पादों पर सचित्र चेतावनियाँ छपी रहती है। इस बाबत भी हकीकत से रूबरू कराते आलेख पुस्तक में है।

'तम्बाकू का उपयोग हानिकारक है' इस सच्चाई को स्वीकार करने के उपरांत भी इसका उपयोग करना चिंताजनक है। मगर यह है सच। ऐसे में तम्बाकू नियंत्रण हेतु जन समर्थन प्राप्त करना जरूरी है। इसके लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं, जन प्रतिनिधियों, शिक्षकों, चिकित्सकों, कलाकारों आदि को आगे बढ़कर समझाइश करना वांछित है। सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भी तम्बाकू का उपयोग बाधा बनता है। अतः सुनियोजित तरीके से सतत विकास की धारा को निर्विघ्न प्रवाहित करने के लिए नशा मुक्त समाज की स्थापना अत्यंत आवश्यक है। समीक्ष्य पुस्तकों में इस संबंध में अपेक्षित जानकारी विद्वान लेखक महोदय के द्वारा प्रदान की गई है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.), ग्लोबल एडल्ट टोबेको सर्वे, जो गेट्स सर्वेक्षण के नाम से जाना जाता है, जैसे ख्यातनाम मंचों से समय-समय पर तम्बाकू से हो रहे नुकसान एवं उनसे बचने के लिए उपायों पर प्राप्त निष्कर्षों एवं सुझावों को पर्याप्त मात्रा में इन प्रकाशनों में शुमार किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की अंतर्राष्ट्रीय संधि/ F.C.T.C. फ्रेम कन्वेंशन ऑन तम्बाकू कंट्रोल के अनुच्छेद 5.3 के अनुसार हर सदस्य राष्ट्र को तम्बाकू नियंत्रण संबंधी जनस्वास्थ्य नीतियों को तम्बाकू उद्योग के व्यावसायिक व अन्य निहित स्वार्थों से राष्ट्रीय कानून के अनुसार रक्षा करनी होगी। ऐसे में अनुच्छेद 5.3 शीघ्रातिशीघ्र लागू होना चाहिए। प्रथम खण्ड तम्बाकू नियंत्रण के मुद्दे में इस संबंध में उत्तम जानकारी पाठकों को अध्ययन-मनन के लिए उपलब्ध करवाई गई है।

ए-4 साइज में श्रेष्ठ गुणवत्तायुक्त पेपर पर सराहनीय मुद्रण युक्त प्रथम खण्ड में कुल 76 अध्याय हैं जो एक से एक बढ़कर पठनीय एवं अनुकरणीय है। इनके शीर्षक इतने अपीलिंग है कि वे सहज ही में पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। कतिपय शीर्षक देखिए-

एक अध्ययन के मुताबिक हमारे देश

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

भारत में प्रतिवर्ष लाखों लोग तम्बाकू जन्य तकलीफों/बीमारियों की वजह से काल कवलित हो जाते हैं। तम्बाकू खाना-पीना एक रोग है और इसका सेवन करने वाला एक रोगी। मगर यह प्रमाणित सत्य है कि इसे पूर्णतः रोका भी जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि तम्बाकू उपयोग से होने वाली हानियों, छोड़ने पर होने वाले लाभों, उपचार प्रणालियों, कानून की गंभीरता आदि विषयों पर सटीक व सामयिक जानकारी व प्रचार-प्रसार किया जावे। इसी मानव हितैषी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपाय विद्वान लेखक की दूसरी पुस्तक ''तम्बाकू मुक्ति की ओर' में बताए गए हैं। कुल 134 पृष्ठों (साइज ए-4) में 67 महत्त्वपूर्ण आलेख इस पुस्तक में दिए गए हैं।

एक और चिंताजनक मुद्दे की ओर लेखक महोदय ने पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है और यह है महिलाओं में तम्बाकू उपयोग की बढ़ती प्रवृत्ति। भारत सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्रालय ने अपनी एक रपट (Report' 2010) में बताया कि देश में कुल तम्बाकू उपभोगकर्ताओं में 13 प्रतिशत महिलाएँ हैं। सामान्यतः यह धारणा रहती है कि परिवार में पुरुष वर्ग की खराब आदतों के लिए महिलाएँ उन्हें टोकती रोकती है। कई बार तो जिद्द करके भला बुरा सुन सहनकर मर्दों से इन आदतों को छुड़वाने अथवा कम करवाने में वे सफल होती है। चिंता तब होना स्वाभाविक है जब वे महिलाएँ स्वयं नशा करने लग जाती है। इस मुद्दे को बहुत सलीके से पुस्तक तम्बाकू मुक्ति की ओर में लेखक ने उठाया है। (लेख संख्या 20 । पृष्ठ 39-40) अध्याय का शीर्षक है। माँ को बचाएँ, तम्बाकू उपभोग से.... स्वस्थ और समृद्ध रखें परिवार और समाज...। ऐसे आलेख निश्चय ही मातृशक्ति को झकझोरने, उन्हें सावधान करने वाले हैं।

युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की अनमोल धरोहर होती है। उसी पर राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। वे निर्माण एवं विकास यज्ञ में प्रमुख पुरोहित होते हैं। दुर्भाग्य से इतने अनमोल युवा वर्ग में नशे की आदत तेजी से बढ़ रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रपट 2011 के अनुसार वयस्क भारतीयों में 35% तम्बाकू का सेवन करते हैं। यद्यपि शिक्षण संस्थाओं में कोटपा एक्ट 2003 के नियम 4 (स्कूल में धूम्रपान रहित वातावरण देना) और नियम 6 ए,बी, के सभी शिक्षण संस्थाओं की 100 गज की परिधि में तम्बाकू बिक्री पर प्रतिबंध लागू है तथापि इसके बावजूद छात्रवृंद को फिसलन से बचाते हुए आवश्यक बंदोबस्त विद्यालय, विभाग एवं शासन स्तर से किया जाना आवश्यक है। पुस्तक में युवा घातक तम्बाकू की चपेट में... कैसे बचाए उन्हें (दो भाग लेख 21, 22/पृष्ठ 41, 42, 43, 44) में वास्तविक स्थिति की परिक्रमा करवाते हुए अगले आलेख 23 (पृष्ठ 45-46) युवा तम्बाकू युक्त कैसे हो सकते हैं? में एक तरह से अंधेरे में आलोक दिखाते हुए सुझाव व उपचारात्मक कदम सुझाए गए हैं। इस वैश्विक समस्या का निदान बिना जन सहभागिता एवं आमजन में जागरूकता के संभव नहीं है। तत्संबंधी शीर्षक से आवश्यक जानकारी पुस्तक में दी गई है।

तम्बाकू खाने को लेकर अनेक जिज्ञासाएँ आम व्यक्तियों के जेहन में रहती है। मसलन-

- तम्बाकू में ऐसा क्या है जो इसके खाने-पीने वालों को अटकाए रखता हैं याने छोड़ने में बाधा है?
- तम्बाकू हानिकारक है, मारक है। यह सब जानते हैं। फिर सरकार इसे बंद क्यों नहीं कर देती?

ऐसे प्रश्नों की शृंखला बनाकर उनके तर्क संगत जवाब तम्बाकू खाने पर बातचीत भाग 1,2 कुछ चुनिंदा प्रश्नों के उत्तर लेख 27 व 28 (पृष्ठ 53-56) में दिए गए हैं-

राजस्थान प्रदेश में तम्बाकू नियंत्रण के लिए राज्य सरकारें कटिबद्ध रही है। देश में राजस्थान की तम्बाकू नियंत्रण के क्षेत्र में शीर्ष स्थान रहा है। दस वर्ष पूर्व 2013 में विश्व तम्बाकू निषेध दिवस (31.05.2013) के दिन इस महत्ती उपलब्धि के लिए प्रदेश के मेडिकल एवं स्वास्थ्य विभाग तथा समीक्ष्य पुस्तकों के लेखक डॉ. राकेश गुप्ता को विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस उपलब्धि की पुष्टि पुस्तक तम्बाकू मुक्ति की ओर के अंतर्गत अंतिम तीन लेख (संख्या 65, 66, 67) करते हैं जो इस प्रकार है-

- राजस्थान में तम्बाकू नियंत्रण (पेज 129-130)
- राजस्थान में तम्बाकू नियंत्रण की उपलब्धियाँ (पेज 131-132)
- राजस्थानियों ने घटाया तम्बाकू खाना-पीना (पेज 133-134)

समीक्षाधीन दोनों पुस्तकें तम्बाकू नियंत्रण के क्षेत्र में उचित वातावरण बनाने, नागरिकों में समझ विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी। ये सभी लेख जयपुर से प्रकाशित होने वाले प्रतिष्ठित अखबार समाचार जगत में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए हैं। इन्हें सराहना मिली जिसके ये हकदार हैं।

कुछ अखरने वाली बातें भी हैं। शृंखलाबद्ध प्रकाशन में समय लगता है। बारह दर्जन आलेख (76+67=143) प्रति सप्ताह एक आलेख के हिसाब से 3-4 वर्ष में यह अनुष्ठान पूरा हुआ लगता है। उसके उपरांत भी तत्काल न आकर एक अंतराल के पश्चात पुस्तकाकार प्रकाशन हुआ है, जो सहज स्वाभाविक है। ऐसे में प्रकाशन से पूर्व सभी आलेखों में दिए समंकों (Datas), तिथि, वर्ष आदि को आदिनांक (Up to date) करने का कार्य बहुत सावधानी व परिश्रम से किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए तम्बाकू नियंत्रण के मुद्दे पुस्तक में श्री गणेश प्रथम लेख में कोटपा एक्ट 2003 को आए 10 वर्ष बताए हैं। जबकि इसे पुस्तक प्रकाशन के समय 19-20 वर्ष हो गए हैं। यह उल्लेखनीय है कि कोटपा एक्ट 2003, अप्रेल 2004 से प्रभावशील हो गया। इसी प्रकार ज्यादातर संदर्भों में डेटा 2011-2015 तक के प्रतीत होते हैं। प्रस्तावना में भारत में प्रतिवर्ष 1.5 लाख मृत्यु तम्बाकू महामारी से बताई है जो संदिग्ध है।

Nation Press.Com से प्रकाशन व वितरण प्राविधि की जानकारी का पता-ठिकाना, संपर्क सूत्र (फोन नंबरादि), प्रकाशन वर्ष आदि पुस्तकों में सामान्यतः सहज ही में मिलते हैं। सुझाव है कि आगामी संस्करणों में इन्हें दिया जाए। शोधार्थी व लेखक अपने प्रतिवेदनों में इन्हें शुमार करते हैं जो लाजिमी है। निःसंदेह दोनों पुस्तकें कागज, मुद्रण, प्रस्तुति आदि में गुणवत्तायुक्त है तथापि इनका मूल्य अधिक है। सामान्य पाठक इन्हें खरीद कर अपने संग्रह की शोभा बढ़ा सके, इस दृष्टि से उचित मूल्य के संस्करण अपेक्षित रहते हैं। समग्रतः समीक्ष्य दोनों पुस्तकें तम्बाकू नियंत्रण के मुद्दे एवं तम्बाकू मुक्ति की ओर बहुत उपयोगी एवं सार्थक है। शासन को ऐसे प्रकाशनों का उपयोग प्रचार-प्रसार एवं जन जागरूकता पैदा करने के लिए करना चाहिए। इति शुभम।।

समीक्षक : **ओमप्रकाश सारस्वत**
संयुक्त निदेशक (सेवानिवृत्त)
ए- विनायक लोक, बाबा श्री रामदेवजी रोड,
गंगाशहर, बीकानेर (राज.)-334401
मो: 9414060038

Rajasthan Education Department

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

स्टूडेंट पुलिस कैडेट योजना के अंतर्गत करवाया भ्रमण

बीकानेर– गृह विभाग राजस्थान सरकार व पुलिस मुख्यालय द्वारा छात्र-छात्राओं को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने व शांति व नागरिक सुरक्षा के लिए पुलिस और छात्रों के बीच मित्रवत संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से चलाई गई स्टूडेंट पुलिस कैडेट योजना (एसपीसी) के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोतीगढ़ (बीकानेर) के विद्यार्थियों को छतरगढ़ थाने का भ्रमण करवाया गया। संस्था के प्रधानाचार्य मोहर सिंह सलावद ने बताया कि छतरगढ़ थाने के भ्रमण के साथ-साथ एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण में विद्यार्थियों को जूनागढ़ किला व देष्णो धाम का भी भ्रमण करवाया गया। थाने के भ्रमण के दौरान थानाधिकारी जय कुमार भादू ने विद्यार्थियों को थाने कि कार्यप्रणाली से अवगत करवाया व साईबर अपराधों के बारे में विस्तार से जानकारी के साथ-साथ सोशल मीडिया के दुरुपयोग, बच्चों के विरुद्ध होने वाले अपराध सहित नशे के विरुद्ध जागरूकता, यातायात नियमों का पालन करने व अपने माता पिता व गुरुजनों की आज्ञा का पालन करना चाहिए साथ ही बाल मजदूरी जैसी कुरीतियों के बारे में जानकारी दी। थाने के एचएम रामचरण मीणा सहित स्टाफ ने थाने का भ्रमण करवाया व थाने में हो रहे कार्यों की जानकारी दी।

वार्षिकोत्सव व भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन

नागौर– महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय मेहरों की ढाणी, कुचामन सिटी (नागौर) के स्थानीय विद्यालय प्रांगण में वार्षिकोत्सव व भामाशाह सम्मान समारोह मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जगदीश राय व यूसीसीओ मंजू चौधरी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर भामाशाहों द्वारा विद्यालय को विविध सामग्री प्रदान की गई। लायंस क्लब कुचामन फोर्ट द्वारा विद्यालय गणवेश, स्वेटर, भारत विकास परिषद कुचामन द्वारा स्वेटर, महावीर इंटरनेशनल कुचामन द्वारा स्वेटर तथा माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा दो पानी की टंकियां मय फिटिंग बालिकाओं के शौचालय का निर्माण करवाया गया। एस.एम. सी. सदस्यों का विद्यालय को अपेक्षित सहयोग मिला। राजस्थान में शिक्षा के बढ़ते कदम के अंतर्गत विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति से अभिभावकों को अवगत करवाया गया। नो बैग डे के तहत आयोजित की जाने वाली गतिविधियों, गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL किट और कक्ष), मध्याह्न भोजन वितरण, बाल गोपाल दुग्ध योजना, निःशुल्क गणवेश वितरण एवं अन्य सभी विद्यार्थी हित की विभागीय योजनाओं की अभिभावकों को जानकारी प्रदान की गई। इस अवसर पर समस्त भामाशाहों, विद्यार्थियों, शिक्षकों, एस.एम.सी. सदस्यों को स्मृति चिह्न और प्रशंसा पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। विद्यालय परिवार द्वारा सभी अतिथियों का हार्दिक साधुवाद प्रकट किया गया।

छात्र-छात्राओं ने किया व्यासायिक शिक्षा अंतर्गत औद्योगिक भ्रमण

झालावाड़– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भिलवाड़ी के व्यावसायिक शिक्षा योजना अंतर्गत आईटी एवं एग्रीकल्चर ट्रेड के कक्षा 9 तथा 10 के 130 विद्यार्थियों को गाँधीसागर सिंचाई एवं जल विद्युत परियोजना का औद्योगिक भ्रमण करवाया। मीडिया प्रभारी श्री राजेश हरदेनिया ने बताया कि मध्य प्रदेश राज्य के चंबल नदी पर बने गाँधी सागर बाँध पर बने जल विद्युत परियोजना के भ्रमण के दौरान प्रधानाचार्य सुश्री संजीदा परवेज ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह भ्रमण विद्यार्थियों को अपने और दूसरों के अनुभव से सीखने का अच्छा अवसर देते हैं। औद्योगिक भ्रमण से विद्यार्थियों में नई ऊर्जा का संचार होता है। जल विद्युत परियोजना सुपरवाइजर द्वारा विद्यार्थियों को बाँध पर बने 23 मेगावाट की पाँच हाईड्रॉलिक टरबाइन द्वारा बिजली उत्पादन की कार्यप्रणाली को समझाया गया। आई टी वोकेशनल ट्रेनर दानिश सिद्धिकी द्वारा बाँध परियोजना अंतर्गत विद्युत इकाई में लगे कंप्यूटर की जानकारी दी गई। एग्रीकल्चर वोकेशनल ट्रेनर श्री महावीर प्रसाद शर्मा ने बाँध के महत्त्व की जानकारी दी। विद्यार्थियों ने भ्रमण के दौरान प्राकृतिक स्थलों की जानकारी के साथ भोजन का भरपूर आनंद लिया।

भामाशाह ने विद्यालय को सहयोग किया

झालावाड़– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोलाना, ब्लॉक झालरापाटन के बी-ब्लॉक नवीन भवन में विद्यालय के प्रांगण में डॉ. राजेश जैन ने भामाशाह के रूप में 70000/- रुपये (अक्षरे सत्तर हजार रुपये) की राशि व्यय कर विद्यालय में तार बाउण्ड्री एवं लोहे का गेट व बाउण्ड्री के सहारे पौधारोपण मय ट्री गार्ड का कार्य करवाया। विद्यालय स्टाफ द्वारा तिलक लगाकर, साफा बाँधकर सपत्नीक भामाशाह का सम्मान किया गया।

बेजुबान पक्षियों के लिए लगाए पानी के पालसिये

झुंझुनूं–मलसीसर के निकटवर्ती गाँव बाडेट के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मे बेजुबान पक्षियों के लिए पानी के पालसिए लगाए। प्रधानाचार्य महावीर प्रसाद ने बताया कि पक्षी हमारी धरोहर है। इन्हें गर्मी में प्यास से बचाने के लिए सार्वजनिक जगहों पर पानी के पालसिए व चुग्गे की व्यवस्था करनी चाहिए। ये मानव धर्म है।

छात्र-छात्राओं को बैग वितरित किए

बून्दी– राजकीय प्राथमिक विद्यालय गागोस में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को भामाशाह द्वारा शनिवार को पाठ्य सामग्री वितरण की गई। प्रधानाध्यापक विजेन्द्र मीणा ने बताया कि भामाशाह संजय अग्रवाल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कुसुम अग्रवाल द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत 30 विद्यार्थियों को बैग वितरित किए गए।

भामाशाहों ने विद्यालय को आर.ओ. एवं वाटर कूलर भेंट किया

प्रतापगढ़–डॉक्टर संदेश एरन एवं उनकी बहन श्रीमती आस्था एरन द्वारा अपने माता पिता स्वर्गीय डॉक्टर कृष्णा एरन एवं स्वर्गीय गोविंद राम जी एरन की स्मृति में रियांशी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में एक नवीन शुरूआत करते हुए एक आर.ओ. एवं वाटर कूलर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़ को भेंट किया गया। डॉक्टर संदेश ऐरन ने बताया कि वह अपनी पुत्री का जन्म दिवस एक अनूठे तरीके से मनाना चाहते हैं उसके लिए उन्होंने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़ का चयन किया जहाँ पर 700 से अधिक बालिकाएँ अध्ययनरत

हैं। इन बालिकाओं को स्वच्छ शुद्ध एवं ठंडा पेयजल उपलब्ध करवाने के लिए आर.ओ. एवं वाटर कूलर भेंट करने का विचार उनके मन में आया। इसके लिए उनके द्वारा डॉ. आलोक यादव एवं श्री सुनील भट्ट अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक शिक्षा प्रतापगढ़ से चर्चा की उसके उपरांत उन्होंने राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रतापगढ़ का चयन किया अपने परिवार और मित्र जनों के साथ विद्यालय में उपस्थित होकर छात्राओं के मध्य वाटर कूलर एवं आर.ओ. का लोकार्पण करते हुए अपनी पुत्री रियांशी का जन्म दिवस मनाया। उन्होंने इस विद्यालय को ₹100000 से अधिक मूल्य की उक्त सामग्री प्रेरक श्री दीपक पंचोली के प्रेरणा से भेंट करने को अपना सौभाग्य माना। विद्यालय की छात्राओं एवं स्टाफ द्वारा इस कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए अति प्रसन्नता व्यक्त की गई इस कार्यक्रम में एरन परिवार के साथ विद्यालय में अध्ययनरत समस्त छात्राएँ एवं विद्यालय का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

यूथ एण्ड इको क्लब का उद्घाटन किया गया।

झुंझुनूं– महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय इण्डाली, झुंझुनूं विश्व पर्यावरण की थीम 'इको सिस्टम रेस्टोरेशन इमेजिन' (फिर से बनाना) एवं पुनर्स्थापना बनाने के उद्देश्य की क्रियान्विति हेतु राजस्थान के भौगोलिक परिदृश्य को देखते हुए जलवायु में हरियाली को बनाए रखना एवं जल संरक्षण एवं वनों के संरक्षण पर ध्यान देने के उद्देश्य से सत्र 2022-23 में प्रत्येक राजकीय मा./उ.मा. विद्यालय को 15000 की राशि प्रदान की गयी। झुंझुनूं जिले के झुंझुनूं ब्लॉक में स्थित महात्मा गाँधी राजकीय (अंग्रेजी माध्यम) विद्यालय के संस्थाप्रधान ने पहले विद्यालय स्टाफ मीटिंग की उसके बाद SDMC की मीटिंग में सर्वसम्मति से विद्यालय प्रांगण के सक्रिय पीने के पानी की टंकी की मरम्मत करने व नल ठीक तथा हाथ धोने से फैले पानी से कीचड़ की समस्या से निजात पाने हेतु नाली द्वारा पेड़ों तक पहुँचाने पर सहमति बनी व विद्यालय स्टाफ के सहयोग से उपर्युक्त सभी कार्य करवाने के पश्चात विद्यालय प्रांगण में फूलदार पौधे लगाए गए जिनमें पानी देने हेतु वाटर मोटर की आवश्यकता महसूस हुई तो व्याख्याता महेश ली लाम्बा ने वाटर मोटर विद्यालय को भेंट की। पौधों में खाद-पानी देने का जिम्मा विद्यालय के दो सहायक कर्मचारी श्री सुंदरलाल जी व श्री नरेश जी मीणा को सौंपा गया। सब की मेहनत रंग लायी। आज के दिन इंडाली विद्यालय का हरा-भरा प्रांगण बहुत ही सुंदर, जीवंत व आकर्षक लगता है।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

Rajasthan Education Department सत्यमेव जयते

ज्ञान संकल्प पोर्टल

भामाशाहों ने बदली विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेजड़ा दिखनादा, सरदारशहर (चूरू)

❒ हरी प्रसाद सरावग

पृष्ठभूमि: राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेजड़ा दिखनादा, ब्लॉक-सरदारशहर (चूरू) सन् 1957 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ था। सन् 1970 में उच्च प्राथमिक, सन् 2000 में माध्यमिक तथा सन् 2013 में उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में क्रमोन्नत हुआ। सत्र 2015-16 में इस उच्च माध्यमिक विद्यालय में मात्र एक शिक्षक, एक वरिष्ठ सहायक व एक सहायक कर्मचारी पदस्थापित थे। सत्र 2016-17 में ग्रामवासियों की लगन व सहयोग से तथा सरकार के पदोन्नति व स्टाफिंग पैटर्न से विद्यालय में स्वीकृत लगभग सभी पदों पर कर्मचारियों की नियुक्ति हुई। इससे विद्यालय में पढ़ाई का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा, जिसके परिणामस्वरूप नामांकन में आशातीत वृद्धि हुई। जहाँ सत्र 2015-16 में मात्र 325 विद्यार्थी थे जो सत्र 2022-23 में नामांकन 570 तक पहुँच गया तथा परीक्षा परिणाम में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है। सत्र 2015-16 से लगातार कक्षा 12 का परिणाम शत प्रतिशत रहा है।

30 अप्रेल, 2016 को इस विद्यालय के पूर्व विद्यार्थी रहे श्री गौरीशंकर बाना ने वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत के रूप में इस विद्यालय में कार्यग्रहण किया और इस विद्यालय की जर्जर अवस्था तथा भौतिक संसाधनों की कमी को देखते हुए सर्वप्रथम संस्थाप्रधान व विद्यालय स्टाफ साथियों से इसमें सुधार के बारे में चर्चा की। फिर संस्थाप्रधान की अनुमति से गाँव के मुखिया लोगों व SDMC सदस्यों की एक बैठक 20 अप्रेल, 2017 को बुलाई गई जिसमें गाँव के लगभग 200 लोगों ने भाग लिया। जिसमें सर्वसम्मति से 31 सदस्यों की एक समिति का गठन किया गया जो विद्यालय विकास के लिए पूरी तरह से समय दे सके।

विद्यालय का कायाकल्प भामाशाहों के सहयोग से दो चरणों में हुआ पूर्ण –प्रथम चरण (1 जुलाई, 2017 से 5 मई, 2018)-

ग्रीष्मावकाश में वरिष्ठ अध्यापक श्री गौरीशंकर बाना व समिति के सदस्यों ने जनसहयोग के लिए विद्यालय विकास हेतु घर-घर जाकर भामाशाहों को प्रेरित किया। जिसमें 1 जुलाई, 2017 से 5 मई, 2018 तक कुल 8,69,556 रुपये राशि प्राप्त हुई। जिसको मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना (40-60) के अन्तर्गत 21,73,000 रु. के कार्य 25 अगस्त, 2018 तक पूर्ण करवाए गए जिसमें 10 कक्षा-कक्ष मय बरामदा जीर्णोद्धार करवाए गए, छात्र-छात्रा व स्टाफ शौचालय निर्माण, 200×100 फुट चौक निर्माण, स्टील रेलिंग, मंच और उसका टीनशेड, मेनगेट से चौक तक 150×15 फुट इन्टरलोक रास्ता निर्माण, शाला भवन रंगरोगन, स्मार्ट क्लास में एलईडी व प्रोजेक्टर, 16 सीसीटीवी. कैमरे, इन्वर्टर व 500 विद्यार्थियों के लिए फर्नीचर निर्माण किया गया।

द्वितीय चरण (30 जनवरी, 2019 से 30 जनवरी, 2023 तक)- 23,00,659 रु. भामाशाहों से आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। उक्त सम्पूर्ण राशि ज्ञान संकल्प पोर्टल से मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में जमा करवाकर मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजनान्तर्गत 57,50,000 रु. के विकास कार्य करवाए गए। जिसमें खेल मैदान समतलीकरण, खेल मैदान तारबन्दी, 400 मीटर ट्रैक निर्माण, व्यायाम उपकरण, खेल मैदान सौन्दर्यकरण, टेबल टेनिस, चारदीवारी ऊँचा करवाना, कुण्ड की मरम्मत आदि कार्य करवाए गए तथा पुस्तकालय व कार्यालय फर्नीचर क्रय किया गया। प्राध्यापक स्व. श्री सुधीर कुमार सारण की स्मृति में उनकी पत्नी श्रीमती बिमला देवी व उनके पुत्र श्री रामकुमार सारण द्वारा राशि रुपये 15,00,000 रुपये ज्ञान संकल्प पोर्टल से जमा करवाए गए जिसमें चार कक्षा-कक्ष मय बरामदा (विज्ञान भवन) निर्माण कार्य किया गया।

भामाशाहों द्वारा सहयोग- 500 विद्यार्थियों को स्कूल बैग, जुराब, जूते व 250 जरूरतमंद विद्यार्थियों को स्वेटर एवं विवेकानन्द ग्राम विकास ट्रस्ट, जयपुर व प्रगतियान ट्रस्ट, जयपुर द्वारा सत्र 2017-18 से 2022-23 तक प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन राशि व छात्रवृत्ति के रूप में राशि रु. 3,60,100 दिए गए। श्री तेजाराम बोहरा खेजड़ा उतरादा द्वारा ट्यूबवेल निर्माण कार्य राशि रु. 2,00,000, श्री विनोद कुमार सारण खेजड़ा अगुणा द्वारा जिम व खेल-कूद का सामान राशि 1,25,000 रु., श्री रजनीश कुमार अ. राजपुरा तारानगर द्वारा ट्यूबवेल मोटर व सरस्वती माता मन्दिर निर्माण राशि रु. 71,000 (सत्र-2021-22)। श्री विनोद कुमार सारण खेजड़ा अगुणा- मैनगेट खिड़की, झूला व टेन्ट राशि 1,00,000 रु. (सत्र-2020-21)। विवेकानन्द ग्राम विकास ट्रस्ट, जयपुर व प्रगतियान ट्रस्ट, जयपुर अध्यापक मानदेय राशि 1,00,000 रु. (सत्र-

Rajasthan Education Department

2017-18 से 2022-23)। विवेकानन्द ग्राम विकास ट्रस्ट, जयपुर व प्रगतियान ट्रस्ट, जयपुर छात्रवृत्ति प्रोत्साहन राशि 3,60,000 रु. (सत्र-2017-18 से 2022-23)। श्री विनोद कुमार सारण, श्री लेखराम बाना एवं श्री लालचन्द पंवार विद्यार्थियों को बैग, जुराब, जूते व स्वेटर, राशि 3,00,000 रुपये (सत्र 2018-19)। श्री विनोद कुमार सारण, खेजड़ा अगुणा-5 किलोवाट सोलर फिटिंग सहित, राशि 4,00,000 (26/01/2023)। श्री जालूराम बाना खेजड़ा उतरादा-वाटर कूलर, पानी की टंकी व मोटर, राशि 1,00,000 रु.(सत्र-2016-17)

1. सहशैक्षिक गतिविधियाँ- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अध्ययन अध्यापन के कार्य के साथ-साथ विद्यालय में सत्र पर्यन्त नियमित रूप से सहशैक्षिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है जिसमें खेलकूद प्रतियोगिता नृत्य, गायन, निबन्ध, पोस्टर, मॉडल, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया जाता है। हमारे विद्यालय की छात्र संसद द्वारा समय-समय पर विज्ञान, लोक क्षेत्र एवं लोक कला से जुड़े कार्यक्रम किए जाते हैं जो स्टाफ एवं विद्यार्थियों का सराहनीय कदम है।

विशेष:-

1. इस प्रकार जनसहयोग प्रथम एवं द्वितीय चरण में मुख्यमंत्री जन सहभागिता योजना तथा भामाशाहों ने स्वंय के स्तर पर सत्र-1 जुलाई, 2017 से 30 जनवरी, 2023 तक लगभग 1,00,00,000 रु. (एक करोड़ रुपये) के विकास कार्य विद्यालय में करवाए जा चुके हैं।
2. विद्यालय स्टाफ द्वारा सत्र- 2017-18 से अब तक 2,12,500 रु. का आर्थिक सहयोग विद्यालय विकास में किया गया।
3. अक्षय पेटिका जो राज्य सरकार द्वारा में जुलाई 2017 में एक मुहिम शुरू की गई थी जो इस विद्यालय में अनवरत चल रही है जिसमें विद्यालय स्टाफ व विद्यार्थियों के नियमित सहयोग तथा ग्रामवासियों के सहयोग से 26 जनवरी, 2023 तक 1,05,000 रु. की राशि प्राप्त हुई है जिसे विद्यालय विकास कार्य में काम लिया गया है।

विद्यालय स्टाफ द्वारा किए गए सहयोग से ग्रामीणों को भी प्रेरणा मिली। सम्पूर्ण शैक्षिक व मंत्रालयिक स्टाफ का पूर्ण सहयोग रहा है। विद्यालय के भौतिक एवं शैक्षणिक कार्यों में समस्त कार्मिकों की भूमिका सराहनीय एवं सम्मान योग्य है।

प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेजड़ा
दिखनादा, चूरू (राज.)

हमारे भामाशाह

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से
राजकीय विद्यालयों को माह-मार्च 2023 में ₹50000 एवं अधिक राशि का सहयोग करने वाले भामाशाह

S. No.	Donar Name	School Name	Block Name	District	Amount
1	Mukesh Kumar Sharma	Govt. Senior Secondary School Doomara (216040)	Nawalgarh	Jhunjhunu	1870000
2	Ran Singh	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	502000
3	Seema Sharma	Govt. Senior Secondary School Sattasar (224948)	Shri Dungargarh	Bikaner	400000
4	Rameshwar Godara	Govt. Senior Secondary School Rampura Nyola 1rm (212197)	Suratgarh	Ganganagar	350000
5	Career Line Coaching Institute	Govt. Senior Secondary School Chelasi (213292)	Dhod	Sikar	200000
6	Gurmeet Singh	Mahatma Gandhi Govt. School Ratanpura (211133)	Sangaria	Hanumangarh	200000
7	Sugriv Singh Varma	Govt. Senior Secondary School Suroth (212499)	Hindaun	Karauli	200000
8	NKG Infrastructure Limited	Govt. Senior Secondary School Chirasan Chirawa Jhunjhunu (215815)	Chirawa	Jhunjhunu	200000
9	Asha Ram Renwa	Govt. Upper Primary School Khara (405893)	Sujangarh	Churu	200000
10	Mahendra Singh Jakhar	Govt. Upper Primary School Gups Dilaverpur (408102)	Chirawa	Jhunjhunu	190000
11	Nehru Lal Meena	Govt. Senior Secondary School Saiwala (217829)	Gangapur City	Sawaimadhopur	175000
12	Dayalal Patidar	Govt. Senior Secondary School Punarwas Colony Sagwara (223059)	Sagwara	Dungarpur	150000
13	Mohd Vasim Akram Khan	Govt. Senior Secondary School Rasoolpur (505421)	Fatehpur	Sikar	130000
14	NKG Infrastructure Limited	Govt. Senior Secondary School Bhaisawata Khurd (215908)	Singhana	Jhunjhunu	130000
15	Sohani Devi	Govt. Upper Primary School Gups Chhabari Khari (466939)	Ratangarh	Churu	119700
16	Govind Chand Goyal	Govt. Girls Senior Secondary School Nayabas Sector Four Kala Kuan Alwar (215734)	Umrain	Alwar	110110
17	Col Rajesh Bhukar	Mahatma Gandhi Govt. School Nadiya Kumharan Katrathal Sikar (402984)	Piprali	Sikar	110000
18	Ramesh Kumar	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	105000
19	Harish Danodia	Govt. Senior Secondary School Balod Badi (213139)	Fatehpur	Sikar	101000
20	Meena Kumari	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	101000

Rajasthan Education Department

21	Sarvoday Siksan Sansthan	Govt. Senior Secondary School Chenar (219845)	Nagaur	Nagaur	100000
22	Komal Kumar Meena	Govt. Senior Secondary School Jhijhaniya (224617)	Bakani	Jhalawar	100000
23	Om Prakash	Govt. Senior Secondary School Kamasar (419494)	Sardarshahar	Churu	100000
24	Kheenwa Ram	Govt. Girls Senior Secondary School Chak Rajiyasar (215462)	Sujangarh	Churu	100000
25	Jagat Inder Singh Pawar	Govt. Senior Secondary School Baringan (211919)	Karanpur	Ganganagar	100000
26	Mukesh Kumar Pandia	Govt. Senior Secondary School Luhara (215472)	Bidasar	Churu	100000
27	Vijay Kumar Poonia	Govt. Senior Secondary School Bhamasi (467134)	Rajgarh	Churu	100000
28	Laxmanlal Rebari	Govt. Upper Primary School Dhani Ghatau (502557)	Dovda	Dungarpur	100000
29	Sugriv Singh Varma	Govt. Senior Secondary School Suroth (212499)	Hindaun	Karauli	100000
30	Surendra Singh	Govt. Senior Secondary School Jetasar Sujangarh Churu 331802 (215479)	Sujangarh	Churu	100000
31	Rajesh Kumar Vishnoi	Govt. Senior Secondary School Gulle Ki Bery (220980)	Sedwa	Barmer	99000
32	Neelam Kumari	Govt. Upper Primary School Gups Chhabari Khari (466939)	Ratangarh	Churu	91000
33	Pema Ram Potaliya	Govt. Senior Secondary School Bijarasar (419937)	Sardarshahar	Churu	85600
34	Om Nath Sidh	Govt. Senior Secondary School Inyara (215521)	Bidasar	Churu	81000
35	Ladu Ram Jat	Govt. Primary School Dhani Gogana Bainatha Jogliya (405557)	Bidasar	Churu	80000
36	Hari Singh	Govt. Primary School Kalumbari (450473)	Pindwara	Sirohi	80000
37	Ballaram Yadav	Mahatma Gandhi Govt. School Kalakhari (215931)	Buhana	Jhunjhunu	80000
38	Jakir Husain	Govt. Senior Secondary School Garinda (213130)	Fatehpur	Sikar	79500
39	Anupama Tiwari	Govt. Senior Secondary School Tatanwa (213265)	Dhod	Sikar	78000
40	Chhotu Ram Meghwal	Mahatma Gandhi Govt. School Ggups Jaitasar (405550)	Sujangarh	Churu	78000
41	Balram Saharan	Govt. Senior Secondary School Kamasar (419494)	Sardarshahar	Churu	75000
42	Dayalal Patidar	Govt. Senior Secondary School Jantoda (223899)	Garhi	Banswara	75000
43	Subhash Khayalia	Govt. Senior Secondary School Khoru (448738)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	75000
44	Satyaveer Singh	Govt. Upper Primary School Kaman (411092)	Rajgarh	Churu	75000
45	Phool Singh	Govt. Senior Secondary School Dokwa (215221)	Rajgarh	Churu	74000
46	Lakhan Lal Meena	Govt. Upper Primary School Belpana (470105)	Raipur	Pali	67000
47	Trilok Chand Jat	Govt. Senior Secondary School Aabsar (215463)	Sujangarh	Churu	64100
48	Roop Kishor Meena	Govt. Senior Secondary School Dholapani (224802)	Chhoti Sadri	Pratapgarh	61000
49	Pratap Singh	Govt. Senior Secondary School Kesardesar Bohran (418508)	Bikaner	Bikaner	61000
50	Narendra Didel	Shree Ghanshyamdas Pusaram Imani Govt. Senior Secondary School Rol (213442)	Mundwa	Nagaur	60000
51	Kailash Chandra Chejara	Govt. Senior Secondary School Jorawar Nagar (219374)	Shri Madhopur	Sikar	60000
52	Om Prakash Bishnoi	Govt. Senior Secondary School Phoolasar Bada Kolayat Bikaner (211359)	Bajju Khalsa	Bikaner	60000
53	Sunita Kumari	Govt. Senior Secondary School Janana (214631)	Bhadra	Hanumangarh	59900
54	Onkar Singh Jakhar	Govt. Girls Senior Secondary School Chak Rajiyasar (215462)	Sujangarh	Churu	56400
55	Gokul Ram Gurjar	Govt. Upper Primary School Darolai (408966)	Andhi	Jaipur	55000
56	Mukesh	Govt. Senior Secondary School Khariya Kaniram (215438)	Sujangarh	Churu	55000
57	Keshar Dev Chahar	Mahatma Gandhi Govt. School Parasrampura (216081)	Nawalgarh	Jhunjhunu	54000
58	Chhoga Lal Gayari	Govt. Upper Primary School Dhikriya Kheri (408210)	Badi Sadri	Chittaurgarh	53200
59	Prem Prakash Sain	Govt. Senior Secondary School Solpur (227249)	Chauth Ka Barwara	Sawaimadhopur	51000
60	Khangara Ram	Govt. Senior Secondary School Gundau (213678)	Sarnau	Jalor	51000
61	Ram Prasad Sharma	Govt. Senior Secondary School Rupaheli Khurd Banera Bhilwara (214519)	Banera	Bhilwara	51000

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

62	Bhagirath Mal Sewda	Shahid Girdharilal Govt. Senior Secondary School Gudawadi (215446)	Sujangarh	Churu	51000
63	Hari Ram Saharan	Govt. Senior Secondary School Punras (211549)	Taranagar	Churu	51000
64	Munesh Poonia	Govt. Senior Secondary School Rajgarh (215272)	Rajgarh	Churu	51000
65	Nagar Mal	Govt. Upper Primary School Dandeu Mohan Singh (467203)	Rajgarh	Churu	51000
66	Ganpat Ram	Govt. Senior Secondary School Phoolasar Bada Kolayat Bikaner (211359)	Bajju Khalsa	Bikaner	51000
67	Sunil Kumar Poonia	Govt. Senior Secondary School Khuddi (215224)	Rajgarh	Churu	51000
68	Munniram	Govt. Senior Secondary School Dheengsara (219851)	Khinwsar	Nagaur	51000
69	Poonma Ram Suthar	Govt. Senior Secondary School Gundau (213678)	Sarnau	Jalor	51000
70	Dilkush Meena	Govt. Senior Secondary School Ramdi Sawai Madhopur (217924)	Sawai Madhopur	Sawaimadhopur	51000
71	Jagdish Prasad	Govt. Senior Secondary School Shimla (215284)	Sardarshahar	Churu	51000
72	Rajendra Singh	Govt. Senior Secondary School Doomara (216040)	Nawalgarh	Jhunjhunu	51000
73	Santosh Kumar	Govt. Senior Secondary School Sankhu (213160)	Laxmangarh (sikar)	Sikar	51000
74	Narendra Didel	Shree Ghanshyamdas Pusaram Innani Govt. Senior Secondary School Rol (213442)	Mundwa	Nagaur	51000
75	Neelam Sharma	Shaheed Omprakash Govt. Senior Secondary School Kemari (212615)	Nadoti	Karauli	51000
76	Sheela Mishra	Govt. Senior Secondary School Jaswantpura (214322)	Pisangan	Ajmer	51000
77	Devilall Verma	Govt. Senior Secondary School 6zwm (212114)	Gharasana	Ganganagar	51000
78	Raghunath Singh	Shaheed Vinod Kumar Govt. Senior Secondary School Patusari (215635)	Jhunjhunu	Jhunjhunu	51000
79	Rukmani Prajapat	Govt. Senior Secondary School Gajsar (215390)	Churu	Churu	51000
80	Rohitashwa Takhar	Govt. Senior Secondary School Chinchroli (215985)	Khetri	Jhunjhunu	51000
81	Lakkhi Ram Meena	Govt. Senior Secondary School Koyala (212745)	Bamanwas	Sawaimadhopur	51000
82	Mahipal Singh	Govt. Senior Secondary School Dudoli (219776)	Deedwana	Nagaur	50000
83	Mahipal Singh	Govt. Senior Secondary School Dudoli (219776)	Deedwana	Nagaur	50000
84	Pawan Kumar	Govt. Senior Secondary School Punras (211549)	Taranagar	Churu	50000
85	Vimal Trivedi	Mahatma Gandhi Govt. School Raiyana (214961)	Arthuna	Banswara	50000
86	Vijay Choudhary	Govt. Senior Secondary School Karawali (223525)	Salumbar	Udaipur	50000
87	Subhash Chandra	Govt. Senior Secondary School Dudoli (219776)	Deedwana	Nagaur	50000
88	Subhash Chandra	Govt. Senior Secondary School Dudoli (219776)	Deedwana	Nagaur	50000
89	Lal Chand Sharma	Govt. Senior Secondary School Khedaro Ki Dhani (213376)	Piprali	Sikar	50000
90	Mukesh Kumar Pandia	Govt. Senior Secondary School Luhara (215472)	Bidasar	Churu	50000
91	Lal Chand Sharma	Govt. Senior Secondary School Khedaro Ki Dhani (213376)	Piprali	Sikar	50000
92	Jodh Singh Parihar	Govt. Senior Secondary School Kalijal (219666)	Dhawa	Jodhpur	50000
93	Mukesh Kumar Pandia	Govt. Senior Secondary School Luhara (215472)	Bidasar	Churu	50000
94	Lal Chand Sharma	Govt. Senior Secondary School Khedaro Ki Dhani (213376)	Piprali	Sikar	50000
95	Latoor Chand Tyagi	Govt. Senior Secondary School Duwati (211739)	Dholpur	Dhaulpur	50000
96	Roop Kishor Meena	Govt. Senior Secondary School Dholapani (224802)	Chhoti Sadri	Pratapgarh	50000
97	Lehru Lal Gadri	Govt. Senior Secondary School Segwa (224182)	Chittorgarh	Chittaurgarh	50000
98	Madhu Bala Sharma	Govt. Girls Senior Secondary School Nayabas Sector Four Kala Kuan Alwar (215734)	Umrain	Alwar	50000
99	Apoorva Shekhawat	Govt. Girls Senior Secondary School Narehada (213052)	Kotputli	Jaipur	50000
100	Balwan Singh	Govt. Upper Primary School Kalal Kotra (410664)	Rajgarh	Churu	50000
101	Man Mohan Purohit	Govt. Senior Secondary School Bavri Kalla (220111)	Phalodi	Jodhpur	50000
102	Sandeep Singh	Govt. Upper Primary School Than Mathui (472221)	Rajgarh	Churu	50000
103	Deepak Kumar Dadhich	Govt. Senior Secondary School Mahalpur (216871)	Mangrol	Baran	50000
104	Jayanarayan	Govt. Senior Secondary School Dhani Meghsar (474589)	Taranagar	Churu	50000

Rajasthan Education Department

ज्ञान संकल्प पोर्टल के विकल्प Donate To A School के माध्यम से राजकीय विद्यालयों को माह–मार्च 2023 में प्राप्त जिलेवार राशि

S. NO.	DISTRICT	TRANSACTION	AMOUNT
1	CHURU	410	5602892
2	JHUNJHUNU	407	3175217
3	SIKAR	181	1686100
4	BIKANER	90	970394
5	NAGAUR	134	784030
6	GANGANAGAR	665	745166
7	BARMER	495	635670
8	DUNGARPUR	620	553710
9	SAWAIMADHOPUR	106	552654
10	CHITTAURGARH	194	551652
11	HANUMANGARH	173	527261
12	JAIPUR	366	516477
13	BANSWARA	158	492491
14	ALWAR	858	466544
15	JHALAWAR	473	445724
16	JODHPUR	328	420844
17	KARAULI	66	416396
18	JALOR	424	395618
19	RAJSAMAND	1290	361100
20	UDAIPUR	508	331135
21	BHILWARA	292	287935
22	PALI	875	280370
23	DAUSA	412	261261
24	AJMER	390	246922
25	KOTA	264	236755
26	BUNDI	304	229848
27	BARAN	56	202300
28	PRATAPGARH	105	201862
29	BHARATPUR	152	184665
30	SIROHI	214	123512
31	JAISALMER	142	114782
32	DHAULPUR	158	98985
33	TONK	373	71988
	Total	**11683**	**22172260**

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उदयपुर

प्रभाग–4, शैक्षणिक प्रौद्योगिकी प्रभाग राजस्थान, अजमेर

May, 2023

Monthly telecast schedules for 12 TV channels (One Class, One Platform) of PM eVidya

S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code	S.No.	Class	Link for Monthly schedule	QR Code
1.	Class I	https://bit.ly/3VcFCwl		7	Class VII	https://bit.ly/3LhYMwP	
2	Class II	https://bit.ly/3Lyjt8Z		8	Class VIII	https://bit.ly/422BqC3	
3	Class III	https://bit.ly/3LhX8eD		9	Class IX	https://bit.ly/3NlPSRI	
4	Class IV	https://bit.ly/3AElYAt		10	Class X	https://bit.ly/3Hl6vJg	
5	Class V	https://bit.ly/3AypCf4		11	Class XI	https://bit.ly/3oSc9wc	
6	Class VI	https://bit.ly/4259u0p		12	Class XII	https://bit.ly/41LVVDm	

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मई–जून, 2023 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302 004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक : सुनीता चावला, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

बाल शिविरा : मई-जून, 2023

Ronak, GSSS. Khajpur Naya, Jhunjhunu

Ronak,
GSSS. Khajpur Naya, Jhunjhunu

राकेश
श्रीमती राधा राउप्रावि. बींजवाड़िया, जोधपुर

Aanshu Jangid,
GSSS. Badet, Jhunjhunu

राकेश,
राउमावि. सोढ़ों की ढाणी, जोधपुर

अरुणा पारीक, राबाउमावि. काकड़ा, बीकानेर

अरुणा पारीक, राबाउमावि. काकड़ा, बीकानेर

ज्योति कटारिया,
श्रीमती राधा राउप्रावि. बींजवाड़िया,
जोधपुर

Rajasthan Education Department

TEDDY BEAR

Teddy Bear

Teddy bear, teddy bear,
Turn around.
Teddy bear, teddy bear,
Touch the ground.
Teddy bear, teddy bear,
Polish your shoes.
Teddy bear, teddy bear,
Go to school.

खुशी D/o दलीप
MGGS इण्डाली
कक्षा - 4

My friends

I have many friends.

Some friends are big.
Some friend are very small.
Some friends walk on land.
Some friends fly in the sky.
Some friends swim in water.
Some friends wriggle.
Some eat grass.

Sonakshi
Class- 5
MGGS- Indali

बारिश

बारिश आई छम छम,
आओ भीगें तुम और हम।

छप छपा छप उछले हम,
फिर अचानक से फिसले हम।

मिलकर खाएँ सब गरम पकौड़े,
देखो बरसने लगे हैं ओले।

ठंडी ठंडी हवा के झोंके,
मेंढक देखो टक टक ताके।

बारिश की मस्ती में हम खूब मजे उड़ाए,
आओ मिलकर बारिश में हम सब नहाये।

Name - Komal
Class- 3
MGGS इण्डाली

TRUE FRIENDS

Do not cut
me,
cried the
tree.
Because i
in my cool
shade
you rest.
Eat my fruits
that are best

take in my fresh
smell,
Let me live
My life well.

Komal D/o Kuldeep
Class-4
M.G.G.S INDALI
(JHUNJHUNU)

स्कूल

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

घंटी बजती है
बच्चे आते हैं
नींद में भरे-भरे
किताबों से लदे-लदे

घंटी बजती है
बच्चे जाते हैं
सहमे-सहमे, डरे-डरे
थके-थके और मरे-मरे

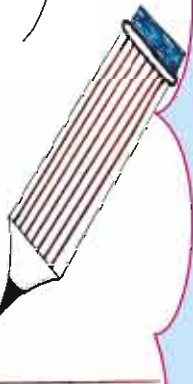

स्कूल में तितली नहीं दिखती
चिड़िया नहीं गाती
पानी कल-कल नहीं करता
पेड़ों की छाँव रूठ जाती है
बच्चों की दुनिया टूट जाती है

निरव/श्री विजय
कक्षा-2
M.G.G.S इण्डाली (झुंझुनू)

अगर पेड़ भी चलते होते

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते।
बाँध तने में उसके रस्सी
चाहे जहाँ कहीं ले जाते।
जहाँ कहीं भी धूप सताती
उसके नीचे झट सुस्ताते,
जहाँ कहीं वर्षा हो जाती
उसके नीचे हम छिप जाते

भगती जब भी भूख अचानक
तोड़ मधुर फल उसके खाते,
आती कीचड़, बाढ़ कहीं तो
झट उसके ऊपर चढ़ जाते।

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते।

नाम - खुशी कँवर
कक्षा - 4
विद्यालय - MGGS इंडाली

चित्र वीथिका : मई-जून, 2023

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रेवत, जिला जालोर के प्रार्थना सभा के मनोरम दृश्य।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/414/2023-25 शिविरा पत्रिका (मासिक) ● मई-जून, 2023 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 मई, 2023 पृष्ठ 56 ● प्रेषण : माह की 5-6 तारीख

माननीय शिक्षामंत्री राजस्थान डॉ. बी.डी. कल्ला एवं माननीय शिक्षामंत्री महाराष्ट्र श्री दीपक केसरकर - शैक्षिक विमर्श के कुछ पल

माननीय शिक्षामंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला एवं निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल द्वारा शाला सम्बलन मोबाईल एप के नए वर्जन का लोकार्पण।

निदेशक मध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल एवं अतिरिक्त निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्रीमती रचना भाटिया द्वारा सम्बलन अभियान के अन्तर्गत विद्यालयों का अवलोकन।

निदेशक माध्यमिक शिक्षा श्री गौरव अग्रवाल जैसलमेर जिले में शिक्षाधिकारियों के साथ शैक्षिक गतिविधियों की समीक्षा करते हुए।

Rajasthan Education Department
सत्यमेव जयते